जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

उदयपुर

Rashtradoot

फोनः- 2418945 फैक्सः- 0294-2410146 वर्षः 32 संख्याः 33 प्रभात उदयपुर, गुरुवार 5 दिसम्बर, 2024 आर.जे. 7202 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

अन्ततोगत्वा देवेन्द्र फड़नवीस का नाम फाइनल हो गया महाराष्ट्र मुख्यमंत्री पद के लिए

आज आज़ाद मैदान में फड़नवीस तीसरी बार महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री पद की शपथ लेंगे

-जाल खंबाता -
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 4 दिसम्बर। भाजपा नेता देवेन्द्र फड़नवीस का कल मुम्बई के "आज़ाद मैदान" में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री पद की शपथ लेना पूरी तरह से तय है। वे तीसरी बार राज्य के मुख्यमंत्री बनेंगे। भाजपा नेतृत्व ने बुधवार को मुख्यमंत्री पद के लिये अपनी पसन्द के रूप में उनके नाम को अन्तिम रूप दे दिया। इस प्रकार लम्बे समय तक चले इस असमंजस का अन्त हो गया है कि राज्य के इस सर्वोच्च पद पर कौन होगा। इस निर्णय के शीघ्र बाद ही, उनका नाम बुधवार को एक मीटिंग में नव-निर्वाचित विधायकों के समक्ष रख दिया गया तथा उनके अनुमोदन के बाद, उनके चयन को अन्तिम रूप मिल गया।

राज्य के चुनावों में भाजपा के नेतृत्व वाले गठबन्धन महायुति की बहुत बड़ी जीत के बाद, दो सप्ताह तक मुख्यमंत्री पद से सम्बन्धित घटनाक्रम चलता रहा। अब मुम्बई का आज़ाद मैदान भव्य शपथ-ग्रहण समारोह के लिये पूरी तरह से तैयार है। फड़नवीस ने शिवसेना प्रमुख एकनाथ शिंदे तथा एन.सी.पी. नेता अजित पवार के साथ राज्यपाल सी.पी. राधाकृष्णन से भेंट की तथा सरकार बनाने का दावा प्रस्तुत किया।

- **विधायक दल की बैठक में देवेन्द्र फड़नवीस के नाम का प्रस्ताव रखा गया और विधायकों ने तुरंत उसका अनुमोदन कर दिया।**
- **उसके बाद फड़नवीस, एकनाथ शिंदे व अजित पवार के साथ राज्यपाल सी.पी. राधाकृष्णन से मिलने गए तथा सरकार बनाने का दावा पेश किया।**
- **इसी के साथ महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री को लेकर चल रहा "सस्पैंस" भी खत्म हो गया। पहले दिन से ही यह स्पष्ट था कि भाजपा किसी भी कीमत पर मुख्यमंत्री की कुर्सी नहीं छोड़ेगी, क्योंकि, महायुति के 230 विधायकों में से 132 विधायक भाजपा के हैं।**

भाजपा विधायकों की मीटिंग में, फड़नवीस ने कहा कि विधायक दल का नेता मनोनीत होना उनके लिये सम्मान की बात है। उन्होंने कहा कि भाजपा के 132 विधायकों के समर्थन के बिना, वे इस स्थिति में नहीं होते। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को, उनके समर्थन के लिये, धन्यवाद दिया और कहा कि भाजपा की डबल इंजन सरकार से महाराष्ट्र में विकास होगा। उन्होंने कहा कि महायुति की विजय प्रधानमंत्री के नारे "एक हैं तो सेफ हैं" के कारण हुई है।

भाजपा की कोर कमेटी द्वारा किये गये फड़नवीस के चयन से महाराष्ट्र में इस बात को लेकर 11 दिन से चल रहे असमंजस पर विराम लग गया है कि मुख्यमंत्री कौन बनेगा। चुनाव-परिणाम, जिसमें महायुति ने विधानसभा की 288 में से 230 सीटें जीती थीं, के बाद, शिवसेना के नेता यह दबाव डाल रहे थे कि गठबंधन ने शिन्दे के नेतृत्व में चुनाव लड़ा था तथा इसलिये वे ही मुख्यमंत्री बने रहने चाहिये। लेकिन भाजपा ने यह स्पष्ट कर दिया था कि जिन 148 सीटों पर उसने चुनाव लड़ा था, उनमें से उसने 132 सीटें जीती हैं, इसलिये इस बार शीर्ष पद पर उसका दावा रहेगा। अन्ततोगत्वा, शिन्दे ने यह बात सार्वजनिक रूप से कह दी कि वे सरकार के गठन में बाधा नहीं बनेंगे तथा मुख्यमंत्री पद के सिलसिले में वे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तथा गृहमंत्री अमित शाह द्वारा लिये गये किसी भी निर्णय को स्वीकार कर लेंगे।

शिन्दे के पास इतनी विधायक संख्या थी भी नहीं, कि वे ज्यादा मोल-भाव कर सकते, क्योंकि विधानसभा में बहुमत के आँकड़े तक पहुँचने के लिये भाजपा को किसी एक मित्र दल की ही जरूरत थी, तथा प्राप्त जानकारियों के अनुसार, एन.सी.पी. अपना समर्थन देने

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कर्नाटक भाषा विवाद में उलझा है...

- लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 4 दिसम्बर। कर्नाटक जहां कथित रुप से उन उत्तर भारतीय प्रवासियों से जूझ रहा है, जो स्थानीय भाषा का सम्मान नहीं करते हैं और उसे सीखना भी नहीं चाहते हैं, पर लगता है कि पड़ौसी राज्य तमिलनाडु और केरल ने इसका हल निकाल लिया है और अप्रवासियों को बोल- चाल के लायक तमिल व मलयालम सिखाना शुरु कर दिया है।

केरल तो पहले से ही माइग्रैन्ट्स लेबर के सम्बंध में सकारात्मक नीति पर अमल करता रहा है, वहां माइग्रैन्ट्स लेबर को मलयालम सिखाई जाती है। यहां मजदूरों के लिए कई अच्छी योजनाएं चलाई जाती है। यहां आने वाले मजदूर भी काम चलाऊ मलयालम सीख लेते हैं।

- **और तमिलनाडु व केरल में प्रवासियों को काम चलाऊ तमिल व मलयालम सिखाई जा रही है, ताकि, राज्य में शांति व्यवस्था में खलल न पड़े।**

तमिलनाडु में भी बड़ी संख्या में अप्रवासी मजदूर आते हैं और इन मजदूरों का जीवन आसान बनाने के लिए तमिलनाडु सरकार ने इन्हें तमिल भाषा सिखानी शुरु कर दी है, ताकि वे बस का रुट और साइन बोर्ड पढ़ सकें।

तमिलनाडु में मोबाइल ऐप से भी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

एकनाथ शिंदे उपमुख्यमंत्री बनने के लिए राजी हुए

पर अपनी रज़ामंदी देने से पहले उन्होंने पूरी मशक्कत की मुख्यमंत्री पद पाने के लिए

-श्री नन्द झा -
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 4 दिसम्बर। एकनाथ शिन्दे ने अपनी हठ छोड़ दी है तथा उपमुख्यमंत्री पद स्वीकार कर लिया है। लेकिन सूत्रों का कहना है कि उन्होंने गृहमंत्री अमित शाह के साथ हुई एक मीटिंग में अपनी बात पूरी जोरदारी के साथ रखते हुये, उनसे कहा था कि उन्हें मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाई जाये तथा मुख्यमंत्री के रूप में कम से कम पहले छः महीने काम करने दिया जाये। लेकिन शाह ने उनके इस विचार को सिरे से खारिज कर दिया था तथा कह दिया कि इससे एक बुरी मिसाल कायम होगी तथा राज्य-प्रशासन के पास एक उलझन भरा संदेश जायेगा।

यह मीटिंग 28 नवम्बर को हुई थी। इससे एक दिन पहले शिन्दे ने यह कह दिया था कि वे सरकार के गठन में बाधा नहीं बनेंगे तथा भाजपा हाईकमान जो भी निर्णय लेगी, वह उन्हें स्वीकार होगा। समझा जाता है कि शाह के साथ हुई मीटिंग में, जिसमें देवेन्द्र फड़नवीस तथा एन.सी.पी. नेता अजित पवार, प्रफुल्ल पटेल तथा सुनील तटकरे भी मौजूद थे, शिन्दे ने शाह को भाजपा का यह वादा याद दिलाया था कि अगर महायुति सत्ता में लौटता है तो उन्हे ही (शिन्दे) मुख्यमंत्री पद दिया जाएगा। लेकिन भाजपा ने इस दलील को इस आधार पर खारिज कर दिया था कि भगवा पार्टी को "तकरीबन स्पष्ट बहुमत" मिला है।

- **शिंदे के समर्थकों ने भी कोई कसर नहीं छोड़ी, उन्होंने अमित शाह को यहां तक कहा कि एकनाथ शिंदे के कुशल नेतृत्व के कारण ही महायुति को बहुमत मिला है इसलिए उन्हें मुख्यमंत्री का पद मिलना ही चाहिए।**
- **शिंदे ने अन्ततोगत्वा अमित शाह के सामने यह प्रस्ताव भी रखा कि उन्हें कम से कम शुरू के छः महीने के लिए मुख्यमंत्री बनाया जाए बाद में हटा दिया जाए, पर शाह ने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया।**
- **शिंदे द्वारा उपमुख्यमंत्री बनने का प्रस्ताव स्वीकार करने का एक बड़ा कारण यह था कि शिंदे के सौदेबाजी करने के प्रयास के दौरान महायुति गठबंधन के पावर समीकरणों में काफी बदलाव आया था।**
- **एन.सी.पी. मूलतः भाजपा की मदद करने पर खुलकर उतर आई थी और इससे भाजपा, शिंदे का दबाव आसानी से झेल गई।**

इन परिस्थितियों में शिन्दे को मुख्यमंत्री पद सौंपना गलत होगा। भाजपा नेताओं ने शिन्दे से पूछा था कि अगर दोनों के बीच की भूमिकाएं उलट गई होती तो वे क्या करते। अभी-अभी समाप्त हुये चुनावों में, भाजपा ने विधान सभा की 288 में 132 सीटें जीती हैं तथा सेना ने 57 सीटें जीती है। 2014 में भाजपा ने 122 सीटें जीती थीं तथा फड़नवीस, एन.सी.पी. के बाहरी समर्थन के साथ, मुख्यमंत्री चुन लिये गये थे।

अमित शाह के साथ हुई मीटिंग के एक दिन बाद, शिन्दे, अस्वस्थ होने के कारण, सतारा जिले में स्थित अपने गाँव चले गये थे। वे रविवार को मुम्बई वापस

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

''जीवन के अच्छे दिनों में कभी भी उन लोगों को ना भूले जो जीवन के बुरे दिनों में आपके साथ थे।'' - अरविन्द कटोच

बढ़ती महंगाई भ्रमित आम उपभोक्ता

देश में आमनागरिकों को निर्माताओं की ठगी से बचाने के लिए लाख प्रयास किये जाने के दावे किये जा रहे हो या देश भर में उपभोक्ता न्यायालयों का संजाल फैल गया हो पर निर्माता कोई ना कोई ऐसा रास्ता निकाल ही लेते हैं कि आम नागरिक आसानी से भ्रमित हो जाता है। अब भले ही यह खाद्य सामग्री के पेकिंग को लेकर हो या अन्य कोई रास्ता। आज खाद्य सामग्री के भावों में तेजी के बावजूद पांच-दस या बीस-तीस रुपए की पेकिंग में आने वाले उत्पाद चाहे वह बिस्कुट हो या कुरकुरे, चिप्स, मोगर या कुछ इसी तरह की सामग्री उतने में ही उपलब्ध हो रहे हैं। मजे की बात यह है कि निर्माताओं द्वारा पेकिंग पर मात्रा लिखकर इतिश्री कर दी जाती है तो आम नागरिक समझता है कि पांच रुपए का बिस्कुट का पैकेट पांच रुपए में ही उपलब्ध है। दरअसल देखा जाए तो आमउपभोक्ता पेंकिंग में उपलब्ध सामग्री की मात्रा पर कम ही बल्कि कहा जाए तो ना के बराबर ध्यान देता है। ऐसे में निर्माता यह कह कर इतिश्री कर देते हैं कि उनके द्वारा पेकिंग में उपलब्ध सामग्री का वजन यानी कि मात्रा का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। जबकि निर्माता अपने ब्रॉण्ड या उत्पाद के तयसुदा ग्राहकों को किसी दूसरे ब्राण्ड की और जाने से रोकने के लिए दर नहीं बढ़ाकर वजन कम करने को अधिक सरल उपाय मानकर चलते हैं। आमउपभोक्ता को तो पता ही नहीं होता कि पिछली बार खरीदा तक पांच रुपए के पेकिंग वाले बिस्कुट या अन्य सामग्री में कितनी मात्रा थी और अब कितनी रह गई है।

सामग्री की मात्रा को लेकर खाद्य तेल के पाउचों को लेकर आसानी से समझा जा सकता है। जब हम किसी मॉल या उपभोक्ता सामग्री के विक्रेता के यहां उपभोक्ता सामग्री खरीदने जाते हैं तो एक लीटर के नाम पर उपलब्ध होने वाले अलग अलग खाद्य तेल ब्रॉण्डों की दरों में अंतर देखते हैं। कई बार तो ऐसा लगता है कि इतना अंतर कैसे हो सकता है या अमुक ब्रॉण्ड इतना सस्ता कैसे हो सकता है। दर असल इसके पीछे जो खेल होता है वह जागरुक उपभोक्ता के अलावा कम ही लोग समझ पाते हैं। बाजार में पाउच में उपलब्ध होने वाले खाद्य तेल की अलग अलग मात्रा के अनुसार पेकिंग होती है। कोई एक लटर वाले पाउच में 840 मिली तो कोई 910 या कुछ इसी तरह की मात्रा मे उपलब्ध कराते हैं। यह सब तो तब पता चलता है जब उस पाउच पर लिखे कंटेट को देखते हैं जिसे देखने की अति समझदार भी कष्ट नहीं करते हैं। दरअसल यह किसी से छुपा नहीं हैं। ऐसे में सरकार को स्पष्ट कर देना चाहिए कि एक लीटर के पाउच में 1000 मिली मात्रा होगी नाकि निर्माता की मनमर्जी से मात्रा भरकर पाउच पर मात्रा लिखदेना पर्याप्त होगा।

सामग्री की मात्रा को लेकर खाद्य तेल के पाउचों को लेकर आसानी से समझा जा सकता है। जब हम किसी मॉल या उपभोक्ता सामग्री के विक्रेता के यहां उपभोक्ता सामग्री खरीदने जाते हैं तो एक लीटर के नाम पर उपलब्ध होने वाले अलग अलग खाद्य तेल ब्रॉण्डों की दरों में अंतर देखते हैं। कई बार तो ऐसा लगता है कि इतना अंतर कैसे हो सकता है या अमुक ब्रॉण्ड इतना सस्ता कैसे हो सकता है। दर असल इसके पीछे जो खेल होता है वह जागरुक उपभोक्ता के अलावा कम ही लोग समझ पाते हैं। बाजार में पाउच में उपलब्ध होने वाले खाद्य तेल की अलग अलग मात्रा के अनुसार पेकिंग होती है।

दरअसल आमनागरिकों की भ्रमित होने के यह छोटे छोटे कारण है और मजे की बात यह है कि उपभोक्ता हितों के नाम से संचालित संगठनों या किसी अन्य प्लेटफार्म द्वारा इसको मुखरता से उठाया जाता हो, ऐसा दिखाई नहीं देता है। यदि ऐसा हो तो समस्या का काफी हद तक समाधान हो सकता है। आम आदमी को आसानी से ठगी से बचाया जा सकता है। दरअसल इस संदर्भ में इग्नोर करने का एक कारण यह भी हो सकता है कि आम नागरिकों में बढ़ती महंगाई के बावजूद यह भ्रम बन रहे कि बिस्कुट पहले भी पांच रुपए का आ रहा था और आज भी पांच रुपये का आ रहा है। इसी तरह से अन्य उत्पादों की बात की जा सकती है। एक और निर्माता अपने ग्राहकों को बांधें रखने में सफल हो जाते हैं वहीं दूसरी और सरकार का हो सकता है कि एक सोच यह भी हो कि इससे महंगाई का शोरगुल अधिक नहीं होगा।

देखा जाए तो यह हालात किसी एक वस्तु या सामग्री पर नही लगाये जा सकते हैं। निश्चित मूल्य वाले पाउच उत्पादों पर मात्रा कम किया जाना आम बात है। कोई भी आम उपभोक्ता हर बार खरीद के समय मात्रा की और ध्यान नहीं देता और ना ही यह अपेक्षा की जा सकती है कि वह सामान खरीदने से पहले उस पर लिखे कन्टेंट को पूरी तरह से पढ़कर ही खरीदें। व्यावहारिक रुप से ऐसा संभव भी नहीं है। निर्माताओं द्वारा आम नागरिक की इसी कमजोरी का लाभ उठाया जाता है। ऐसे में उपभोक्ता हितों से जुड़े संगठनों को दोहरी भूमिका निभानी होगी। पहली यह कि वे आमनागरिकों के लिए नियमित रुप से अवेयरनेस कार्यक्रम संचालित करें, दूसरी और उपभोक्ता न्यायालयों या इस तरह के विभिन्न प्लेटफार्म पर प्रमुखता से इस तरह के मुद्दों को सामने लाएं ताकि सवाल कम ज्यादा का नहीं उपभोक्ताओं के जागरुक होने का हो जाता है। आम आदमी को मालूम तो हो कि पांच रुपए में गत खरीद में उसने इतनी मात्रा की सामग्री का पैकेट खरीदा और इस बात उसकी मात्रा इतनी हो गई है। कम से कम इस तरह की अवेयरनेस तो आम आदमी में आनी ही चाहिए। सरकार को भी यह तय करना ही होगा कि एक लीटर के नाम से बेचे जाने वाले पाउच में 1000 मिली ही मात्रा हो ना कि पाउच पर 910 या 840या अन्य मात्रा लिखकर निर्माता द्वारा अपना दायित्व पूरा कर देना हो। बदलते हालातों में आम उपभोक्ता को सजग होना ही होगा और इसके लिए गैरसरकारी संगठनों को भी मुखर होना ही होगा।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल गुरूवार 5 दिसम्बर 2024

पंडित अनिल शर्मा

मार्गशीर्ष मास शुक्ल पक्ष, चतुरथी तिथि, गुरूवार, विक्रम सम्वत 2081, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र सायं 5.17 तक, वृद्धि योग 12.28 तक, विष्टिकरण दिन 12.50 तक, चन्द्रमा मकर राशि में संचार करेगा।

आज रवियोग सायं 5.27 से आरम्भ होगा। महापात योग रात्रि 8.05 से रात्रि 2.02 तक रहेगा। भद्रा दिन 12.50 तक है। आज विनायक चतुरथी है।

श्रेष्ठ चौघडिया - शुभ-सूर्योदय से 8.23 तक, चट 10.50 से 12.17 तक, लाभ-अमृत 12.17 से 2.53 तक, शुभ योग 4.11 से सूर्यास्त तक।

राहुकाल - 1.30 से 3.00 तक, सूर्योदय 7.06 सूर्यास्त 5.29

मेष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता से बनने लगेंगे।

सिंह

स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक सम्पर्क बनेंगे। परिवार में धार्मिक मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं।

धनु

व्यावसायिक कार्यों के लिए भाग-दौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखें। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।

वृष

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। पिछले कुछ समय में अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या

व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। शुभ कार्य के लिए यात्रा सम्भव है।

मकर

व्यावसायिक कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक सम्पर्क बनेंगे।

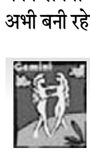

मिथुन

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। वाणि पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

तुला

घर परिवार में अथितियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। संभावित स्रोत से धन प्राप्त होगा।

कुंभ

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अर्नगल कार्यों में समय खराब होगा। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक रहेगी।

कर्क

परिवार में आपसी सहयोग समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों पर नियंत्रण बना रहेगा।

वृश्चिक

घर परिवार में सुख शांति बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी।

मीन

आर्थिक-वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

बयाना में स्टेट हाईवे पर पूरी टोल वसूली, फिर भी हाईवे के हाल बेहाल

आए दिन हो रहे हादसे, जगह-जगह भरा गंदा पानी, जिम्मेदार बने मूक दर्शक

बयाना/भरतपुर (निस)। बयाना भरतपुर व बयाना वैर स्टेट हाईवे पर आरएसआरडीसी की ओर से जगह-जगह टोल नाके लगाकर पूरी टोल वसूली के बावजूद भी अधूरे पड़े इस स्टेट हाईवे के हाल बेहाल बने हुए हैं। बयाना के भीम नगर तिराहे से कुंडा तिराहे तक तो इस स्टेट हाईवे के हाल इतने अधिक बदतर हैं कि वहां होकर ना तो पैदल और ना ही वाहन चालक सुरक्षित निकाल सकते हैं या फिर यू कहें कि उन्हें अपनी जान जोखिम में डालकर रास्ता निकालना पड़ता है।

आश्चर्य की बात तो यह है कि इस हाइवे पर होकर स्थानीय पुलिस व प्रशासन के अधिकारियों एवं अन्य संबंधित विभागों के अधिकारियों का रोजाना आना-जाना होता है फिर भी उन्हें इस हाइवे के बदतर हालात नज़र नहीं आते हैं। यही नहीं जब कभी यहां सरकार के किसी मंत्री या आला अधिकारियों या जिले के विभिन्न विभागों के अधिकारियों का आना-जाना होता है तो वह भी इसी मार्ग से होकर बयाना आते-जाते हैं शायद उन्हें भी इस हाईवे के यह हालत नजर नहीं आते हैं या उन्हें तरस नहीं आता है या फिर उन्हें भी अपनी जिम्मेदारी का

बयाना के भीम नगर तिराहे से कुंडा तिराहे तक सड़क पर भरा पानी।

एहसास नहीं है। या फिर यूं कहें कि टोल वसूली करने वाले कथित ठेकेदार इन अधिकारियों से भी ऊपर हैं। जिनसे ना तो स्थानीय अधिकारी ना ही जिले के कोई आला अधिकारी रोड के हालात सुधारने की नहीं कह सकते।

अतिक्रमणों व गड्ढों और गंदे पानी से हाल बेहाल बयाना के बीचो-बीच होकर निकल रहे इस स्टेट हाईवे पर भीमनगर से कुंडा तिराहे तक व रीको औद्योगिक क्षेत्र के पास तो सबसे अधिक बदतर हालात हैं इस स्टेट हाईवे पर जगह-जगह लोगों की ओर से किए गए अतिक्रमणों से यह स्टेट हाईवे दिनों दिन सिकुड़ता जा रहा है। ट्रांसपोर्टेशन का धंधा करने वाले लोगों ने भी इस हाइवे पर कब्जा कर रखा है। जो अपने ट्रक व ट्रेलर और अन्य मोटर वाहनों को इस स्टेट हाईवे पर मनमानी ढंग से आढ़ा तिरछा खड़ा कर यातायात को बाधित करने और दुर्घटनाओं को न्योता देने का काम करते हैं। इस स्टेट हाईवे पर एक तरफ आरएसआर डीसी की ओर से अभी तक पैदल पटरियों व नाले का निर्माण नहीं कराए जाने से वहां गंदा पानी इस कदर भरा रहता है जैसे कोई गंदे पानी की तलैया हो।

यह गंदा पानी जलदाय विभाग की पाइप लाइनों में जगह-जगह हो रही लीकेजों व इस हाइवे पर जगह-जगह अवैध रूप से खुले मोटर वाहन धुलाई सर्विस सेंटरों से निकलता बताया। जो इस हाइवे पर नाला नहीं होने से सड़क के ऊपर ही भरा रहता है। लोगों का कहना है कि जब मुख्यमंत्री के अपने गृह जिले में ही यह हालात हैं तो अन्य जिलों में क्या हालात होंगे। इस स्टेट हाईवे के बदतर हालातों का सबसे ज्यादा खामियाजा तो बयाना से भरतपुर के लिए रेफर होने वाले मरीजों व प्रसूता महिलाओं को भुगतना पड़ता है जिन्हें एंबुलेंस में इतने हिचकोले खाने पड़ते हैं कि भरतपुर पहुंचने तक उनकी हालत और ज्यादा खराब हो जाती है। युवा अधिवक्ता लोकेश कौशिक व शैलेश शर्मा ने बताया कि इस हाइवे के हालात सुधारने के लिए कई संबंधित अधिकारियों को अवगत कराया गया है व विभिन्न संगठनों की ओर से आवाज भी उठाई गई है किंतु अभी तक कोई ध्यान नहीं दिया जा सका है।

सिर्फ नींबू पानी के आहार पर 7 दिन चलने वाली उपवास पदयात्रा भीलवाड़ा पहुंची

भीलवाड़ा। संकल्प की शक्ति का अनूठा प्रयोग और परिचय देती हुई सैकड़ो श्रद्धालुओं की उपवास आधारित पदयात्रा का केकड़ी से शुरू होकर बुधवार को भीलवाड़ा पहुंची। सात दिवसीय यह पदयात्रा सांवलिया सेठ के मंदिर पहुंचकर पूर्ण होगी। इन 7 दिनों में यह सारे पदयात्री आहार के रूप में सिर्फ नींबू पानी और शहद लेंगे, वह भी दिन में सिर्फ दो बार।

पदयात्रा के मार्गदर्शक एवं इंटरनेशनल एसोसिएशन फॉर साइंटिफिक स्पिरिचुअलिज्म मेरठ के डॉ गोपाल शास्त्री और पदयात्रा के सूत्रधार ख्यातनाम कवि बुद्धि प्रकाश दाधीच ने कहा कि सुनने में भले ही बड़ा अजीब लगे की 7 दिन तक सिर्फ नींबू पानी पर पदयात्रा हो रही है, लेकिन असल बात यह है कि उपवास ही स्वास्थ्य के लिए संजीवनी का काम करता है बशर्ते वह उचित तरीके से किया गया हो। पदयात्रा लोगों में उपवास को लेकर भ्रांति तोड़ने व उन्हें जागरूक करने का माध्यम है। पदयात्रा के माध्यम से गांव-गांव पहुंचकर यह बताया जाता है कि स्वास्थ्य अत्यधिक भोजन करने में नहीं बल्कि भोजन से विराम लेने में है जो असाध्य से असाध्य रोगों को भी दूर करने में मदद करता है और यह प्रमाणिक बात भी है। हमारे साधकों में से कई लोग ऐसे भी हैं जो जटिल और असाध्य रोगों से उबरकर अब स्वस्थ जीवन जी रहे हैं और उनके स्वास्थ्य का आधार हमारी तप सेवा और सुमिरन पर आधारित जीवन शैली ही है। जिसमें उपवास एक विशेष अंग है। साथ ही अपने आजीविका का 10 भगवान के नाम पर निकलने की प्रेरणा दी जाती है अर्थात दशांश निकालने का जो वैज्ञानिक सिद्धांत है उसके प्रति भी लोगों को जागरूक किया जाता है। ईमानदारी से हमें अपनी आय का 10 भगवान के निमित्त निकालना चाहिए और भगवान की प्रेरणा से ही उसको वहां खर्च करना चाहिए। हमारी साधना पद्धित में हम बताते हैं कि भोजन दिन में एक बार करना होता है। सुबह के सत्र में पत्तियों का जूस और भोजन के रूप में फलों और कच्ची सब्जियां का आहार किया जाता है। शाम को पक्का भोजन किया जाता है। हमारी साधना पद्धित में उपवास भी एक अहम बिंदु है वर्ष भर में 7 दिन की उपवास आधारित पैदल यात्रा हमारी संस्था के माध्यम से संचालित की जाती है। पदयात्रियों द्वारा सात दिन तक पैदल चलकर स्वास्थ्य रूपी संजीवनी के द्वारा जीवनी शक्ति को प्रबल किया जाएगा। यह पैदल यात्रा केकड़ी से शुरू होकर बुधवार को भीलवाड़ा पहुंची जहां मानस योग साधना संगठन द्वारा टंकी के बालाजी मंदिर परिसर में स्वागत किया गया, इसके बाद क्यारा के बालाजी पुर, नौगांवा, राशमी, कपासन शनि महाराज मंदिर होती हुई 7 दिसंबर को चित्तौड़गढ़ जिले में मण्डफिया स्थित प्रसिद्ध धर्मस्थल सांवलियाजी मंदिर पहुंचकर पूर्ण होगी। इस पदयात्रा में राजस्थान के अलावा गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश व मध्यप्रदेश के 116 साधक शामिल है जो 7 दिन की पैदल यात्रा में प्रतिदिन 30 से 35 किलोमीटर की यात्रा कर रहे हैं। खास बात यह है कि इन 116 जनों में ज्यादातर की उम्र 70 वर्ष से अधिक है। केकड़ी से रवाना हुई यह पदयात्रा तकरीबन 225 किलोमीटर की है। 116 साधक शामिल है। समापन पर सांवलियाजी मंदिर में भगवान सांवलिया सेठ के दर्शन के बाद सभी साधक गरम सब्जी के सूप के साथ अपने व्रत-उपवास का पारणा करेंगे।

सरपंच प्रकाश भाकर के निलंबन बहाली के आदेश पर निकाला जुलूस

मकराना(निस)। उपखंड के जूसरी ग्राम के सरपंच प्रकाश भाकर के निकले बहाली के आदेश के बाद मकराना विधानसभा के लोगों ने हजारों की तादाद में इक्कटे होकर प्रकाश भाकर का माला व साफा पहनाकर स्वागत किया सैकड़ों की संख्या में गाड़ियों के काफिला के साथ प्रकाश भाकर जिंदाबाद के नारे लगे विजय जुलूस निकाला गया।

मकराना पंचायत समिति की ठाम पंचायत जुसरी के सरपंच और किसान मोर्चा के प्रदेश मंत्री प्रकाश भाकर को विकास कार्यों में गड़बड़ी करने के बावत में 26 नवंबर को निलंबत करने के आदेश निकाले गए थे उसके 6 दिन बाद ही राज्य सरकार ने छुट्टी के दिन विशेष आदेश निकालकर सरपंच प्रकाश भाकर को बहाल किया। जैसे ही सरपंच प्रकाश भाकर के रविवार को बाहाल के आदेश आए मकराना विधानसभा नहीं पूरे मकराना की जनता ने पटाखे छुड़ाकर खुशी जाहिर करते हुए मकराना के हजारों की संख्या में लोगों ने ठाम जूसरी के देवला बाबा धाम पहुंचे और धाम से जूसरी तक असत्य पर सत्य की जीत का जुलूस निकाला। इसी तरह सरपंच प्रकाश ने कहा सत्य परेशान हो सकता है लेकिन सत्य कभी हारता नहीं है जनता का जो मेरे ऊपर प्यार यह आशीर्वाद है यह कुछ लोगों को पचा नहीं है इसके कारण मुझसे राजनीतिक देषता के चलते मेरे खिलाफ षड्यंत्रपूर्वक शिकायत कर निलंबन करवाया गया।लेकिन इस मकराना की जनता के आशीर्वाद से मुझे न्याय मिला।

मैंने भाजपा के शीश नेतृत्व के सामने मेरी बात रखी और उन्होंने मेरी पूरी बात सुनकर सत्यता के आधार पर राज्य सरकार ने मेरा निलंबन वापस लिया। भाकर ने जनता को विकास कार्यों के प्रति अपनी प्रतिबंधित जताई और कहा जब तक जनता का साथ है कोई मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। मकराना विधानसभा के लोगों ने 21 किलो की माला से भाकर का स्वागत किया सरपंच प्रकाश भाकर ने देवला बाबा मंदिर में पूजा अर्चना की! सरपंच प्रकार और उनके समर्थक डीजे की धुन पर नाचते-गाते जूसरी के आम चौक तक पहुंचे और हजारों की तादाद में लोगों ने बहाली पर सरपंच भाकर को शुभकामनाएं दी लंबी वाहनों की कतार के साथ सरपंच प्रकाश भाकर का काफिला का रास्ते में जगह-जगह पंचायत के लोगों ने पुष्पमाला पहनाकर फूल वर्षा कर स्वागत किया।

महिलाओं ने गीत गाकर प्रकाश भाकर को आशीर्वाद दिया। जुलूस का समापन जुसरी के मुख्य बाजार में आम सभा रखकर हुआ। इस अवसर पर सरपंच प्रतिनिधि रतनाराम भामू, सरपंच प्रेमाराम छरंग, परशाराम किरड़ोलिया, सरपंच माहावीर कुकणा, उपसरपंच प्रवीण चौहान, सरपंच विक्रम मतवा, मेहराम माली, पंचायत समिति सदस्य महेंद घिटला, अल्पसंख्यक जमात सदर आंसू गौरी, सुरेश भाकर, सहित हजारों की संख्या में गणमान्य लोग उपस्थित थे।

भामाशाह के सहयोग से कमरा निर्माण होगा

मेडता सिटी । बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए सरकार के साथ अब भामाशाह भी आगे रहे है। इसी के तहत राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय इन्दावड़ में स्व.जंवराराम मेहरिया की स्मृति में भामाशाह सीतादेवी मेहरिया, रामदेव मेहरिया, मनोहर मेहरिया एवं मेहरिया परिवार की ओर से बालिका स्कूल परिसर में बालिकाओं के अध्ययन हेतु एक 3030 वर्ग फीट का कमरा व स्टेज निर्माण करवाया जा रहा है, जिसकी अनुमानित लागत आठ लाख रुपए आयेगी। बुधवार को कमरा निर्माण के कार्य का शुभारंभ हेतु वैदिक मंत्रोच्चार के साथ शिलान्यास किया गया।

- **मेहरिया परिवार की ओर से बालिका स्कूल परिसर में बालिकाओं के अध्ययन हेतु एक 3030 वर्ग फीट का कमरा व स्टेज निर्माण करवाया जा रहा है, जिसकी अनुमानित लागत आठ लाख रुपए आयेगी**

स्कूल प्रिंसिपल जानकी देवी ने कहा कि भामाशाह द्वारा निर्माण करवाने से स्कूल में पढ़ ने वाले बालिकाओं के लिए सुविधाएं बढ़ेगी। गौरतलब है कि इस सरकारी स्कूल में आसपास के आठ गांवों की बालिकाएं अध्ययन के लिए आती है। इस अवसर पर इन्दावड़ सरपंच प्रतिनिधि मंगलाराम डिडेल, हीराराम मेहरिया, पूर्व सरपंच प्रतिनिधि चंपाराम मेहरिया, उद्यमी बालाराम खदाव, स्कूल के उप प्राचार्य मोतीलाल घटेला, पुरूषोतम सेन, पुनाराम मुंडेल, अमराराम कड़वासड़ा, गौशाला कोषाध्यक्ष रामदेव मेहरिया, रूपराम मेहरिया, महावीर मेहरिया, रूपाराम डिडेल, पूर्व उप सरपंच भूराराम कड़वासड़ा सहित गणमान्य नागरिक मौजूद रहे।

कलेक्टर ने ली अधिकारियों की बैठक

ब्यावर (निसं)। जिला कलेक्टर डॉ महेंद्र खड़गावत ने बुधवार को कलेक्ट्रेट परिसर में जिला स्तरीय अधिकारियों की बैठक ली ।जिला कलेक्टर ने सरकार के आगामी 1 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की तैयारी की समीक्षा की।

- **सरकार के 1 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की तैयारियां को लेकर की समीक्षा**

उन्होंने जिला स्तरीय प्रदर्शनी सहित 12 दिसंबर से 15 दिसंबर तक आयोजित होने अन्य कार्यक्रमों की तैयारियो की समीक्षा करते हुए निर्देश दिए ।उन्होंने कहा कि समस्त नोडल अधिकारी के साथ ही समस्त जिला स्तरीय अधिकारी आपसी समन्वय रखते हुए कार्यों का नियत समय से पूर्व संपादन कराये ।उन्होंने कहा कि 1 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर आयोजित होने वाले कार्यक्रम भव्य व बेहतर हो। नवगठित जिले में समस्त जिला स्तरीय अधिकारी पूरी निष्ठा व मेहनत करते हुए कार्यक्रमों का आयोजन करना सुनिश्चित करें ।इस अवसर पर अतिरिक्त जिला कलेक्टर मोहनलाल खटनावलिया, जिला परिषद एसीईओ गोपाल मीणा, कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक रमेश चंद्र जैन, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी संजय गहलोत, जिला शिक्षा अधिकारी अजय गुप्ता, पीआरओ रविंद्र वैष्णव, समाज कल्याण अधिकारी विशाल सोलंकी सहित अन्य मौजूद रहे।

ब्लॉक स्तरीय युवा महोत्सव का आयोजन

ब्यावर (निसं) राजस्थान युवा बोर्ड (युवा मामले एवं खेल विभाग राजस्थान सरकार) के आदेश अनुसार राज्य की लुप्त एवं दुर्लभ लोक कला एवं संस्कृति को संरक्षण एवं संवर्धन तथा राज्य की प्रतिभाशाली युवा कलाकारों की खोज प्रशिक्षण एवं सुविधा देकर राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु तैयार करने के उद्देश्य से स्थानीय विद्यालय पीएन श्री राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय छावनी रोड में एक दिवसीय ब्लॉक स्तरीय युवा महोत्सव का आयोजन किया जाना है।

प्रधानाचार्य डॉक्टर सीमा कृपलानी ने बताया कि इस युवा महोत्सव में सामूहिक लोक नृत्य, लोक गायन, नाटक, शास्त्रीय नृत्य, कत्थक, भरत नाट्यम, ओडिसी, मणिपुरी, कुचिपुडी, शास्त्रीय एकल गायन, हिंदुस्तानी गायन, आशु भाषण, समूह चर्चा, स्लोगन, कविता, लेखन, शास्त्रीय वाद्य यंत्र, सितार, बांसुरी, तबला, मृदंगम, वीणा, हारमोनियम, गिटार, चित्रकला एवं दुर्लभ कला से संबंधित प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएगी। विभिन्न प्रतियोगिताओं के लिए ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन राजस्थान युवा बोर्ड की वेबसाइट पर किया जा सकेगा।

ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन की हार्ड कॉपी 9 दिसंबर 2023 को प्रातः समय 8:00 से 9:00 तक पीएम श्री राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय छावनी रोड में जमा किया जाएगा। हार्ड कॉपी के अभाव में प्रतियोगिता में सम्मिलित किया जाना संभव नहीं होगा। प्रतियोगिता का आयोजन स्थानीय विद्यालय में दिनांक 09.12.2024 को प्रातः 10:00 बजे किया जाएगा। ब्लॉक स्तरीय प्रतियोगिताओं के पश्चात जिला स्तरीय, राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। जवाजा द्वारा अधिकृत किया गया है कि समस्त सरकारी/ गैर सरकारी विद्यालयों के संस्था प्रधानों को आदेशित किया गया है कि छात्र-छात्राओं व नागरिकों (15 से 29 आयु वर्ष) को अधिक से अधिक भाग लेने हेतु प्रेरित किया जावे। अतः सीबीईओ जवाजा (मधु गुप्ता) तथा (कैलाशचन्द) द्वारा प्रधानाचार्यों की उपस्थिति में एक बैठक आयोजित कि गई जिसमें समस्त पीईईओं एवं यूसीईईओ को युवा महोत्सव में अधिक से अधिक रजिस्ट्रेशन हेतु पाबन्द किया।

बांग्लादेश में हो रही हिंसा का विरोध, हिंदू समाज का फूटा गुस्सा

बांग्लादेश में हिन्दू समाज पर हो रही हिंसा के खिलाफ जिला कलेक्ट्रेट में प्रदर्शन करते हिंदू संगठनों के पदाधिकारी।

राजसमंद, ०(निसं)। बांग्लादेश में हिंदू समाज पर हो रहे अत्याचार और हिंसा घटनाओं के विरोध में बुधवार को जिला मुख्यालय पर सर्व हिन्दू समाज ने विरोध प्रदर्शन करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नाम जिला कलेक्टर बालमुकुंद असावा को ज्ञापन सौंपकर अमानवीय अत्याचार रुकवाने की मांग की।

ज्ञापन में बताया कि पडोसी देश बांग्लादेश में सत्ता परिवर्तन के बाद वहां निवास कर रहे अल्पसंख्यक समुदाय को निशाना बनाया जा रहा है। हत्याएं की जा रही है। जगह-जगह हिंदुओं के घरों व दुकानों सहित धार्मिक स्थलों पर आगजनी की जा रही है। महिलाओं के साथ अमानवीय अत्याचार किए जा रहे

■ प्रदर्शन कर पीएम के नाम जिला कलेक्टर को सौंपा ज्ञापन

है। वहां की सरकार ऐसे सब हमलों को रोकने में असफल साबित हो रही है। प्रदर्शनकारियों ने बताया कि बाग्लादेश की सरकार और वहां की पुलिस भी इस्लामिक कट्टरपंथियों के दबाव में कार्य कर रही है। अल्पसंख्यक समाज के खिलाफ हो रहे अत्याचार का विरोध करने वाले लोगो को झूठे मुकदमे बनाकर गिरफ्तार किया जा रहा है।

वहां अल्पसंख्यकों के धार्मिक स्थलों को निशाना बना कर लूटा व जलाया जा रहा है। बांग्लादेश के घटनाक्रम को लेकर अप्रत्यक्ष व प्रत्यक्ष रूप से हस्तक्षेप कर वहां के अल्पसंख्यक समुदाय व उनकी सम्पति सहित धार्मिक स्थलों की सुरक्षा कराई जाएं। हिंसक भीड द्वारा लगातार अल्पसंख्यक हिंदुओं और महिलाओं को निशाना बनाया जा रहा है। पडोसी मुल्क में हो रही अमानवीय घटनाओं को रोकने के लिए प्रधानमंत्री को कडा संदेश देना चाहिए और अंतरराष्ट्रीय समुदाय को अल्पसंख्यकों के मानवाधिकार हनन रोकने की दिशा में कोई प्रभावी कार्रवाई करनी चाहिए। इस दौरान बडी संख्या में हिन्दू समाज के लोग मौजूद थे।

सार-समाचार

दो दिवसीय कार्यशाला का आगाज

उदयपुर, (कासं)। पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल के सर्जरी विभाग की ओर चिकित्सा क्षेत्र में नवाचार और कौशल विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वास्कुलर और रक्त वाहिकाएं (एनास्टोमोसिस) को जोडने की तकनीक पर आयोजित विशेष कार्यशाला का उद्घाटन आज पेसिफिक मेडिकल विश्वविद्यालय के चेयरपर्सन राहुल अठावाल,प्रेसीडेंट डॉ.एम.एम.मंगल, पीएमसीएच के प्रिंसिपल डॉ.यू.एस. परिहार,सर्जरी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ.एच.पी. गुप्ता और वास्कुलर सर्जन डॉ.गौरव सिंघल ने मॉ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन करके किया। 5 दिसम्बर तक आयोजित इस दो दिवसीय का मुख्य उद्देश्य चिकित्सकों और सर्जनों को एनास्टोमोसिस की नवीनतम तकनीकों और उनकी व्यावहारिक जानकारी प्रदान करना है। उद्घाटन के इस अवसर पर पेसिफिक मेडिकल विश्वविद्यालय के प्रेसीडेंट डॉ.एम.एम.मंगल ने कहा कि यह कार्यशाला प्रतिभागियों को सर्जरी में उपयोग होने वाले उपकरणों और तकनीकों की समझ को मजबूत करने का अवसर प्रदान करेगी। आयोजन सचिव डॉ.गौरव सिंघल ने बताया कि कार्यशाला में अनुभवी सर्जनों और विशेषज्ञों ने भाग लिया। इस दौरान प्रतिभागियों को रक्त वाहिकाओं और आंतों को जोड़ने की आधुनिक तकनीकों से परिचित कराया। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य सर्जिकल कौशल में सुधार और जटिल सर्जरी के दौरान आवश्यक सटीकता को बढ़ाना था। जिससे युवा सर्जन अपने कौशल को और बेहतर बना सकें। यह कार्यशाला सर्जरी के क्षेत्र में नई तकनीकों को अपनाने और उनमें विशेषज्ञता हासिल करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

अंग्रेजी शराब भरी पिकअप जब्त

डूंगरपुर, (निसं)। आबकारी आयुक्त राजस्थान उदयपुर के निर्देशन में शराब तस्करों के विरूद्ध चलाये जा रहे विशेष अभियान के अन्तर्गत कार्यवाही करते हुए नरेश सुहेल आबकारी निरीक्षक वृत्त डूंगरपुर ने बुधवार को डूंगरपुर-सीमलवाडा मार्ग पर मुखबिर की सूचना मिलने पर सुबह लगभग 5.15 बजे नाकाबन्दी लगाई। जिसमें एक पिकअप में गेहूं के भुसे की आड में छुपाकर ले जाये जा रही हरियाणा निर्मित अंठोजी शराब के 121 कार्टूनों को पिकअप सहित जब्त कर वाहन चालक साहिल खान पिता हाफिज खान निवासी बिछीवाडा पुलिस थाना फलासिया जिला उदयपुर को गिरफ्तार किया गया। वाहन चालक साहिल खान को पुलिस कस्टडी के लिए न्यायालय में पेश किया जायेगा। कार्यवाही में जमादार कान्तिलाल, नरेन्द्र शर्मा, अरविन्द सिंह, नरेश होमगार्ड शामिल रहे।

सात ऑटो ट्रिपर व ई रिक्शा का शुभारंभ

कपासन, (निसं)। स्वच्छ भारत मिशन अंतर्गत स्थानीय नगर पालिका क्षेत्र में घर-घर कचरा संग्रहण करने के लिए 7 ऑटो ट्रिपर और एक ई रिक्शा का बुधवार सुबह शुभारंभ किया। अब यह व्यवस्था कांटेक्ट बेस पर होगी। पूर्व में मात्र तीन ऑटो ट्रिपर ही थे। जिससे कचरा संठाहण व्यवस्था नहीं बैठ पा रही थी। नगर पालिका के जेईएन खेमराज सिंह गुर्जर ने बताया कि स्वच्छ भारत मिशन अंतर्गत स्थानीय नगर पालिका क्षेत्र में घर घर कचरा संठाहण करने के लिए 7 ऑटो ट्रिपर ओर एक ई रिक्शा का आज शुभारंभकिया। नगर पालिका अध्यक्ष मंजुदेवी सोनी, भाजपा नगर अध्यक्ष पंकज सिरोया, नपा उपाध्यक्ष ऐजाज अली, जीएसएस अध्यक्ष नंदकिशोर टेलर, पार्षद अशोक विजयवर्गी, युवा मोर्चा नगर अध्यक्ष विकास बारेगामा, गौरव दाधीच, स्वास्थ्य निरीक्षक रेखा कोदली, जमादार विजय कोदली आदि ने विधि विधान से पूजा अर्चना कर हरि झंडी दिखा कर ऑटो टिपर को रवाना किया।

युवक ने फांसी लगाई

उदयपुर, (कासं)। दोपहर को घर में अकेले एक युवक ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार विश्वजीत सिंह (26) पुत्र अमरसिंह निवासी विजयसिंह पथिक नगर सविना जो मंगलवार को घर पर अकेला था और युवक ने दोपहर को घर में ही फांसी लगा ली। शाम को परिजन आए तो इसे लटका देखकर तत्काल उतार चिकित्सालय लेकर गए, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। सूचना पर सविना थाना पुलिस ने पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों के सुपुर्द कर दिया।

ट्रेन की चपेट से युवक की मौत

उदयपुर, (कासं)। परीक्षा देने आए एक युवक की ट्रेन की चपेट में आने से मौत हो गई। जानकारी के अनुसार संजय (24) पुत्र रमणलाल नट निवासी कानेला आनंदपुरी बांसवाडा जो उदयपुर में पशु विभाग की भर्ती परीक्षा देने आया था और उदयपुर में ही अपने कुछ अन्य दोस्तों के साथ दो-तीन दिन से सविना में रह रहा था। यह युवक मंगलवार शाम को जडाव नर्सरी के सामने रेल्वे ट्रेक पर था। इस दौरान यह ट्रेन की चपेट में आ गया। सविना थाना पुलिस ने पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों के सुपुर्द कर दिया।

परीक्षा देने जा रहे युवक की मौत

उदयपुर, (कासं)। परीक्षा देने जा रहे एक युवक की ऑटो की टक्कर से मौत हो गई। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार पुष्कर कुमार (19) पुत्र मुकेश डांगी निवासी सुलावास कुराबड हाल सुदंरवास में रहकर मैकेनिक का काम करता था और पढाई भी कर रहा था। यह मंगलवार को मादडी में पशु पालन विभाग की भर्ती परीक्षा देने जा रहा था। इस दौरान आकाशवाणी कॉलोनी के पास में इसे एक ऑटो ने टक्कर मार दी, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया और चिकित्सालय ले जाते समय मौत हो गई।

समीक्षा बैठक

उदयपुर, (कासं)। राज्य सरकार के वर्तमान कार्यकाल का एक वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में प्रस्तावित कार्यक्रमों की तैयारियों की समीक्षा बैठक बुधवार को जिला कलक्टर अरविन्द पोसवाल की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट मिनी सभागार में हुई। बैठक में जिला कलक्टर पोसवाल ने सभी जिला अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि राज्य सरकार की वर्षगांठ के उपलक्ष्य में होने वाले कार्यक्रमों को पहली प्राथमिकता दी जाए। जिला कलक्टर ने बताया कि 9 दिसम्बर को राज्य स्तरीय राइजिंग राजस्थान समिट के क्रम में जिला स्तर पर भी कार्यक्रम होगा। इसके अलावा 12 दिसम्बर को सुबह फतहसागर की पाल पर रन फॉर विकसित राजस्थान मैराथन का आयोजन किया जाएगा।

फाइनेंसकर्मियों के साथ लूट की वारदात का खुलासा

उदयपुर, (कासं)। ग्रामीण क्षेत्रों से फाईनेंस की किश्ते का लाखों रूपया एकत्रित कर लाने वाले फाईनेंस कंपनी के कर्मचारियों के साथ मारपीट कर लाखों रूपए लूटपाट करने में दो बदमाशों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों ने अब तक 8 वारदातें करना स्वीकार किया है।

गोवर्धनविलास थानाधिकारी भवानी सिंह राजावत ने बताया कि थाना क्षेत्र में पिछले कुछ दिनों से लगातार फाईनेंस कंपनियों के कलेक्शन कर लाने वाले कर्मचारियों के साथ मारपीट कर लूटपाट की घटनाएं हो रही थी और बदमाश अब तक लाखों रूपए लूट चुके है। इस पर थानाधिकारी के नेतृत्व में एएसआई कालू लाल, प्रदीप कुमार, मनोहर सिंह, कांस्टेबल दिनेश सिंह, दिनेश कुमार, शैतान राम, सुरेन्द्र सिंह, अंकित सिंह, मोहन लाल, लोकेश रायकवाल की टीम ने जहां-जहां घटना हुई व जिस-जिस रूट से फाईनेंस कर्मचारी लोन की किश्त ईकट्ठा करते उस मार्ग के आस-पास करीब 50० सीसीटीवी कैमरे चैक किए। सारे रूट करीब 100 किलोमीटर में पडने वाले विभिन्न कम्पनियों के मोबाईल टावर से मोबाईल डेटा एकत्र कर उनका विश्लेषण किया। अलग-अलग क्षेत्रों व अलग-अलग तारीखों की घटनाओं के सीसीटीवी फुटेज प्राप्त कर उनके फुटेज का मिलान किया। अलग-अलग सीसीटीवी फुटेज में नजर आ रहे बदमाशों के कद-काठी, हुलिया, वेशभूषा व घटना में प्रयुक्त वाहन के आधार पर जिले के पाटीया, पहाडा, डुंगरपुर के बिछीवाडा व सलुम्बर के परसाद थाने के कुछ संदिग्ध युवको को चिन्हीत किया।

शिविर में 300 से अधिक लोगों ने करवाई जांचें

उदयपुर, (कासं)। शिक्षा के क्षेत्र मे कार्य कर रहे निजी विद्यालयों के संगठन स्कूल शिक्षा परिवार ने बेहतरीन स्वास्थ्य के लिए जन जागृति लाने सुलभ निशुल्क स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के लिए गत दिनों संभाग के बडे मेडीकल कॉलेज पेसिफिक इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेज, उमरडा के साथ अनुबन्ध किया था। इसके अन्तर्गत निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन भटेवर स्थित लव-कुश बाल मंदिर उच्च प्राथमिक विद्यालय में किया गया।

स्कूल शिक्षा परिवार उदयपुर ग्रामीण जिलाध्यक्ष दिलीपकुमार आमेटा ने बताया कि शिविर का शुभारंभ पिम्स हॉस्पीटल उमरडा के विशेषज्ञ डॉ. प्रीति मल्होत्रा, डॉ. चांद, डॉ. आयुषी, डॉ. करिना, डॉ. मेहुल सुथार, डॉ. योषा, डॉ. सुरेन्द्र दशोरा, डॉ. अदिति, डॉ. नेहा, कैम्प लीडर नरेन्द्र पाठक, स्कूल शिक्षा परिवार के संभाग प्रभारी सी.पी. रावल, संभाग अध्यक्ष गिरीश जोशी, चिकित्सा शिविर संयोजक एवं जिला समन्वयक अनुभव गौड, लव-कुश विद्यालय व्यवस्थापिका महिमा आमेटा, भीण्डर ब्लॉक अध्यक्ष कुशालसिंह शक्तावत, ब्लॉक प्रभारी अनिल स्वर्णकार, वल्लभनगर ब्लॉक प्रभारी कुन्दनसिंह शक्तावत, भव्येश गाँधी, राजमल पाटीदार की उपस्थिति मे किया गया।

संविदा कार्मिकों ने अनुभव प्रमाण पत्र नहीं देने व पोर्टल बंद होने से धरना प्रदर्शन किया

संविदा कार्मिकों ने नियुक्त अधिकारी द्वारा समय पर अनुभव प्रमाण पत्र समय पर नहीं देने व पोर्टल बंद हो जाने से पालिका के बाहर धरना प्रदर्शन किया।

कानोड़, (निसं)। नगर पालिका के बाहर बुधवार बीते करीब दो वर्षो से संविदा पर कार्य कर रहे कार्मिकों ने नियुक्त अधिकारी द्वारा समय पर अनुभव प्रमाण पत्र समय पर नहीं देने व पोर्टल बंद हो जाने से गुस्सा होकर पालिका के बाहर धरना प्रदर्शन किया।

धरने प्रदर्शन की जानकारी पाकर अतिरिक्त अधिशासी अधिकारी व भींडर तहसीलदार सतीश चंद्र पाटीदार नगर पालिका कार्यालय पहुंचे तो पालिका के बाहर जाजम डालकर धरना दे रहे संविदा कर्मचारी तहसीलदार की गाडी के आगे बैठ गए और कर्मचारियों की भर्ती निरस्त करने की मांग करने लगे, कार्मिकों का कहना था कि वह करीब 2 वर्ष से नगर पालिका में संविदा कार्मिक के रूप में कार्य कर रहे हैं, बीते 8 माह से मानदेय भी नहीं दिया जा रहा है , जिससे उनके परिवार का भरण पोषण भी मुश्किल हो गया है, कार्मिकों ने बताया कि नगर पालिका द्वारा अनुभव प्रमाण पत्र तारीख निकलने के बाद जारी किए गए और भार्ती भी निकाल दी, 27 तारीख को आखिरी दिनांक था अब पोर्टल भी बंद हो चुका है, जिससे उनके साथ भेदभाव पूर्ण व्यवहार किया गया , एक भी अनुभव प्रमाण पत्र का रिकॉर्ड आगे नहीं भेजा गया जिससे वह भविष्य में किसी भर्ती में हिस्सा नहीं ले पाएंगे। कार्मिकों की बात को पुख्ता रूप से रखने के लिए नगर पालिका के पूर्व अध्यक्ष अनिल शर्मा, भींडर पंचायत समिति पूर्व प्रधान करण सिंह कोठारी, , बजरंग सेना प्रमुख बजरंगदास वैष्णव, पार्षद गोपाल खटीक ने भी इस बात को पूरजोर से उठाते हुए स्थानीय वाल्मीकि समाज के लोगों को सफाई कार्मिक भर्ती में शामिल करने और पालिका द्वारा किए गए कार्मिकों के चयन को निरस्त करने की मांग की है। देखते ही देखते काफी संख्या में लोग मौके पर एकत्र हो गए और स्थानीय अधिकारी की कार्यशैली का विरोध जताने लगे।लोगों का कहना था कि अतिरिक्त दिशा से अधिकारी व तहसीलदार सतीश चंद्र पाटीदार नगर पालिका से बकाया बिल भुगतान का पैसा मांगने पर उन पर कार्रवाई करने की धमकी दे रहे है , मानमल मेहता व अनिल मेहता ने बताया कि उनकी स्टेशनरी की दुकान है जिसका बीते लंबे समय से बिल बकाया होने से उन्होंने नगर पालिका को सामग्री देना बंद कर दिया जब उन्होंने नगर पालिका से बिल का पैसा मांगा तो उन्हें अतिरिक्त ईओ सतीश चंद्र पाटीदार ने कहा कि तुम नगर पालिका को सामग्री दो नहीं तो तुम्हारे खिलाफ कार्रवाई होगी दुकान एठीकल्चर में बनी है सीज की जाएगी, यह सुनकर मौके पर मौजूद काफी गुस्सा हो गए और अधिशासी अधिकारी के चेंबर में जाकर विरोध जताया।

अधिकारी के चेंबर में पहुंचे पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष अनिल शर्मा सहित नगर वासियों ने अतिरिक्त अधिशासी अधिकारी सतीश चंद्र पाटीदार को खरी-खरी सुनाते हुए कहा कि आप जनता के सेवक हैं , संवेदनशील होकर जवाब देना पडेगा एक गरीब बैंड वाला जिसने पालीका के कार्यक्रम में बेंड बजाया उसे आप यह जवाब दे रहे हो कि मेरे घर पर बेंड बजाया क्या ? आपको भुगतान करने में क्या दिक्कत है , स्टेशनरी का पैसा मांगने पर उसकी दुकान सेट करने की धमकी दी जा रही है, आपने इस तरह का कोई जवाब किसी को दिया तो आंदोलन किया जाएगा, छोटे-छोटे बिलों के भूगतान लिए लोग हर रोज नगर पालिका के चक्कर लगा रहे हैं, स्थानीय लोग अधिकारी से बोले की आपका व्यवहार अच्छा नहीं है, सुधारिए। मौके पर पहुंचे अधिशासी अधिकारी सतीश चंद्र पाटीदार ने पालिका के बाद धरना प्रदर्शन कर रहे हैं कार्मिकों के अनुभव प्रमाण पत्र देखकर कहा कि इस पर मेरे हस्ताक्षर नहीं है, यह फर्जी हैं इसके लिए कार्रवाई कराऊंगा।

सतीश चंद्र पाटीदार, अतिरिक्त अधिशासी अधिकारी नगर पालिका कानोड़ ने बताया कि मैंने कानोड़ नगर पालिका में कोई अनुभव प्रमाण पत्र जारी नहीं किए, फर्जी साइन से अनुभव प्रमाण पत्र जारी करवा दिए, बेग डेट मैं कोई प्रमाण पत्र जारी नहीं होंगे, आज की फाइल ही चलेगी आगे पोर्टल खुलेगा तो ही जारी हो पाएंगे। व्यवहार में सामग्री देनी चाहिए सभी का भुगतान होगा , मैंने किसी को दुकान सीज करने की बात नहीं कहीं, लोगों की मनगढंत बातें हैं।

सार-समाचार

ग्राम पंचायत स्तरीय जनसुनवाई आज

बांसवाड़ा, (निसं)। मुख्य सचिव द्वारा जनभावना के अनुरूप पारदर्शी एवं संवेदनशील वातावरण में आमजन की परिवेदनाओं, समस्याओं की सुनवाई एवं त्वरित समाधान के निर्देशों की अनुपालना में माह दिसम्बर में जिले में ठााम पंचायत स्तरीय, उपखण्ड एवं जिला स्तर पर जनसुनवाई के आयोजन तय कर लिये गये हैं। जिला कलक्टर डॉ. इन्द्रजीत यादव द्वारा जारी आदेशानुसार ग्राम पंचायत स्तरीय जनसुनवाई आाज गुरुवार को जिले की प्रत्येक ग्राम पंचायत मुख्यालय पर स्थित भारत निर्माण राजीव गांधी सेवा केन्द्र पर होगी जिसमें ग्राम पंचायत स्तर के अधिकारीध्कर्मचारी, ठााम विकास अधिकारी, पटवारी, गिरदवर, जल संसाधन, पीएचईडी, विद्युत, पीडब्ल्यूडी एवं चिकित्सा विभाग की भागीदारी रहेगी। इसके नोडल अधिकारी संबंधित उपखंड अधिकारी रहेंगे जबकि पर्यवेक्षण एवं मॉनिटरिंग का जिम्मा चक्रीय क्रम में समस्त एसडीओ, टीडीआरएस, बीडियो तथा अन्य विभागों के चयनित अधिकारियों का रहेगा। इसमें संबंधित ठााम पंचायत के सरपंच व अन्य जनप्रतिनिधियों को आमंत्रित किया जाएगा। इसी प्रकार उपखंड स्तरीय जनसुनवाई 12 दिसम्बर को पंचायत समिति स्थित भारत निर्माण राजीव गांधी सेवा केन्द्र में होगी। इसके लिए इसमें उपखण्ड अधिकारी व समस्त ब्लॉक स्तरीय अधिकारी तथा प्रमुख विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी की चक्रीय क्रम में भागीदारी रहेगी।

युवक को ऑटो ने मारी टक्कर, मौत

उदयपुर,(कासं)। अपने नाना के घर जा रहे एक युवक को ऑटो ने टक्कर मार दी जिससे उसकी मौत हो गई। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार रमेश (21) पुत्र लालूराम गमेती निवासी प्रतापपुरा अम्बेरी सुखेर जो 25 नवम्बर दोपहर को बाईक पर लखावली में अपने नाना के घर जा रहा था। इस दौरान लाखावली के पास में ही इसे एक ऑटो ने टक्कर मार दी, जिससे यह गंभीर रूप से घायल हो गया और एमबी चिकित्सालय में उपचार के दौरान दम तोड दिया। सूचना पर सुखेर पुलिस ने पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों के सुपुर्द कर दिया।

बाल विवाह मुक्त रैली निकाली

डूंगरपुर, (निसं)। राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय खजुरिया ठााम पंचायत रघुनाथपुरा ब्लॉक दोवडा में बाल विवाह मुक्त भारत अभियान के तहत विद्यालय में बाल विवाह मुक्त रैली तथा जानकारी प्रदान की गई। सृष्टि फाऊंडेशन ब्लॉक कोऑर्डिनेटर कमलेश यादव जयपुर, विद्यालय के संस्थाप्रधान कांतिलाल कटारा, स्टाफ सतीश अहारी, ममता डोडा, मोतीलाल कटारा, हरिश कोटडिय़ा, नाथूलाल कलासुआ, प्रेमचंद मीना, रजनी परमार, मंजुला मीना, रेखा पाटीदार वर्षा यादव उपस्थित रहें।अधिकारी सम्मिलित होंगे।

कार्यालय नगर पालिका नाथद्वारा, जिला-राजसमन्द (राज.)

क्रमांक/न.पा.ना./तामीर/2024/13505 दिनांक :31/12/2024

-:आपत्ती सूचना:-

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि निम्नांकित व्यक्तियों द्वारा जरिये क्रय शुदा/पट्टा शुदा के आधार पर प्राप्त भूखण्ड/भवन का स्वयं के नाम पर निम्नांकित वर्णित सम्पत्ति पर भवन निर्माण में कराने हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। उक्त आवेदन के संबंध में किसी भी हितधारी को कोई आपत्ती हो तो सात दिवस (कार्य दिवस) में नगर पालिका कार्यालय में लिखित रूप से प्रस्तुत कर दें अन्यथा प्रकरण में कोई आपत्ती प्राप्त नहीं होने एवं दस्तावेज पूर्ण पाये जाने पर नियमानुसार कार्यवाही पूर्ण करते हुए उक्त प्रकरणों में आगामी कार्यवाही सम्पादित कर दी जायेगी।

क्र. सं.	आवेदक का नाम /पता	आवेदिक सम्पत्ति का विवरण	पड़ौस			
			पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण
1	श्रीमती हरिबाला सांचिहर पत्नी श्री चन्द्रकान्त सांचिहर	वल्लभ विहार आवासीय कॉलोनी बिच्छु मंगरी नाथद्वारा,भूखण्ड संख्या 57	आम रास्ता 40 फिट फिट चौडा	भूखण्ड संख्या-56	भूखण्ड संख्या-58	60 फिट रोड
2	श्रीमती हरिबाला सांचिहर पत्नी श्री चन्द्रकान्त सांचिहर	वल्लभ विहार आवासीय कॉलोनी बिच्छु मंगरी नाथद्वारा,भूखण्ड संख्या 56	भूखण्ड संख्या-57	आम रास्ता 30 फिट चौड़ा	भूखण्ड संख्या-55	60 फिट रोड

आयुक्त, नगर पालिका नाथद्वारा

SRG HOUSING FINANCE LIMITED

एसआरजी हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड

CIN: L65922RJ1999PLC015440

321, एस.एम. लोढ़ा कॉम्प्लेक्स, शास्त्री सर्किल के पास, उदयपुर - 313001 (राजस्थान)

दूरभाष : 0294-2412609, ईमेल: info@srghousing.com, वेबसाइट: www.srghousing.com

परिशिष्ट - 4 {नियम 8 (1)} सांकेतिक की सूचना (स्थावर संपत्ति के लिए)

अधोहस्ताक्षरी, जो एसआरजी हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड का प्राधिकृत अधिकारी है, ने वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण और पुनर्गठन तथा प्रतिभूति हित का प्रवर्तन अधिनियम 2002 की धारा 13(12) के अधीन प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए एवं सपठित प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियम 2002 के नियम 3 के अंतर्गत निम्न ऋणी/सहऋणी/जमानतियों/बन्धककर्ता को एक मांगपत्र जिसमें उल्लेखित रकम, जो उक्त सूचना पत्र की प्राप्ति की तारीख से 60 दिवस के भीतर प्रतिदाय करने के लिए "मांग पत्र" जारी किया था। ऋणी/सहऋणी/जमानतियों/बन्धककर्ता द्वारा रकम का प्रतिदाय करने में असफल रहने पर ऋणी, सहऋणी, बन्धककर्ता, उनके जमानतदारों एवं जनसाधारण को यहाँ सूचना दी जाती है की अधोहस्ताक्षरी ने उक्त अधिनियम धारा 13(4) के अधीन प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए एवं सपठित प्रतिभूति हित प्रवर्तन नियम 2002, के नियम 8 के अंतर्गत निम्न संपत्तियों का सांकेतिक कब्ज़ा उल्लेखित दिनांक को ले लिया है। ऋणी सहऋणी, बन्धककर्ता व जमानतदारो को विशिष्ट रूप से एवं जनसाधारण को सामान्य रूप से इसके द्वारा सावधान किया जाता है की वह नीचे वर्णित संपत्तियों के सम्बन्ध में कोई व्यवहार नही करे। इन संपत्तियों के सबंध में किया गया कोई भी व्यवहार नीचे **सांकेतिक कब्ज़ा** पत्र में वर्णित रकम, और सांकेतिक कब्ज़ा पत्र की दिनांक से आगे के ब्याज, खर्चों, अन्य खर्चों आदि के लिए एसआरजी हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड 321, एस.एम. लोढ़ा कॉम्प्लेक्स, शास्त्री सर्किल के पास, उदयपुर - 313001 (राजस्थान) के प्रभार के अधीन होगा। अधोहस्ताक्षरी उक्त अधिनियम की धारा 13 की उपधारा (8) के अंतर्गत सुरक्षित (सिक्योर्ड) प्रतिभूति के उन्मोचन के लिए उपलब्ध समय के प्रावधानों की ओर ऋणी, सहऋणी, बन्धककर्ता व उनके जमानतदारो का ध्यान आकृष्ट करता है।

क्र. सं.	ऋण खाता संख्या/ऋणी/सहऋणी/जमानती	1) मांग पत्र की दिनांक 2) सांकेतिक कब्जे की दिनांक 3) मांग राशि मांग पत्र अनुसार	स्थावर संपत्ति का विवरण
1.	HLR00000000011454 श्री अमर चंद कुम्हार पुत्र शंकर लाल कुम्हार (ऋणी) श्रीमती ममता कुम्हार पत्नी अमर चंद कुम्हार (सह-ऋणी-1) श्री शंकर लाल पुत्र हीरा लाल कुम्हार (सह-ऋणी-2) श्री विष्णु कुमार प्रजापत पुत्र राजाराम (जमानती)	1) मांग पत्र की दिनांक- जून 21, 2024 2) सांकेतिक कब्जे की दिनांक- नवम्बर 29, 2024 3) मांग राशि मांग पत्र अनुसार- ₹ 3,05,660/- रुपये तीन लाख पांच हज़ार छह सौ साठ मात्र दिनांक जून 21, 2024 तक एवं जून 22, 2024 से आगे के ब्याज, खर्चे अतिरिक्त।	श्री शंकर लाल पुत्र हीरा लाल कुम्हार की सम्पति जो की पट्टा नं. - 003, पुस्तक संख्या- 172, ग्राम- सेगवा, ग्राम पंचायत- गादोला तहसील- निम्बाहेड़ा, जिला- चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) पर स्थित है जिसमें भूमि, भवन एवं ढांचा आदि जो सभी संपत्ति के अभिन्न अंग है जिसका माप लगभग 1600 वर्ग फिट है। जिसकी चतुसीमा निम्न है- पूर्व-रास्ता, पश्चिम-रास्ता, उत्तर-हेमराज/हीरालाल प्रजापत, दक्षिण-मोहन/ नारायण प्रजापत
2.	HLR00000000016021 श्री राजू नाथ पुत्र श्री रामनाथ (ऋणी) श्रीमती रेशमा बाई पत्नी श्री राजू नाथ (सह-ऋणी) श्री दिनेश नाथ पुत्र श्री सूरजमल (जमानती)	1) मांग पत्र की दिनांक- जुलाई 15, 2024 2) सांकेतिक कब्जे की दिनांक- नवम्बर 29, 2024 3) मांग राशि मांग पत्र अनुसार- ₹ 3,18,930/- रुपये तीन लाख अठारह हज़ार नो सौ तीस मात्र दिनांक जुलाई 15, 2024 तक एवं जुलाई 16, 2024 से आगे के ब्याज, खर्चे अतिरिक्त।	श्रीमती रेशमा बाई पत्नी श्री राजू नाथ कालबेलिया की सम्पति जो की पट्टा नं. -44, आराजी नं.-329, ग्राम-सेगवा, पंचायत समिति-गादोला, तहसील-निम्बाहेड़ा, जिला - चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) पर स्थित है जिसमें भूमि, भवन एवं ढांचा आदि जो सभी संपत्ति के अभिन्न अंग है जिसका माप लगभग 2070 वर्ग फिट है। जिसकी चतुसीमा निम्न है- पूर्व - श्री चांदमल पुत्र श्री भंवर लाल मीना, पश्चिम- स्वयं की जमीन या रास्ता, उत्तर- श्री राजेश पुत्र श्री छत्रु जी मीना, दक्षिण- श्रीमती विमला बाई पत्नी श्रीमान विक्रम नाथ
3.	HLR00000000012548 श्री कन्हैया लाल जटिया पुत्र श्री गणपत जटिया (ऋणी) श्री गणपत जटिया पुत्र श्री भेरू लाल जटिया (सह-ऋणी-1) श्री गोरधन जटिया पुत्र श्री गणपत जटिया (सह-ऋणी-2) श्री ममता बाई पत्नी श्रीमान कन्हैया लाल जटिया (सह-ऋणी-3) श्री जगदीश माली पुत्र श्री पृथ्वी राज माली (जमानती)	1) मांग पत्र की दिनांक- दिसम्बर 11, 2023 2) सांकेतिक कब्जे की दिनांक- नवम्बर 29, 2024 3) मांग राशि मांग पत्र अनुसार- ₹ 6,25,530/- रुपये छह लाख पच्चीस हज़ार पांच सौ तीस मात्र दिनांक दिसम्बर 11, 2023 तक एवं दिसम्बर 12, 2023 से आगे के ब्याज, खर्चे अतिरिक्त।	श्री गणपत जटिया पुत्र श्री भेरू लाल जटिया की सम्पति जो की संपत्ति पट्टा नं. -41, पुस्तक सं.-14, ग्राम-अरनिया माली, ग्राम पंचायत-बरदा, पंचायत समिति-निम्बाहेड़ा, तहसील-निम्बाहेड़ा, जिला-चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) पर स्थित है जिसमें भूमि, भवन एवं ढांचा आदि जो सभी संपत्ति के अभिन्न अंग है जिसका माप लगभग 1660 वर्ग फिट है। जिसकी चतुसीमा निम्न है- पूर्व-आम रास्ता, पश्चिम-भग्गा भील का घर, उत्तर-भेरू लाल माली का घर, दक्षिण - चंदू शर्मा का घर
4.	HLR000000000011121 श्री अन्नू लाल गुर्जर पुत्र श्री जय लाल गुर्जर (ऋणी) श्रीमती रामधनी गुर्जर पत्नी श्रीमान अन्नू लाल गुर्जर (सह-ऋणी-1) श्री किशन लाल गुर्जर पुत्र श्री नारायण लाल (जमानती-1) श्री धर्मराज नारायण पुत्र श्री नारायण (जमानती-2)	1) मांग पत्र की दिनांक- अगस्त 09, 2024 2) सांकेतिक कब्जे की दिनांक-नवम्बर 30,2024 3) मांग राशि मांग प्त्र अनुसार- ₹ 10,24,560/- रुपये दस लाख चौबीस हज़ार पांच सौ साठ मात्र दिनांक अगस्त 09, 2024 तक एवं अगस्त 10, 2024 से आगे के ब्याज, खर्चे अतिरिक्त।	श्री अन्नू लाल गुर्जर पुत्र श्री जय लाल गुर्जर की सम्पति जो की पट्टा नं.- 17, ग्राम-आरोली, ग्राम पंचायत अरोली, तहसील-बिजौलिया, जिला-भीलवाड़ा (राजस्थान) पर स्थित है जिसमें भूमि, भवन एवं ढांचा आदि जो सभी संपत्ति के अभिन्न अंग है जिसका माप लगभग 1932 वर्ग फिट है। जिसकी चतुसीमा निम्न है- पूर्व- सड़क, पश्चिम-श्री जगदीश कंडारा का घर, उत्तर-श्री हीरा लाल गुर्जर की जमीन, दक्षिण-सड़क
5	HLR000000000014442 श्री दुर्गा लाल मीना पुत्र श्री रामलाल मीना (ऋणी) श्री राम लाल पुत्र श्री अमारा (सह-ऋणी-1) श्रीमती ममता देवी पत्नी श्रीमान दुर्गेश (सह-ऋणी-2) श्री जगदीश मीना पुत्र श्री नन्द लाल मीना (जमानती)	1) मांग पत्र की दिनांक- अगस्त 02, 2024 2) सांकेतिक कब्जे की दिनांक- नवम्बर 30, 2024 3) मांग राशि मांग पत्र अनुसार- ₹ 5,14,340/- रुपये पांच लाख चौदह हज़ार तीन सौ चालीस मात्र दिनांक अगस्त 02, 2024 तक एवं अगस्त 03, 2024 से आगे के ब्याज, खर्चे अतिरिक्त।	श्री राम लाल पुत्र श्री अमारा जी मीना की सम्पति जो की पट्टा नं.-1651, मिसल नं.-27/2054, ग्राम-गुधा, ग्राम पंचायत-गुधा, तहसील- बिजौलिया, जिला-भीलवाड़ा (राजस्थान) पर स्थित है जिसमें भूमि, भवन एवं ढांचा आदि जो सभी संपत्ति के अभिन्न अंग है जिसका माप लगभग 1376 वर्ग फिट है। जिसकी चतुसीमा निम्न है- पूर्व-रास्ता 14 फुट, पश्चिम -गली 2 फुट और श्री किशन जी, उत्तर-बंसीलाल मीना, दक्षिण-पडत चौक और गोकल
6	HLR00000000016226 श्री कालू लाल रेगर पुत्र श्री भंवर लाल रेगर (ऋणी) श्रीमती सीमा बाई पत्नी श्रीमान कालू लाल रेगर (सह-ऋणी-1) श्री महेंद्र कुमार रामेश्वर लाल पुत्र श्री रामेश्वर लाल (जमानती-1) श्री घीसा लाल मेघवाल पुत्र श्री भेरू लाल (जमानती-2)	1) मांग पत्र की दिनांक- अगस्त 12, 2024 2) सांकेतिक कब्जे की दिनांक- नवम्बर 30,2024 3) मांग राशि मांग पत्र अनुसार- ₹ 11,71,400/- रुपये ग्यारह लाख इकहत्तर हज़ार चार सौ मात्र दिनांक अगस्त 12, 2024 तक एवं अगस्त 13, 2024 से आगे के ब्याज, खर्चे अतिरिक्त।	श्री कालू लाल रेगर पुत्र श्री भंवर लाल रेगर की सम्पति जो की पट्टा नं. - 13, पुस्तक संख्या- 63, आराजी नं. - 688, ग्राम - रावर्दा, ग्राम पंचायत - रावर्दा, पंचायत समिति-बेगुन, तहसील-बेगुन, जिला-चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) पर स्थित है जिसमें भूमि, भवन एवं ढांचा आदि जो सभी संपत्ति के अभिन्न अंग है जिसका माप लगभग 1593 वर्ग फीट है। जिसकी चतुसीमा निम्न है- पूर्व-मांगीलाल रेगर, पश्चिम- शंभू/ तुलसीराम, उत्तर-फतेह सिंह का खेत, दक्षिण - सामान्य रास्ता
7	HLR00000000012109 श्री राजू वैष्णव पुत्र श्री श्याम दास (ऋणी) श्रीमती सुमित्रा वैष्णव पत्नी श्री राजू वैष्णव (सह-ऋणी) श्री कल्याण सिंह पुत्र श्री सुखदेव हजूरी (जमानती-1) श्री अक्षय कुमार पुत्र श्री गोपाल दास (जमानती-2)	1) मांग पत्र की दिनांक- जून 11, 2024 2) सांकेतिक कब्जे की दिनांक- नवम्बर 30,2024 3) मांग राशि मांग पत्र अनुसार- ₹ 5,63,310/- रुपये पांच लाख तरेसठ हज़ार तीन सौ दस मात्र दिनांक जून 10, 2024 तक एवं जून 11, 2024 से आगे के ब्याज, खर्चे अतिरिक्त।	श्री राजू वैष्णव पुत्र श्री श्याम दास की सम्पति जो की आराजी नं.-688, पट्टा नं. -15, ग्राम-रावर्दा, तहसील-बेगुन, जिला-चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) पर स्थित है जिसमें भूमि, भवन एवं ढांचा आदि जो सभी संपत्ति के अभिन्न अंग है जिसका माप लगभग 899 वर्ग फिट है। जिसकी चतुसीमा निम्न है- पूर्व-सड़क, पश्चिम-रावला भूमि, उत्तर- लाली/ रामेश्वर दास, दक्षिण - बालू दास/भंवर दास
8	HLR000000000012463 श्री हिम्मत लाल गुर्जर पुत्र श्री नाथू लाल गुर्जर (ऋणी) श्रीमती केला बाई गुर्जर पत्नी श्रीमान नाथू लाल गुर्जर (सह-ऋणी) श्री जीवन नायक पुत्र श्री शंभू लाल नायक (जमानती)	1) मांग पत्र की दिनांक- दिसम्बर 15, 2023 2) सांकेतिक कब्जे की दिनांक- नवम्बर 30,2024 3) मांग राशि मांग पत्र अनुसार- ₹ 4,75,580/- रुपये चार लाख पचहतर हज़ार पांच सौ अस्सी मात्र दिनांक दिसम्बर 11, 2023 तक एवं दिसम्बर 12, 2023 से आगे के ब्याज, खर्चे अतिरिक्त।	श्री हिम्मत लाल गुर्जर पुत्र श्री नाथू लाल गुर्जर की सम्पति जो की पट्टा नं. - 23, पुस्तक संख्या- 85, ग्राम- हरिपुरा, ग्राम पंचायत- दौलतपुरा, पंचायत समिति-बेगुन, तहसील- बेगुन, जिला- चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) पर स्थित है जिसमें भूमि, भवन एवं ढांचा आदि जो सभी संपत्ति के अभिन्न अंग है जिसका माप लगभग 1151.50 वर्ग फिट है। जिसकी चतुसीमा निम्न है- पूर्व-अपना बाड़ा, पश्चिम-रास्ता, उत्तर- रास्ता, दक्षिण-ओम प्रकाश
9	HLR00000000009198 श्रीमती सजना गुर्जर पत्नी श्रीमान हरजी लाल गुर्जर (ऋणी) श्री हरजी गुर्जर पुत्र श्री बलदेव गुर्जर (सह-ऋणी) श्री कैलाश चन्द्र बैरवा पुत्र श्री देवा बैरवा (जमानती)	1) मांग पत्र की दिनांक- मई 20, 2024 2) सांकेतिक कब्जे की दिनांक- नवम्बर 30,2024 3) मांग राशि मांग पत्र अनुसार- ₹ 1,66,850/- रुपये एक लाख छासठ हज़ार आठ सौ पचास मात्र दिनांक मई 13, 2024 तक एवं मई 14, 2024 से आगे के ब्याज, खर्चे अतिरिक्त।	श्रीमती सजना गुर्जर पत्नी श्रीमान हरजी लाल गुर्जर की सम्पति जो की पट्टा नं. -14, दिनांक - 10-08-2021, ग्राम- दोवनी, ग्राम पंचायत-जीवा का खेड़ा, पंचायत समिति-कोटड़ी, तहसील-कोटड़ी, जिला- भीलवाड़ा (राजस्थान) पर स्थित है जिसमे भूमि, भवन एवं ढांचा आदि जो सभी संपत्ति के अभिन्न अंग है जिसका माप लगभग 1120 वर्ग फिट है। जिसकी चतुसीमा निम्न है- पूर्व-रास्ता, पश्चिम-भेरू/कजोड़ गुर्जर का बाड़ा, उत्तर-भंवर/कल्याण गुर्जर का घर, दक्षिण-भंवर/कल्याण का बाड़ा (नोहरा)
10	HLR00000000009892 श्री कैलाश जाट पुत्र श्री रामकुमार जाट (ऋणी) श्रीमती सरोज देवी पत्नी श्री कैलाश जाट (सह-ऋणी) श्री महावीर जाट पुत्र श्री भंवर लाल जाट (जमानती)	1) मांग पत्र की दिनांक- मई 07, 2024 2) सांकेतिक कब्जे की दिनांक- नवम्बर 30,2024 3) मांग राशि मांग पत्र अनुसार- ₹ 2,09,070/- रुपये दो लाख नो हज़ार सत्तर मात्र दिनांक अप्रैल 24, 2024 तक एवं अप्रैल 25, 2024 से आगे के ब्याज, खर्चे अतिरिक्त।	श्री कैलाश जाट पुत्र श्री रामकुमार जाट की सम्पति जो की पट्टा नं. - 06, पुस्तक सं.-122, ग्राम-लामगरा, ग्राम पंचायत-लामगरा, पंचायत समिति- भिनाय, तहसील-भिनाय, जिला-अजमेर (राजस्थान) पर स्थित है जिसमें भूमि, भवन एवं ढांचा आदि जो सभी संपत्ति के अभिन्न अंग है जिसका माप लगभग 75 वर्ग गज (675.00 वर्ग फीट) है। जिसकी चतुसीमा निम्न है- पूर्व - मिश्री/गणेश जाट, पश्चिम - गोपाल सेन, उत्तर-सोरम/उगमा जाट, दक्षिण - रास्ता

स्थान-राजस्थान

प्रकाशन की दिनांक- 05/12/2024

अधिकृत अधिकारी

एसआरजी हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड

खाप पंचायत के फैसले के खिलाफ भूख हड़ताल

कलेक्ट्री के बाहर मां-बेटे भूख हड़ताल पर बैठे

गंगापुर सिटी (निस)। प्रशासन द्वारा हाई कोर्ट के आदेशों की पालना नहीं करवाने पर नादौती उपखंड के मेढे का पुरा निवासी एक व्यक्ति अपनी मां के साथ बुधवार को कलेक्ट्रेट के सामने भूख हड़ताल पर बैठ गया। उसका कहना है कि उसके व उसके परिवार के सामने भूखे मरने की नौबत आ रही है।

पीड़ित रामप्रताप ने बताया कि सामाजिक बहिष्कार से संबंधित खाप पंचायत के फैसले के खिलाफ दिए गए हाई कोर्ट के आदेश की पालना करवाने की कलेक्टर से कई बार गुहार लगाई, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। पीडित ने बताया कि पिछले दिनों उसके खिलाफ समाज की खाप पंचायत ने फैसला सुनाते हुए उसका सामाजिक बहिष्कार कर रखा है। इसके चलते न तो वह किसी धार्मिक स्थान पर जा पा रहा है और न ही खेती कर पा रहा है। अब उसके व उसके परिवार के सामने भूखे मरने की नौबत आ रही है।

गंगापुर कलेक्ट्रेट के बाहर मां-बेटे ने भूख हड़ताल की ।

■ **पिछले दिनों उसके खिलाफ समाज की खाप पंचायत ने फैसला सुनाते हुए उसका सामाजिक बहिष्कार कर रखा है**

खाप पंचायत के फैसले के खिलाफ उसने हाई कोर्ट में याचिका लगाई जिस पर कोर्ट ने उसके पक्ष में फैसला दिया, लेकिन बार-बार आग्रह करने के बाद भी प्रशासन फैसले की पालना सुनिश्चित नहीं करवा पा रहा है, जिससे उसे बहुत परेशानी हो रही है। पूर्व में प्रशासन को कोर्ट के आदेशों की पालना करवाने के लिए गुहार लगाई थी, लेकिन बार-बार शिकायत के बावजूद अभी तक कोई कार्रवाई नहीं होने के कारण उसे मजबूरन भूख हडताल पर बैठना पड रहा है।

सियार ने बच्चों पर हमला किया

कोटा, (निसं)। जिले के इटावा में सियार ने बच्चों पर हमला कर दिया। यह घटनाक्रम मंगलवार रात को वार्ड नंबर चार में हुआ। यहां पर बच्चे अलाव ताप रहे थे इस दौरान अचानक सियार वहां पहुंच गया और उसने बच्चों पर हमला कर दिया। इसमें दो बच्चे घायल हो गए। सियार के हमले के बाद बच्चों का शोरगुल सुनकर उनके परिजन और आस-पड़ोस के लोग वहां पहुंचे और डंडे से मारकर सियार को भगा दिया।

इसके बाद लहूलुहान हालत में दोनों बच्चों को इटावा अस्पताल ले जाया गया। यहां पर उपचार कर उन्हें रेबीज के इंजेक्शन लगाए गए हैं। घटना के बाद पूरे इलाके में दहशत फैली हुई है।कोटा रोड बाईपास पर वार्ड नंबर 4 स्थित ईदगाह के पास रहने वाले सोनू आर्य ने बताया कि उनका बेटा 10 वर्षीय युवराज और पड़ोस में रहने वाला 12 वर्षीय भगवती शर्मा सहित अन्य बच्चें आग जलाकर बैठे हुए थे। अचानक 9.30 बजे के करीब एक सियार ने उन पर हमला कर दिया। बच्चे कुछ समझ पाते उससे पहले सियार ने उन्हें जख्मी कर दिया। सोनू आर्य का कहना है कि इससे पहले भी इस इलाके में कई बार सियार की आवाजाही रही है। इटावा कस्बे में भी कई बार सियार देखे जा चुके हैं। नजदीक के जंगल कटने से भोजन की तलाश में शहर की तरफ आने लगे हैं।

नाबालिग से दुष्कर्म के आरोपी को आजीवन कारावास

अजमेर (कासं)। नाबालिग से दुष्कर्म करने वाले आरोपी को पॉक्सो कोर्ट संख्या-1 ने आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। मसूदा थाना क्षेत्र में दर्ज इस मामले में आरोपी भूपेंद्र उर्फ बंटी को दोषी ठहराया गया है। न्यायाधीश ने आरोपी को 1 लाख 60 हजार रुपए के आर्थिक दंड से भी दंडित किया है। वहीं इस मामले में आरोपी की फरार पत्नी को मफरूर घोषित कर उसके खिलाफ स्थाई वारंट जारी किए हैं।

■ **आरोपी की फरार पत्नी को अदालत ने किया मफरूर घोषित, जारी किए स्थाई वारंट**

सरकारी वकील ने बताया कि परिवादी ने 3 अक्टूबर 2022 को मसूदा थाने में दर्ज रिपोर्ट में बताया कि उसकी दस वर्षीय नाबालिग पुत्री दिन में दोपहर करीब दो बजे शौच के लिए खेत में गई थी। काफी देर इंतजार करने के बाद जब वह नहीं लौटी तो गांव में तलाश की गई। पता चला कि गांव में रहने वाले भूपेंद्र और उसकी पत्नी मैना देवी गांव में गायब हैं। पीडित् पिता ने मसूदा थाने में मुकदमा दर्ज करवाया। आरोपी नाबालिग किशोरी को कामली घाट पर छोड़ कर चले गए। स्थानीय पुलिस ने किशोरी से पूछताछ की और मसूदा पुलिस के हवाले कर दिया। पुलिस ने किशोरी के बयान दर्ज कर उसका मेडिकल करवाया। पीडिता ने अदालत में दर्ज किए बयानों में बताया कि आरोपी भूपेंद्र और उसकी पत्नी मैना देवी उसे डरा धमका कर अपने साथ ले गए। यहां से उसे जवाजा में रखा और इसके बाद बस में बैठाकर अहमदाबाद ले गए। जहां उसे एक कमरे में रखा गया। आरोपी ने अपनी पत्नी के सामने उसके साथ तीन दिन तक दुराचार किया। यहां से आरोपी की पत्नी मैना देवी फरार हो गई। आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। आरोपी के खिलाफ 20 गवाह और 25 दस्तावेज पेश किए। इन सबूतों और गवाहों के आधार पर न्यायालय ने भूपेंद्र को दोषी पाया और उसे आजीवन कारावास की सजा सुनाई। इस मामले में आरोपी की गिरफ्तार पत्नी को अदालत ने मफरूर घोषित करते हुए स्थाइ वारंट जारी किए हैं। वहीं अदालत ने प्रतिकार स्कीम के तहत पीडिता को छह लाख रुपए देने के भी आदेश दिए हैं।

सजा के बाद आरोपी को जेल लेकर जाती पुलिस ।

सहायक प्रशासनिक अधिकारी निलंबित

करौली (नि.स.)। करौली जिला कलेक्टर नीलाभ सक्सेना ने एक आदेश जारी कर बताया है कि आंगनबाडी केंद्र खेडीशीश,खेडी घाटम के चयन में हो रही धांधली कि शिकायत के संबंध में जांच अधिकारी उपनिदेशक महिला एवं बाल विकास अधिकारी करौली की रिपोर्ट के आधार पर चयन प्रक्रिया से संबंधित दस्तावेज उपलब्ध नहीं करने,जांच प्रक्रिया में असहयोग करने एवं उच्च अधिकारियों को गुमराह करने वाले केदार लाल मीणा सहायक प्रशासनिक अधिकारी कार्यालय बाल विकास परियोजना अधिकारी को तत्काल प्रभाव से निलंबित किया जाता है एवं जांच अधिकारी उपनिदेशक महिला एवं बाल विकास अधिकारी करौली कि रिपोर्ट के आधार पर राजेंद्र यादव हैडपम्प मिस्त्री पंचायत समिति हिंडौन कि संलिप्तता पाए जाने पर राजेंद्र यादव पंचायत समिति हिंडौन को तत्काल प्रभाव से निलंबित किया जाता है। उन्होंने बताया कि निलंबन काल के दौरान सहायक प्रशासनिक अधिकारी कार्यालय बाल विकास परियोजना अधिकारी केदार लाल मीणा का मुख्यालय कार्यालय बाल विकास विभाग मंडरायल रहेगा एवं हेड पंप मिस्त्री राजेंद्र यादव का निलंबन काल के दौरान मुख्यालय कार्यालय जिला परिषद करौली रहेगा।

ट्रक में घुसी सफारी, दो की मौत व एक घायल

बीकानेर। श्रीडूंगरगढ़ के रिड़ी गांव के एक ही परिवार के दो बेटों की सड़क हादसे में दर्दनाक मौत के बाद हर तरफ सिर्फ सन्नाटा पसरा है। ये सन्नाटा शनि मंदिर के पास जाकर टूटता है और कोहराम में बदल जाता है। रोने ओर चीखने की आवाज हर किसी को अंदर तक चीर देती है। सरदारशहर मेघा हाईवे पर सड़क हादसे में गांव के दो युवकों की दर्दनाक मौत हो गई और एक अन्य गंभीर रूप से घायल है। वहीं एक अन्य इसी गांव का दामाद है। मृतक राकेश का विवाह अभी डेढ़ साल पहले हुआ था और उसकी पत्नी ने डेढ़ महीने पहले बेटे को जन्म दिया है।

गांव में शनि मंदिर के पास रहने वाले 22 साल के राकेश पुत्र लालाराम भार्गव व 22 वर्षीय नंदलाल पुत्र किशनलाल भार्गव चचेरे भाई है। दोनों ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। दुर्घटना में एक घायल रामलाल पुत्र गिरधारीलाल भार्गव भी रीड़ी निवासी है। तीनों युवक सरदारशहर रह कर अपने जीजा 35 वर्षीय पवन पुत्र रतनलाल निवासी राजासर बिकाण के साथ कामकाज करते थे। इनका ही मौसी का बेटा 30 वर्षीय कमलेश पुत्र भंवरलाल भार्गव निवासी राणासर बिकाण व जीजा पवन ने भी मौके पर ही दम तोड़ दिया। वहीं झुझुनू निवासी धनराज प्रजापत ने बीकानेर जाने के दौरान रास्ते में जान गंवा दी। हादसा जिस 6 चक्कों वाले ट्रक से हुआ, उसके ड्राइवर रतनगढ़ निवासी किशोर सिंह राजपूत की हालत भी गंभीर है। उसका यहां बीकानेर के ट्रॉमा सेंटर में इलाज चल रहा है।

राकेश ओर नन्दलाल चचेरे भाई हैं और दोनों अपने बहनोई पवन के साथ सरदारशहर में काम करते थे। बताया जा रहा है कि ये सभी ऑनलाइन का कोई काम कर रहे थे। क्या काम करते थे इस बारे में स्थिति अभी स्पष्ट नहीं हुई है। चारों रात में महज लॉवर व टीशर्ट पहने हुए टाटा सफारी में जा रहे थे। कपड़ों को देखकर नहीं लग रहा कि किसी विवाह या अन्य समारोह से लौट रहे थे। किसी होटल या ढ ाबे पर खाना खाने के लिए जाने की आशंका व्यक्त की जा रही है। दुर्घटना के बाद गांव रीड़ी में माहौल गमगीन हो गया है। मृतक राकेश डेढ़ महीने पहले ही बेटे का पिता बना था। उसके परिजन पहली संतान के रूप में पौत्र होने की खुशी का उत्सव मनाने की तैयारी कर रहे हैं लेकिन अब पूरे घर में मातम है। घर में इस सूचना के बाद कोहराम मच गया है। वहीं मृतक नंदलाल के परिजन उसके विवाह के सपने संजो रहे थे। जब से हादसे की खबर मिली है तब से बेसुध हैं। अन्य के हाल भी बेहाल है। घायल रामलाल भी एक डेढ़ वर्षीय बालक का पिता है। उसके स्वास्थ्य के लिए परिजन मन्नतें मांग रहें है व ग्रामीण भी प्रार्थनाएं कर रहें है। पूरे गांव में ही नहीं क्षेत्र में घटना तेज स्पीड व दर्दनाक हादसों की चर्चा एक बार फिर छिड़ गई है।

शेरगढ़ में सेना के हेलीकॉप्टर की इमरजेंसी लैंडिंग

जोधपुर, (कासं)। भारतीय सेना के हेलिकॉप्टर चेतक की शेरगढ़ के पास इमरजेंसी लैंडिंग करवाई गई। जैसे ही लोगों ने स्कूल के मैदान में हेलिकॉप्टर को देखा तो वहां भीड़ लग गई।

मामला बुधवार दोपहर करीब 3 बजे का है। तकनीकी खामी के कारण इमरजेंसी लैंडिंग करवानी पड़ी। शेरगढ़ एसएचओ सवाई सिंह ने बताया कि दो चेतक हेलिकॉप्टर ने प्रैक्टिस के लिए जोधपुर आर्मी बेस कैंप से उड़ान भरी थी। दोपहर करीब 2 बजकर 45 मिनट पर शेरगढ़ गांव के ऊपर ये हेलिकॉप्टर मंडराने लगे। आसमान में इन दोनों हेलिकॉप्टर ने 10 राउंड काटे । 15 मिनट बाद दोपहर 3 बजे दोनों हेलिकॉप्टर की शेरगढ़ के संस्कृत स्कूल के खेल मैदान में इमरजेंसी लैंडिंग करवाई गई। पायलट को तकनीकी खामी नजर आई थी, जिसके बाद दोनों हेलिकॉप्टर के पायलट ने इमरजेंसी लैंडिंग करवाई है।

गांव में जैसे ही सेना का हेलिकॉप्टर उतरा, लोग सेल्फी लेने और वीडियो बनाने के लिए पहुंच गए। दूसरे हेलिकॉप्टर की लैंडिंग होने के कुछ देर बाद पायलट ने तुरंत उड़ान भर दी। वह हेलिकॉप्टर एक घंटे बाद शाम करीब 4 बजे दोबारा उसी मैदान में आया। बताया जा रहा है कि स्कूल मैदान में खड़े हेलिकॉप्टर में तकनीकी खराबी थी। किसी पार्ट्स को लेकर दूसरे हेलिकॉप्टर का पायलट दोबारा यहां पहुंचा। हालांकि मौके पर मौजूद जवानों का कहना है कि यह प्रैक्टिस का हिस्सा है।

चाकूबाजी में तीन घायल

कोटा, (निसं)। रेलवे कॉलोनी इलाके के गणेशपुरा में ब्लड कैंप के बाहर दो पक्षों में हुई चाकूबाजी में तीन युवक घायल हो गए। रेलवे कॉलोनी क्षेत्र के गणेशपुरा में चल रहे ब्लड कैंप के बाहर उस समय अफरा-तफरी मच गई जब दो युवक कुल्हाड़ी और चाकू लेकर पहुंचे और ब्लड देकर बाहर निकल रहे युवक सुरेन्द्र पर राहुल ने चाकू से हमला कर दिया।

हमले में घायल सुरेन्द्र ने चाकू छीनकर राहुल और ललित पर हमला कर दिया। हमले में घायल तीनों युवकों को उपचार के लिए एमबीएस अस्पताल में भर्ती कराया। जानकारी के अनुसार मंगलवार रात्रि को सुरेंद्र की राहुल से किसी बात को लेकर कहासुनी हो गई थी। उस समय तो मामला समझाईश से रफा-दफा हो गया। रेलवे कॉलोनी थाना अधिकारी रामस्वरूप मीणा ने बताया कि इलाके के गणेशपुरा में ब्लड कैंप के बाहर दो पक्षों में मंगलवार रात्रि को किसी बात को लेकर कहासुनी हो गई। थानाधिकारी ने बताया कि सुरेंद्र मीणा ब्लड कैंप से बाहर निकला उसी समय राहुल उसका भाई ललित दोनों कुल्हाड़ी और चाकू लेकर वहां पहुंचे और राहुल ने सुरेन्द्र पर चाकू से हमला कर दिया। हमले में घायल सुरेन्द्र ने भी चाकू छीनकर राहुल और ललित पर हमला कर दिया। हमले में घायल तीनों गणेशपुरा निवासी हैं।

मोटरसाइकिल चोर गिरोह का पर्दाफाश, तीन आरोपी गिरफ्तार, 10 वाहन बरामद

केकड़ी (निस) केकड़ी शहर थाना पुलिस ने दिनदहाड़े मोटरसाइकिल चोरी करने वाले शातिर गिरोह का भंडाफोड़ करते हुए तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से 10 चोरी की मोटरसाइकिलें बरामद की हैं। ये सभी वारदातें नशे की लत पूरी करने के लिए की गई थी।

केकड़ी शहर थाना प्रभारी कुसुम लता मीणा ने बताया कि केकडी निवासी अनिल सागर ने 13 नवंबर 2024 को अपनी मोटरसाइकिल चोरी की रिपोर्ट दर्ज कराई थी। उन्होंने बताया कि उनकी हीरो होंडा स्प्लेंडर प्रो मोटरसाइकिल पटेल मैदान के बाहर खडी थी, जिसे अज्ञात व्यक्ति ने चोरी कर लिया। इस पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू की। पुलिस ने घटनास्थल और आसपास के 500 से अधिक सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाले और साइबर सेल की मदद से संदिग्धों को ट्रैक किया। मुखबिर की सूचना पर शुभम उर्फ सैंटी तेली, प्रवीण मेघवंशी और मनोहर सैनी को गिरफ्तार किया गया। गहन पूछताछ के दौरान आरोपियों ने 10 मोटरसाइकिल चोरी करने की बात स्वीकार की।

बाइक चोरी के मामले में पुलिस ने शुभम उर्फ सैंटी तेली (26 वर्ष) - निवासी तेली मोहल्ला, देवली, जिला टोंक, प्रवीण मेघवंशी (29 वर्ष) - निवासी बासनी, थाना हिण्डोली, जिला बूंदी और मनोहर सैनी (20 वर्ष) - निवासी गांव टरडक्या, थाना हिण्डोली, जिला बूंदी को गिरफ्तार किया है। केकडी सिटी थानाधिकारी कुसमलता मीणा ने बताया कि आरोपी सुनसान जगहों पर खडी मोटरसाइकिलों को मास्टर चाबी का इस्तेमाल कर चोरी करते थे। मुख्य आरोपी शुभम पर पहले से ही छह आपराधिक मामले दर्ज हैं। पुलिस अधीक्षक वंदिता राणा के निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रामचंद्र सिंह और पुलिस उप अधीक्षक हर्षित शर्मा के सुपरविजन में केकडी शहर थानाधिकारी कुसुमलता मीणा के नेतृत्व में विशेष टीम बनाई गई।

केकड़ी शहर थाना पुलिस ने बाइक चोर गिरोह का पर्दाफाश कर तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया।

इस टीम ने कुशल रणनीति और तकनीकी जांच के आधार पर इस गिरोह का पर्दाफाश किया। आरोपियों के कब्जे से 10 मोटरसाइकिलें बरामद की गई हैं, जो केकड़ी, शाहपुरा, भीलवाडा, देवली और बूंदी से चोरी की गई थीं। कार्रवाही करने वाली टीम में केकडी शहर थानाधिकारी कुसुमलता मीणा, उप निरीक्षक महेशचंद, हेड कॉन्स्टेबल राकेश कुमार, कॉन्स्टेबल पंकज कुमार, साइबर सेल टीम के रामराज, गजराज, शिवजीराम का सराहनीय योगदान रहा।

नाकाबंदी में 76 किलो 131 ग्राम ज्वैलरी जब्त

कोटा, (निसं)। रानपुर पुलिस टीम ने नाकाबंदी के दौरान एक कार में मौजूद व्यक्तियों द्वारा संतोषप्रद जवाब नहीं देने पर उनके पास पांच बैगों में मौजूद 76 किलो 131 ग्राम चांदी जैसे रंग वाली ज्वैलरी को जब्त किया है।

शहर पुलिस अधीक्षक अमृता दुहन ने बताया कि रानपुर थाने के उपनिरीक्षक भीम सिंह मय जाप्ता जगपुरा पुलिस चौकी के सामने कोटा-झालावाड हाईवे पर नाकाबंदी कर वाहनों की चैकिंग कर रहे थे। उसी दौरान एक कार को चैकिंग के लिये रूकवाया गया जिसमे रामप्रसाद, आशु, राहुल व खुशाल सवार थे।

कार में चैकिंग के दौरान पांच बैग मिले जिनकी तलाशी ली गई तो बैग में चांदी जैसे रंग की ज्वैलरी भरी हुई थी। जिसके संबंध में चारों से पूछताछ करने पर उनके द्वारा कोई संतोषप्रद जवाब न देने पर उन ज्वैलरी के बैगो जब्त किया गया जिसका वजन 76 किलो 131 ग्राम था। जब्त ज्वैलरी के संबंध में अनुसंधान किया जा रहा है।

कार्रवाई के छह दिन बाद ईडी ने किया मामल का खुलासा

पी.वाई.वाई.पी.एल. एप मामले में ही हुई थी जखोडा गांव में कार्रवाई

झुंझुनूं, (निसं)। जिले के मंड्रेला के समीप जखोडा गांव में छह दिन पहले हुई कार्रवाई को लेकर ईडी ने खुलासा किया है। हालांकि स्पष्ट तौर पर अभी भी यह सवाल है कि इस मामले में ईडी को जितेंद्र कस्वां के पास क्या मिला और उसकी भूमिका क्या थी। लेकिन ईडी ने सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर जानकारी दी है।

जिसमें बताया गया है कि 28 से 30 नवंबर तक दिल्ली, गुरूग्राम, जोधपुर, झुंझुनूं, हैदराबाद, पुणे और कोलकाता में 13 जगह छापेमारी की कार्रवाई की गई थी। तलाशी अभियान के दौरान ईडी को 47 लाख रूपये की अस्पष्टीकृत नकदी, विभिन्न आपत्तिजनक दस्तावेज, चेक बुक, एटीएम कार्ड, पैन कार्ड, डिजिटल हस्ताक्षर और ट्रस्ट वॉलेट सीक्रेट वाक्यांश बरामद किए गए और उन्हें जब्त कर लिया गया। इसके अलावा निजी वॉलेट से 1.36 करोड रूपये मूल्य की क्रिप्टोमुद्रा भी जब्त की गई जिसके बाद इस गोरखधंधे में इस्तेमाल हो रहे बैंक खातों को फ्रीज कर दिया गया। दरअसल ईडी ने रूपये की साइबर धोखाधडी के संबंध में सीबीआई, आर्थिक अपराध शाखा, दिल्ली द्वारा दर्ज दो एफआईआर के आधार पर जांच शुरू की थी।

बताया जा रहा है कि इस पूरे घोटाले में शामिल लोगों ने सट्टेबाजी, जुआ, अंशकालिक नौकरियों और फिशिंग घोटालों आदि के माध्यम से करोडों रूपये कमाए हैं। एफआईआर में बताया गया है कि जालसाजों ने 5000 से अधिक भारतीय बैंक खातों के माध्यम से पैसे निकाले और बाद में इसे संयुक्त अरब अमीरात स्थित भुगतान प्लेटफॉर्म पीवाईवाईपीएल पर अपलोड कर दिया।

साइबर धोखाधडी के पैसे का एक हिस्सा मास्टरध्वीजा इंडियन बैंक एटीएम कार्ड के माध्यम से दुबई में नकद में निकाला गया था। ईडी ने सैकडों बैंक खातों में डेबिट/क्रेडिट लेनदेन और क्रिप्टो करेंसी की खरीद का विवरण देने वाले 2000 से अधिक दस्तावेज बरामद किए गए हैं। ईडी 28 नवम्बर को झुंझुनूं के जखोडा गांव में भी इस मामले में कार्रवाई के लिए पहुंची थी। ईडी टीम ने जखोडा के जितेन्द्र कस्वां के घर पर यह कार्रवाई की थी।

ईडी के अधिकारी 28 नवम्बर को देर रात 2:30 बजे दो टैक्सियों से जखोडा पहुंचे थे, जहां गांव के बाहर देवनारायण मन्दिर के पास उन्होंने लगभग 2:30घंटे तक इंतजार किया, उसके बाद सुबह 5 बजे वे जितेन्द्र कस्वां के घर पर तलाशी के लिए दाखिल हुए। सुबह 5 बजे शुरू हुई यह कार्रवाई लगभग 17 घंटे तक जारी रही। इस दौरान ईडी टीम के साथ आए सीआरपीएफ के जवानों ने जितेन्द्र कस्वां के घर की ओर आने वाले रास्ते को दोनों तरफ से बन्द कर दिया था। यहां तक कि छत पर और घर के मुख्य दरवाजे के बाहर भी सीआरपीएफ के जवान तैनात थे। कार्रवाई के दौरान किसी को भी घर पर नहीं आने दिया गया था।

कार्यालय नगर पालिका मारवाड़ जंक्शन(पाली)
पंचायत समिति के सामने मारवाड़ जंक्शन -306001

क्रमांक : न.पा.मा.जं./भण्डार/2024-25/1906 दिनांकः-03-12-2024

निविदा सूचना: 05/2024-25

एतदद्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि नगर पालिका, मारवाड़ जंक्शन के भण्डार शाखा की ऑफलाईन निविदा आमंत्रित की गई है। उक्त निविदा सम्बंधित विस्तृत जानकारी पालिका के नोटिस बोर्ड अथवा वेब पोर्टल https://sppp.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है, जिसके यू.बी.एन. नम्बंर DLB2425SSOB12707 है।

अधिशाषी अधिकारी
नगर पालिका, मारवाड़ जंक्शन
राज.संवाद/सी/24/8651

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER, P.W.D. DISTT.DN.II, UDAIPUR

No.: 894 **Notice Inviting Bid No. 16/2024-25** Date: 27.11.2024

NIB No.: PWD2425A2999

Bids for Plantation and Material Supply on under MGNREGA works are invited from interested bidders upto 29.11.2024 11.00 AM to 08.12.2024 06.00 PM. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal ("http://eproc.rajasthan.gov.in" and "http://sppp.rajasthan.gov.in") of the state, and department website. The approximate value of procurement of 22 work is Rs. 247.38 Lacs.

S.No.	UBN No.	S.No.	UBN No.
1	PWD2425WSOB10986	2	PWD2425WSOB10987
3	PWD2425WSOB10988	4	PWD2425WSOB10989
5	PWD2425WSOB10990	6	PWD2425WSOB10991
7	PWD2425WSOB10992	8	PWD2425WSOB10993
9	PWD2425WSOB10994	10	PWD2425WSOB10995
11	PWD2425WSOB10996	12	PWD2425WSOB10997
13	PWD2425WSOB10998	14	PWD2425WSOB10999
15	PWD2425WSOB11000	16	PWD2425WSOB11001
17	PWD2425WSOB11002	18	PWD2425WSOB11005
19	PWD2425WSOB11006	20	PWD2425WSOB11007
21	PWD2425WSOB11008	22	PWD2425WSOB11009

DIPR/C/12134/2024

(P.C. Audichya)
Executive Engineer,
PWD Distt. Dn.II,
Udaipurv

जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड
प्रभास्मि शशि सूर्ययोः
रोड नं. 2, पुराना पावर हाउस, बनीपार्क, जयपुर-302016,
वेबसाईट :- www.energy.rajasthan.gov.in/jvvnl, ई-मेल :- caorb@jvvnl.org

ई-निविदा आमंत्रण नोटिस

जयपुर विद्युत वितरण निगम के उपभोक्ताओं के विद्युत विपत्र का ऑनलाईन पेमेंट गेटवे एवं भारत बिल पेमेंट सिस्टम सेवाएं प्रदान करने के लिए ऑनलाईन निविदाएँ आमंत्रित की जाती है। योग्य निविदा दाता सम्पूर्ण निविदा संबंधित दस्तावेज ई-प्रोक्योरमेंट पोर्टल http://eproc.rajasthan.gov.in पर दिनांक 04.12.2024 को सांय 6 बजे से डाउनलोड कर सकते है। निविदाएँ ऑनलाईन ई-प्रोक्योरमेंट पोर्टल पर दिनांक 03.01.2025 को सांय 4 बजे तक ही स्वीकार की जाएगी। निविदा संबंधी जानकारी कार्य का विवरण इत्यादि जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड की वेब साइट https://energy.rajasthan.gov.in/jvvnl, http://eproc.rajasthan.gov.in से प्राप्त की जा सकती है।

UBN No.: VVN2425SLOB00820

राज.संवाद/सी/24/8655 जेपीआर - 2918 (2024) मुख्य लेखाधिकारी (रा. एवं बि.)

बिजली शिकायतों के लिए टोल फ्री नम्बर 1800 180 6507

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, नगर खण्ड 3, जयपुर

क्रमांक 4992 दिनांक-27.11.2024

ई-निविदा सूचना संख्या 53/2024-25

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से निम्नलिखित कार्यो के लिए पीडब्ल्यूएफ एण्ड ए.आर. पार्ट II अपेण्डिक्स 16 दिनांक 01.07.1999 से लागू एवं समय समय पर पंजीयन नियमों सम्बन्धी वित्त विभाग द्वारा जारी आदि दिनांक संशोधित परिपत्रों के अनुरूप इस विभाग में उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से मोहरबन्द निविदायें आमंत्रित की जाती है। निविदा से सम्बन्धित विवरण वेबसाइट www.dipronline.org, http://eproc.rajasthan.gov.in/ & www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।

निविदा आवेदन डाउनलोड करने की तारीख	29.11.2024 (शुक्रवार) प्रात 9.30 बजे से 09.12.2024 (सोमवार) तक सायं 6.00 बजे तक
निविदा जमा कराने की तारीख	29.11.2024 (शुक्रवार) प्रात 9.30 बजे से 09.12.2024 (सोमवार) तक सायं 6.00 बजे तक
निविदा खोलने की तारीख	10.12.2024 (मंगलवार) को अपरान्ह 03.00 बजे से

NIT S.NO. UBN NO. 1. PWD2425WSOB11025, 2. PWD2425WSOB11028, 3. PWD2425WSOB11030, 4. PWD2425WSOB11032, 5. PWD2425WSOB11034, 6. PWD2425WSOB11036, 7. PWD2425WSOB11038, 8. PWD2425WSOB11039, 9. PWD2425WSOB11040, 10. PWD2425WSOB11042, 11. PWD2425WSOB11044

(सुमित तिवारी) अधिशाषी अभियन्ता
सानिवि नगर खण्ड तृतीय, जयपुर
DIPR/C/12140/2024

राजस्थान सरकार
कार्यालय अधीक्षक एवं सदस्य सचिव राजस्थान मेडिकेयर रिलीफ सोसायटी महिला चिकित्सालय सांगानेरी गेट जयपुर

क्रमाक-म.चि.सां.गे / रामेरी सो/2024-25/345 दिनांकः 23/11/2024

ई-निविदा सूचना

इस चिकित्सालय में केन्टीन संचालन हेतु पंजीकृत एवं अनुभवी सेवाप्रदाता एजेंसी से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेट प्रक्रिया के तहत www.eproc.rajasthan.gov.in पर ऑन लाईन निविदा के माध्यम से निम्न विवरणानुसार निविदा आमत्रित की जाती है-

क्र.स.	विवरण	विस्तृत विवरण
1	कार्य का विवरण	चिकित्सालय में मैन पॉवर उपलब्ध कराने हेतु।
2	निविदा की वार्षिक अनुमानित लागत	270.00 लाख
3	अमानत राशि	5,40,000/-
4	MSME रजिस्ट्रर्ड संस्थानों हेतु अमानत राशि 0.50%	1,35,000/-
5	निविदा प्रपत्र शुल्क	2000/-
6	RISL प्रोसेसिंग शुल्क	2000/- प्रबंध निदेशक, RISL जयपुर के नाम से डिमांड ड्राफ्ट बना हुआ हो
7	निविदा आमंत्रितकर्ता	सदस्य सचिव, राज मेडिकेयर रिलीफ सोसायटी महिला चिकित्सालय, सांगानेरी गेट, जयपुर
8	निविदा प्रपत्र अपलोड करने की तिथि एवं समय	28.11.2024 को दोपहर 12.00 बजे
9	निविदा प्रपत्र डाउनलोड करने की तिथि एवं समय	28.11.2024 को दोपहर 12.00 बजे
10	निविदा अपलोड करने की अंतिम तिथि एवं समय	17.12.2024 को सांय 5 बजे तक
11	निविदा पपत्र शुल्क, प्रोसेसिंग शुल्क एवं निविदा अमानत राशि के डिमांड ड्राफ्ट प्रस्तुत करने की तिथि व समय	28.11.2024 से दिनांक 17.12.2024 समय दोपहर 04.00 बजे तक
12	तकनीकी निविदा खोलने की तिथि व समय	18.12.2024 को दोपहर 01.00 बजे
13	वित्तय निविदा खोलने की तिथि व समय	तकनीकी रूप से योग्य निविदादाताओं को अलग से सूचित कर दिया जावेगा।
14	अनुबंध की अवधि	मूल अनुबंध एक वर्ष (आदेश दिनांक से एक वर्ष की होगी) तदापि आपसी सहमति से राजस्थान लोक उपापन में पारदर्शिता नियम 2013 के नियम 73 के अनुसार बढ़ाई जा सकेगी।
15	कार्य सम्पादन प्रतिभूति राशि (Performance Security)	अनुमोदित निविदा की 5 प्रतिशत ।

01- निविदा प्रपत्र सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग की वेबसाईट www.dipr.rajasthan.gov.in एवं राज्य लोक उपापन पार्टल www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखे जा सकते है।
02- इच्छुक निविदादाताओं को निविदा प्रक्रिया में भाग लेने के लिए नांमाकित के पोर्टल के साथ पंजीकृत होना आवश्यक है एवं वैबसाइट www.eproc.rajasthan.gov.in पर यह निविदा ऑन-लाईन प्रस्तुत करनी होगी।
03- बोली प्रतिभूति एवं कार्य सम्पादन प्रतिभूति राशि के बैंकर चैक या डिमांड ड्राफ्ट या अनुसूचित बैंक विनिर्दिष्ट रूपविधीन मे बैंक गारंटी विधि मान्यता की अवधि से 30 दिन आगे तक विधि मान्य रहनी होगी।
04- यदि किसी कारणवश तकनीकी निविदा खोलने की दिनांक को अवकाश रहता है तो तकनीकी निविदा उसके अगले दिन उसी समय पर खोली जावगी।

सदस्य सचिव
राज मेडिकेयर रिलीफ सोसायटी
महिला चिकित्सालय, जयपुर
DIPR/C/12153/2024

बांग्लादेश में हिंदू संत की गिरफ्तारी के विरोध में बड़ी चौपड़ पर प्रदर्शन

जयपुर। बांग्लादेश में इस्कॉन मंदिर के संत चिन्मय कृष्ण दास की गिरफ्तारी और वहां हिंदू समाज पर हो रहे दमन के विरोध में देशभर में लगातार हो रहे प्रदर्शन के बीच बुधवार को राजधानी जयपुर में सर्व हिंदू समाज का गुस्सा फूट पड़ा। शहर के हृदय स्थल बड़ी चौपड़ पर ऐतिहासिक विरोध प्रदर्शन हुआ। हजारों लोगों ने आक्रोश प्रकट किया। बांग्लादेश में हिंदुओं के साथ हो रहे अत्याचार और हत्या के खिलाफ नारे लगे। जय श्रीराम के उद्घोष के बीच बांग्लादेश सरकार के खिलाफ कार्रवाई की मांग की। प्रदर्शन में संत-महंत, जनप्रतिनिधि, युवा, मातृ शक्ति सहित सर्व हिंदू समाज के लोगों ने हिस्सा लिया। हिंदुओं को एकजुट होने के लिए बंटोगे तो कटोगे...एक रहेंगे नेक रहेंगे का नारा भी दिया गया। धरना स्थल पर बनाए गए मंच पर केवल संत-महंत बैठे। वहीं सिविल लाइंस विधायक गोपाल शर्मा, हवामहल विधायक बालमुकुंदाचार्य, महापौर जयपुर ग्रेटर कुसुम यादव, भाजपा नेता रवि नैय्यर, समाजों के मुखिया नीचे सड़क पर बैठे। सभी लोगों ने एक हाथ में भगवा ध्वज तो दूसरे हाथ में सेव हिंदू इन बांग्लादेश, धर्मों रक्षित रक्षितः जात पात की करो विदाई हिंदू हिंदू भाई, कल नहीं कुछ हल बचेगा-आज लड़े तो कल बचेगा जैसे नारे लिखी तख्ती थाम रखी थी। जयश्री राम और भारत माता की जयकारों ने धरने के माहौल में जोश भर दिया।

वक्ताओं ने कहा कि आज जात-पात में बंटने का नहीं एक होने का समय है। सभी को मिलकर एकता की ताकत दिखानी होगी। वहीं केन्द्र सरकार को चाहिए कि वह संयुक्त राष्ट्र संघ और मानवाधिकार परिषद में इस गंभीर प्रसंग को उठाए और उचित समाधान निकाले। प्रदर्शन में शामिल सर्व हिंदू समाज के सभी संगठनों से जुड़े लोगों ने भी मांग कि केन्द्र सरकार बांग्लादेश सरकार पर दबाव डाले। वहां रह रहे हिंदुओं की सुरक्षा को लेकर वहां की सरकार से बात करे। केन्द्र सरकार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी भूमिका को बढ़ाते हुए बांग्लादेश पर दबाव बनवाए। इस मौके पर भारत की राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव को भेजे ज्ञापन को पढ़कर सुनाया गया। पांच सूत्री ज्ञापन में बांग्लादेश सरकार पर दबाव बनाकर धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा करने की मांग मुख्य है। सामूहिक हनुमान चालीसा पाठ के साथ धरने का समापन हुआ। कार्यक्रम का संचालन प्रताप भानु और राकेश कुमा शर्मा ने किया।

राजपूत सभा, जयपुर के अध्यक्ष राम सिंह चंदलाई ने कहा कि हमें भूल जाने की आदत है। हमें अपना गौरव याद करना चाहिए। बांग्लादेश की सरकार भी समाज की रक्षा के लिए है जिसे समाज में हो रहे हिंदुओं पर अत्याचार को कड़ाई से रोकना चाहिए। महंत विष्णु नागा ने कहा कि बांग्लादेश में जो घटनाएं हो रही है उसमें वामपंथी और इस्लामी कट्टरपंथी का पूरी तरह से हाथ है। दोनों मिलकर हिंदू समाज का दमन करने में लगे हैं। हम एकजुट नहीं हुए तो ऐसी घटनाएं भारत में भी हो सकती है।

सिंधी समाज के चंद्रप्रकाश खेतानी ने कहा कि दुर्भाग्य की बात है कि इस घटना को लेकर वैश्विक संगठनों में जिस तरह का विरोध दिखना चाहिए, वह नहीं दिख रहा है। सभी संगठनों को आगे आकर बांग्लादेश सरकार पर दबाव बनाना चाहिए। सिख समाज के सरदार जसवीर सिंह ने कहा कि कृष्ण दास की गिरफ्तारी पूरी तरह से अलोकतांत्रिक और मानवाधिकारों का हनन है। वैश्विक संगठनों को भी आगे आकर इस मामले में हस्तक्षेप करना चाहिए। गालव आश्रम के राघवेन्द्राचार्य ने कहा कि हम भ्रम में न रहे कि भारत में बहुसंख्यक है तो सुरक्षित हैं। हम जहां बहुसंख्यक हैं वहां भी दुखी हैं। इस्कॉन के चिन्मय कृष्ण की रिहाई के लिए पूरी दुनिया में अभियान चलाना चाहिए। विरोध प्रदर्शन के लिए आयोजित सभा को वाल्मीकि समाज के सत्यनारायण डेनवाल, गुर्जर समाज के देवनारायण गुर्जर, माली समाज के रोशन सैनी, जयपुर व्यापार महासंघ के अध्यक्ष सुभाष गोयल, मनीष दास महाराज, अमरनाथ महाराज, महंत राकेशदास ने भी संबोधित किया।

सिविल लाइंस विधायक गोपाल शर्मा ने मीडिया से बातचीत में कहा कि बांग्लादेश में आजकल जो हुकूमत सत्तासीन है, उसका उदारवादी चेहरा भले ही नोबेल पुरस्कार विजेता मोहम्मद यूनुस हैं, किंतु सत्ता की वास्तविक कमान जमात ए इस्लामिया और बांग्लादेश के इस्लामी फौजी हुक्मरानों के हाथों में है। जिस दिन से शेख हसीना सत्ता से बेदखल की गई हैं तब से बांग्लादेश की सत्ता इस्लामी कट्टरपंथियों के हाथों में आ गई है।

बांग्लादेश में हिंदुओं पर अत्याचार के विरोध में बड़ी चौपड़ पर हुए प्रदर्शन में संत-महंत, जनप्रतिनिधि, युवा, मातृ शक्ति सहित सर्व हिंदू समाज के लोगों ने हिस्सा लिया।

■ **बांग्लादेश में हिंदुओं के साथ हो रहे अत्याचार और हत्या के खिलाफ नारे लगाकर बांग्लादेश सरकार के खिलाफ कार्रवाई की मांग की**

होटल फेडरेशन ऑफ़ राजस्थान ने मुख्यमंत्री का आभार जताया

नई पर्यटन यूनिट नीति 2024 के लांचिंग के अवसर पर होटल फेडरेशन ऑफ़ राजस्थान के पदाधिकारियों ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का गुलदस्ता देकर स्वागत किया।

जयपुर। होटल फेडरेशन ऑफ़ राजस्थान ने नई पर्यटन यूनिट नीति 2024 के लांचिंग के अवसर पर अध्यक्ष हुसैन खान, संरक्षक सुरेंद्र सिंह शाहपुरा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष रणविजय सिंह एवं एफ.एच.टी.आर. से कुलदीप सिंह एवं तरुण बंसल, महेंद्र सिंह ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा एवं पर्यटन मंत्री दिया कुमारी का स्वागत कर आभार व्यक्त किया।

नई पर्यटन नीति में औद्योगिक क्षेत्र में सुविधाओं के लिए 5 फीसदी तक भू क्षेत्रफल का आवंटन, कन्वर्जन चार्ज के लाभ प्रभावी के प्रावधानों के अनुसार, पर्यटन इकाइयों से बिजली शुल्क एवं शहरी विकास यूडी टैक्स अनुमोदित औद्योगिक दर पर देय होगा, ट्रेड लाइसेंस 10 वर्ष तक एक बार में बना सकेंगे, फायर एनओसी एक बार में 3 वर्ष तक के लिए बना सकेंगे, हेरीटेज रेस्टोरेंट संचालित करने की अनुमति दी जाएगी, आबकारी नीति के अनुरूप हेरिटेज होटल/रेस्टोरेंट को रियायती दर पर एवं सामान्य रेस्टोरेंट को कंपोजिट बार लाइसेंस देने का प्रावधान, 22 सीट या उससे अधिक क्षमता के वातानुकूलित पर्यटन लग्जरी कोच को मोटर वाहन कर से संपूर्ण छूट, चार दिवारी में स्थित होटल पर्यटन इकाइयों को न्यूनतम सड़क चौड़ाई की आवश्यकता के बिना संचालित करने की अनुमति दिया जाना प्रस्तावित है। इसके अलावा अनेक अन्य प्रावधान भी पर्यटन सेक्टर को प्रमोट के लिए पर्यटन नीति 2024 में सम्मिलित किए गए हैं।

मेरे खिलाफ मुख्यमंत्री को गलत इनपुट दे रही है इंटेलिजेंस : किरोड़ी मीणा

जयपुर। एसआई भर्ती परीक्षा 2021 पेपर लीक मामला भजनलाल सरकार की गले की फांस बनता जा रहा है। एसआई भर्ती मामले में मंगलवार रात को पुलिस की ओर से की गई कार्रवाई पर कैबिनेट मंत्री किरोड़ी लाल मीणा ने सवाल उठाए। मीणा ने गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढम से मुलाकात कर महेश नगर थाना अधिकारी कविता शर्मा की शिकायत की। साथ ही आरोप लगाया कि कविता शर्मा स्पोर्ट्स के फर्जी दस्तावेज से नौकरी प्राप्त की, जिसकी जांच एटीएस ने की है और शिकायत को सही माना।

मीणा ने कहा कि जिस पुलिस अधिकारी के खिलाफ चार्जशीट दी हुई है, उसे फील्ड पोस्टिंग देना गलत है। मीणा ने कहा कि सीएमओ के कुछ अधिकारी मुख्यमंत्री और उनके बीच गलतफहमी पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि उनकी छवि खराब करने के लिए सरकार की इंटेलिजेंस ने गलत इनपुट दिए हैं। इंटेलिजेंस रिपोर्ट के अनुसार किसान, सफाई कर्मचारी और एसआई पेपर से जुड़े अभ्यर्थी किरोड़ी लाल मीणा के उकसाने पर प्रधानमंत्री की सभा और राइजिंग राजस्थान समिट में विघ्न डालने की योजना बना रहे थे।

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने आज सैंकड़ों कार्यकर्ताओं के साथ एंटरटेनमेंट पैराडाइस में फ़िल्म ''द साबरमती फ़ाइल्स'' को देखा और फिल्मांकन की प्रशंसा की।

'सब्सिडी राशि के 2.67 लाख रुपए कम करे फाइनेंस कंपनी'

जयपुर। जिला उपभोक्ता आयोग, जयपुर-द्वितीय ने परिवादी उपभोक्ता को उसके हाउसिंग लोन पर प्रधानमंत्री आवासीय योजना के तहत मिलने वाली 2.67 लाख की सब्सिडी नहीं देने को सेवा दोष करार दिया है। वहीं विपक्षी जीआईसी हाउसिंग फाइनेंस व ब्रांच मैनेजर सुखेन्द्र आचार्य व अन्य को निर्देश दिया है कि वे परिवादी के हाउसिंग लोन में से सब्सिडी की राशि 2.67 लाख रुपए कम करे। वहीं विपक्षी के इस सेवा दोष के लिए उस पर 1.10 लाख रुपए हर्जाना भी लगाया है। आयोग के अध्यक्ष ग्यारसीलाल मीना व सदस्य हेमलता अग्रवाल ने यह आदेश पूजा डाबला के परिवाद पर दिए।

'महिलाओं को नहीं बताए जाते गर्भपात को लेकर उनके अधिकार'

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने कहा कि एमटीपी एक्ट 24 सप्ताह की अवधि में गर्भपात की अनुमति देता है। इस अवधि में गर्भपात के लिए कदम नहीं उठाए जाते और फिर बाद में गर्भपात की अनुमति के लिए कोर्ट में याचिका दायर की जाती है। कोर्ट में देरी से आने से कई जटिलाएं पैदा हो जाती हैं, जिससे अधिकांश मामलों में महिला के जीवन पर जोखिम आ जाता है।

अदालत ने कहा कि महिलाओं और पीडिताओं को गर्भपात को लेकर उनके अधिकारों के बारे में जानकारी नहीं दी जाती, जिसके चलते अदालत को दखल देना पड़ता है। गर्भपात की अनुमति मांगने में देरी के चलते यौन उत्पीड़न के कारण गर्भवती हुई पीडिताओं को अवांछित गर्भावस्था को जारी रखना पड़ता है और कई बार संतान को जन्म देना पड़ता है। ऐसे में उचित कानून बनने तक अदालत दिशा-निर्देश देना जरूरी समझती है। इसके साथ ही अदालत ने मामले में स्वप्रेरित प्रसंज्ञान लेते हुए इसे जनहित याचिका के तौर पर दर्ज करने को कहा है। वहीं अदालत ने यौन उत्पीड़न की शिकार पीडिता को गर्भपात की अनुमति नहीं देने और उसके कल्याण के लिए पूर्व में एकलपीठ की ओर से दिए आदेश में दखल से इनकार किया है। अदालत ने कहा कि पीडिता करीब 32 सप्ताह की गर्भवती है और अब गर्भपात उसके जीवन पर बहुत बडा जोखिम उठाने के बराबर होगा, जिसकी अदालत अनुमति नहीं दे सकता है। सीजे एमएम श्रीवास्तव और जस्टिस उमाशंकर व्यास की खंडपीठ ने यह आदेश पीडिता की ओर से गर्भपात की अनुमति के लिए दायर अपील पर सुनवाई करते हुए दिए।

■ **एमटीपी एक्ट 24 सप्ताह की अवधि में गर्भपात की अनुमति देता है**

18 बीघा भूमि पर दो अवैध कॉलोनियों को किया ध्वस्त

जयपुर। जयपुर विकास प्राधिकरण द्वारा जोन-14 में निजी खातेदारी करीब 18 बीघा कृषि भूमि पर 2 नवीन अवैध कॉलोनियों को प्रारंभिक स्तर पर ही पूर्णतः ध्वस्त किया गया। साथ ही ग्राम ग्वार ब्राह्मणान् में जविप्रा की आवासीय योजना विप्र विहार के भूखण्डों के ब्लॉक, पार्क, सुविधा क्षेत्र की भूमि को कब्जा-अतिक्रमण मुक्त करवाया गया। उप महानिरीक्षक पुलिस कैलाश चन्द्र विश्नोई ने बताया कि जोन-14 के क्षेत्राधिकार में अवस्थित ग्राम फतेहपुरा से संस्कृत कॉलेज जाने वाली रोड़, तहसील चाकसू जिला जयपुर में करीब 10 बीघा निजी खातेदारी कृषि भूमि पर जेडीए की बिना स्वीकृति-अनुमोदन के एवं बिना भू रूपान्तरण करवायें भूमि को समतल कर "भैरव सिटी" के नाम से विगत दिवसों में मौका पाकर रातों-रात बनाई गई मिट्टी-ग्रेवल सडकें, सीमेन्ट के ट्री गार्ड, प्लॉटों की बाउण्ड्रीवाल, पत्थरगढ़ी व अन्य अवैध निर्माण कर नवीन अवैध कॉलोनी बसाने की सूचना प्राप्त होते ही प्रारंभिक स्तर पर ही आज जोन-14 के राजस्व व तकनीकी स्टॉफ की निशादेही पर ध्वस्त किया।

राजस्थान विश्वविद्यालय में ट्रांसजेंडरों के मुद्दों पर चर्चा

राजस्थान विश्वविद्यालय में ट्रांसजेंडर मुद्दों को लेकर कार्यशाला को विश्विद्यालय की कुलपति प्रो. अल्पना कटेजा ने सम्बोधित किया।

जयपुर। राजस्थान विश्वविद्यालय में आज ट्रांसजेंडर मुद्दों को लेकर एक-दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें नामी ट्रांसजेंडर एक्टिविस्ट पुष्पा माई ने लैंगिक समावेशिता के विषय पर चर्चा की। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्विद्यालय की कुलपति प्रो. अल्पना कटेजा ने की जिन्होंने ट्रान्सजेंडर विद्यार्थियों के लिए विश्विद्यालय में किए गए नीतिगत बदलावों के बारे में चर्चा की। उन्होंने कहा कि हाल ही में दो ट्रांसमैन छात्रों द्वारा अपने अकादमिक दस्तावेजों में नाम परिवर्तन की अर्ज़ी पर संज्ञान लेते हुए विश्विद्यालय ने बदलाव किए हैं जिससे आगे भी इस संदर्भ में समस्याओं का निराकरण त्वरित प्रभाव से हो सके। प्रो. कटेजा ने आयोजकों प्रो. नूपुर माथुर एवं डॉ. प्रीति चौधरी को इस कार्यशाला के सफल संयोजन की सराहना करते हुए कहा कि इस तरह के आयोजन विश्विद्यालय में एक समावेशी समाज की नींव रखते हैं और उन्हें उम्मीद है कि विश्विद्यालय इस दिशा में अपने प्रयास जारी रखेगा।

एक वर्ष पूरा होने के कार्यक्रमों की तैयारियों को अंतिम रूप दें : सी.एम.

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि किसान, महिला, मजदूर तथा युवाओं का सशक्तीकरण राज्य सरकार का विजन है। राज्य सरकार के एक वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम, नई योजनाएं तथा नवाचार भी इन वर्गों के कल्याण के लिए समर्पित है। शर्मा ने इन कार्यक्रमों की तैयारियों के संबंध में अधिकारियों को निर्देश दिए कि सफल आयोजन के लिए सभी विभाग आपसी समन्वय सुनिश्चित करते हुए तैयारियों को अंतिम रूप दें।शर्मा बुधवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में राज्य सरकार के एक वर्ष पूरा होने के उपलक्ष्य में होने वाले कार्यक्रमों की तैयारियों को लेकर आयोजित उच्चस्तरीय बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि इन कार्यक्रमों के माध्यम से राज्य सरकार एक वर्ष में किए गए कार्यों का लेखा-जोखा जनता के समक्ष रख रही है। साथ ही, राज्य सरकार की उपलब्धियों तथा आगामी कार्ययोजना की जानकारी भी दी जाएगी। ऐसे में इन कार्यक्रमों में सभी वर्गों की अधिक से अधिक सहभागिता सुनिश्चित की जाए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि एक वर्ष पूरा होने के उपलक्ष्य में 12 से 17 दिसम्बर तक राज्यभर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि इन कार्यक्रमों में शामिल होने वाले लाभार्थियों एवं आमजन की सभी सुविधाओं का विशेष ध्यान रखा जाए। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि विभाग अपनी प्रत्येक गतिविधि के लिए जिम्मेदारी तय करे तथा उनकी लगातार समीक्षा भी करे, ताकि सभी कार्यक्रम सुनियोजित ढंग से आयोजित हो सके।

बैठक में मुख्य सचिव सुधांश पंत, अतिरिक्त मुख्य सचिव आयोजना अभय कुमार, अतिरिक्त मुख्य सचिव ऊर्जा आलोक, अतिरिक्त मुख्य सचिव (मुख्यमंत्री कार्यालय) शिखर अग्रवाल, अतिरिक्त मुख्य सचिव ग्रामीण विकास श्रेया गुहा, अतिरिक्त मुख्य सचिव गृह आनन्द कुमार सहित विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित रहे।

■ **राज्य सरकार की पहली वर्षगांठ के कार्यक्रमों की तैयारियों को लेकर मुख्यमंत्री ने ली उच्चस्तरीय बैठक**

'अनुभव प्रमाण पत्र समय पर जारी क्यों नहीं किए'

जयपुर। हाईकोर्ट ने सफाईकर्मी भर्ती-2024 में समय पर अनुभव प्रमाण पत्र जारी नहीं करने, उन पर प्रति हस्ताक्षर नहीं होने और ऑनलाइन अपलोड होने में परेशानी होने सहित अन्य मुद्दों को लेकर राज्य सरकार से 6 दिसंबर तक पूछा है कि अभ्यर्थियों को अनुभव प्रमाण पत्र समय पर जारी क्यों नहीं किए गए। जस्टिस समीर जैन ने यह आदेश पूजा, सुमन व अन्य की याचिकाओं पर दिए।

आलोक कुमार शर्मा ने कार्यभार संभाला

आलोक कुमार शर्मा

जयपुर। पावर ग्रिड कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड के उत्तरी क्षेत्र फरीदाबाद के कार्यपालक निदेशक का पदभार आलोक कुमार शर्मा ने संभाल लिया है। आलोक कुमार उत्तरी क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले सभी केंद्रीय पारपोषण परियोजनाओं के निर्माण, संचालन और रखरखाव का नेतृत्व करेंगे।

राजस्थान में मेडिकल ट्यूरिज्म को मिलेंगे नए आयाम

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की पहल एवं चिकित्सा मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर के मार्गदर्शन में प्रदेश में मेडिकल वैल्यू ट्रैवल को बढ़ाने के लिए प्रतिबद्धता के साथ काम किया जा रहा है। इसी दिशा में जल्द मेडिकल वैल्यू ट्रैवल पॉलिसी लाई जाएगी। पॉलिसी को अंतिम रूप देने से पहले बुधवार को इससे संबंधित हितधारकों के साथ विस्तृत चर्चा की गई।

सवाई मानसिंह मेडिकल कॉलेज में आयोजित बैठक की अध्यक्षता करते हुए चिकित्सा शिक्षा सचिव अम्बरीष कुमार ने कहा कि राजस्थान को मेडिकल ट्ययूरिज्म के क्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिए लगातार नीतिगत फैसले लिए जा रहे हैं। इस दिशा में जल्द ही मेडिकल वैल्यू ट्रैवल पॉलिसी लाई जाएगी। सभी हितधारकों के साथ चर्चा कर इसे अंतिम रूप दिया रहा है। उन्होंने कहा कि नीति के अनुरूप मेडिक वैल्यू ट्रेवल से संबंधित योजनाओं को धरातल पर लाने के लिए शीघ्र ही एमवीटी सेल बनाई जाएगी। साथ ही, एमवीटी पोर्टल भी शुरू किया जाएगा। राइजिंग राजस्थान के माध्यम से प्रदेश में स्वास्थ्य के क्षेत्र में बड़े पैमाने पर निवेश होने जा रहा है। ये सब ऐसे प्रयास हैं, जिनसे राजस्थान मेडिकल ट्ययूरिज्म की दिशा में नई ऊंचाइयां छुएगा। मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना में भी पोर्टेबिलिटी का प्रावधान होने से मेडिकल वैल्यू ट्रैवल को बढ़ावा मिलेगा। गांव-गांव तक इस नीति का सकारात्मक प्रभाव देखने को मिलेगा।

उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं का निरंतर उन्नयन होने एवं अन्य स्थानों की तुलना में गुणवत्तापूर्ण उपचार कम दरों पर मिलने के कारण प्रदेश में मेडिकल ट्ययूरिज्म की संभावनाएं तेजी से विकसित हुई हैं।

शिक्षक अनुभव का भंडार, प्रेरक बनकर आगामी पीढ़ी को प्रेरित करें : दिलावर

जयपुर। शिक्षा संकुल स्थित स्कूल शिक्षा परिषद सभागार में बुधवार को पुरस्कृत शिक्षक फोरम, राजस्थान और शिक्षा विभाग के तत्वावधान में भामाशाह सम्मान समारोह आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता शिक्षा एवं पंचायतीराज मंत्री मदन दिलावर ने की। राजकीय विद्यालयों के विकास में भामाशाह और प्रेरक शिक्षक विषय पर आयोजित राज्य स्तरीय सेमिनार में जिला एवं राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत राजकीय विद्यालयों के प्रेरक शिक्षकों को सम्मानित किया गया। इस दौरान राज्य की शिक्षा में गुणवत्ता पर भी चर्चा हुई।

शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने इस मौके पर शिक्षकों को "अनुभव का भंडार" बताते हुए उनके प्रेरक योगदान की सराहना की। उन्होंने शिक्षकों से आगामी पीढ़ी को प्रेरित करने और कमजोर व अभावग्रस्त क्षेत्रों में शिक्षा के स्तर को सुधारने की अपील की। शिक्षा मंत्री ने शिक्षक समाज की भूमिका और उनके योगदान पर प्रकाश डाला।

इस मौके पर राइजिंग राजस्थान समिट 2024 के तहत तीन एमओयू भी साइन किए गए। इससे पहले पुरस्कृत शिक्षक फोरम, राजस्थान के महासचिव रामेश्वर प्रसाद शर्मा ने शिक्षा मंत्री को साफा और स्मृति चिन्ह भेंट किया।

शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने कार्यक्रम की शुरुआत द्वीप प्रज्वलन करके की। उन्होंने विद्यार्थियों के समग्र विकास में शिक्षक की भूमिका को अहम बताया। मंत्री दिलावर ने कहा कि राजकीय विद्यालयों में शिक्षक न केवल ज्ञान का प्रसार कर रहे हैं, बल्कि प्रेरक बनकर जनसहयोग द्वारा शिक्षा के आधारभूत स्तंभ भी बन रहे हैं।

शिक्षा मंत्री ने कहा कि श्रेष्ठ शिक्षकों को अपनी आने वाली पीढ़ी को प्रेरित करने की आवश्यकता है। इसके लिए 40 की उम्र के बाद शिक्षकों को स्वयं आकर प्रदेश की शिक्षा देश की श्रेष्ठ शिक्षा बनाने पर प्रयास करना चाहिए। अपनी श्रेष्ठता का लाभ कमजोर बच्चों एवं अभावग्रस्त विद्यालयों में देकर ऐसा किया जा सकता है। उन्होंने ये भी कहा कि शिक्षा का मतलब है दिशा देने वाला, संस्कार देने वाला, जागृति लाने वाला और ये सभी गुण एक शिक्षक में मौजूद हैं।

शिक्षा मंत्री ने शिक्षकों को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रहकर विद्यार्थियों के जीवन में दिशा, संस्कार और जागरूकता का संचार करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि यह आयोजन न केवल शिक्षकों का सम्मान है, बल्कि शिक्षा की श्रेष्ठता, भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्त्रोत और समग्र विकास की दिशा में एक कदम साबित होगा।

राजकीय विद्यालयों में विकास के लिए 15 लाख रुपए से अधिक राशि भामाशाहों के जरिए लाने वाले प्रेरक शिक्षकों का सेमिनार में सम्मान किया गया। शिक्षा मंत्री श्री दिलावर ने शॉल ओढ़ाकर और समृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया एवं शिक्षकों का हौसला बढ़ाया। सेमिनार में 16 से अधिक शिक्षकों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अंत में शिक्षा मंत्री ने पुरस्कृत शिक्षक फोरम, राजस्थान द्वारा इस तरह के आयोजन पर खुशी जताते हुए सम्मानित लोगों में स्वयं को सम्मानित करने पर आभार जताया।

शिक्षा एवं पंचायतीराज मंत्री मदन दिलावर ने राज्य स्तरीय सेमिनार में जिला एवं राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत राजकीय विद्यालयों के प्रेरक शिक्षकों को सम्मानित किया।

■ **शिक्षा संकुल में पुरस्कृत शिक्षक फोरम, राजस्थान और शिक्षा विभाग के तत्वावधान में भामाशाह सम्मान समारोह आयोजित**

ए.टी.एस. की ई.आर.टी. टीम ने किया दरगाह का निरीक्षण

ख्वाजा साहब का 813 वां सालाना उर्स

अजमेर, (कासं)। सूफी संत ख्वाजा साहब के 813वें सालाना उर्स को सुरक्षा एजेंसियां अलर्ट मोड पर है। बुधवार को राजस्थान एटीएस की ईआरटी (इमरजेंसी रेस्पॉन्स टीम) कमांडो टीम ने ख्वाजा गरीब नवाज की दरगाह सहित परिधि क्षेत्र का दरगाह थाना पुलिस के साथ मौका निरीक्षण किया। मालूम हो कि 28 दिसंबर से ख्वाजा साहब के 813वें उर्स शुरू होने जा रहा है।

दरगाह थाना प्रभारी नरेंद्र जाखड़ ने बताया कि बुधवार सुबह एटीएस की ईआरटी कमांडो टीम दरगाह पहुंचे, टीम के अधिकारियों व कमांडों ने दरगाह के सभी प्रमुख स्थानों दरगाह परिसर, मुख्य गेट, ढाई दिन का झोपड़ा, अंदरकोट सहित परिधि क्षेत्र का सघन निरीक्षण किया। निरीक्षण का मुख्य उद्देश्य दरगाह क्षेत्र में आपातकालीन स्थितियों जैसे भगदड़, आतंकी घुसपैठ या अन्य संभावित खतरों से निपटने के लिए सुरक्षा तैयारियों की जांच करना था। इस दौरान टीम ने मौके पर मौजूद सुरक्षा व्यवस्था का बारीकी से अध्ययन किया और विभिन्न संभावित स्थितियों से निपटने के लिए रणनीति तैयार की।

अजमेर में उर्स की तैयारियों के मद्देनजर ए.टी.एस. की ई.आर.टी. टीम ने दरगाह का निरीक्षण किया।

ईआरटी टीम संवेदनशील स्थानों का करती है निरीक्षण : ईआरटी कमांडो टीम समय-समय पर राज्य के विभिन्न संवेदनशील स्थानों का निरीक्षण करती रहती है ताकि आपातकालीन परिस्थितियों से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए सुरक्षा बल पूरी तरह तैयार रहें। इस निरीक्षण के दौरान टीम ने स्थानीय पुलिस और अन्य सुरक्षा बलों के साथ समन्वय स्थापित किया। ईआरटी टीम ने दरगाह क्षेत्र में सुरक्षा के सभी पहलुओं का अध्ययन किया और वहां मौजूद सुरक्षा उपकरणों की स्थिति की भी जांच की। इसके साथ ही, टीम ने विभिन्न आपातकालीन स्थितियों में तेजी से कार्रवाई करने के लिए स्थानीय पुलिस को प्रशिक्षित करने की योजना भी बनाई। भविष्य में दरगाह क्षेत्र में किसी भी प्रकार की आपात स्थिति से निपटने के लिए एक विस्तृत योजना बनाई जाएगी। उल्लेखनीय है कि ईआरटी टीम इससे पहले भी कई बार दरगाह क्षेत्र का निरीक्षण कर चुकी है और प्रत्येक बार सुरक्षा व्यवस्थाओं में सुधार के लिए सुझाव दिए हैं। दरगाह के निरीक्षण के बाद ईआरटी कमांडो टीम ने बताया कि सभी सुरक्षा बलों के बीच समन्वय और प्रशिक्षण से किसी भी आपातकालीन स्थिति में त्वरित और प्रभावी प्रतिक्रिया सुनिश्चित की जा सकेगी।

दरगाह थाना प्रभारी नरेंद्र जाखड़ ने बताया कि आगामी दिनों में ख्वाजा साहब का उर्स आने वाला है। उर्स को देखते हुए एटीएस अधिकारियों के निर्देश पर ईआरटी टीम और थाने के पुलिस जाप्ते के साथ दरगाह और आसपास के क्षेत्र का निरीक्षण किया गया है।

सिद्धि कुमारी को कोर्ट से कारण बताओ नोटिस जारी

बीकानेर, (कासं)। पूर्व राजघराने की सम्पत्ति खुर्द-बुर्द करने के मामले में अदालत से मौका कमिश्नर को दो बार लालगढ़ के शिव विलास में प्रवेश नहीं देने के बाद अब तीसरी बार आदेश दिए गए हैं। इस बार मौका कमिश्नर अपने साथ पुलिस ले जा सकते हैं। इतना ही नहीं अदालत ने इस मामले में बीकानेर पूर्व की विधायक सिद्धि कुमारी सहित कई जनों को कारण बताओ नोटिस जारी किया है। पूर्व राजघराने की सदस्या राज्यश्री कुमारी और बीकानेर पूर्व की विधायक सिद्धि कुमारी के बीच चल रहे विवाद के अदालत में पहुंचने पर राजमाता सुशीला कुमारी की सम्पत्ति को खुर्दबुर्द होने से रोकने के लिए अदालत ने त्रिलोचन शर्मा को मौका कमिश्नर नियुक्त किया था। पहले शर्मा को लालगढ़ के बाहर ही रोक दिया गया।

> ■ पूर्व राजघराने की सम्पत्ति खुर्द-बुर्द करने के मामले में अदालत से नियुक्त मौका कमिश्नर को दो बार लालगढ़ के शिव विलास में प्रवेश नहीं देने का मामला

दूसरी बार गए तो लालगढ़ में प्रवेश मिला लेकिन अंदर स्थित शिव विलास में कमरे बंद थे। तीन दिसम्बर को न्यायालय में रिपोर्ट पेश करने का आदेश जारी किया था परन्तु न्यायालय आदेश के बावजूद मौका कमिश्नर को शिव विलास, लालगढ़ पैलेस में प्रवेश नहीं करने दिया गया।

बुधवार को मौका कमिश्नर त्रिलोचन शर्मा ने अपनी रिपोर्ट अदालत में पेश करते हुए बताया कि कोर्ट के आदेश के बावजूद उन्हें 30 नवम्बर को शिव विलास, लालगढ़ पैलेस में गार्ड ने यह कहकर प्रवेश नहीं करने दिया कि सिद्धि कुमारी यहां नहीं हैं। उनकी इजाजत के बिना किसी को भी प्रवेश करने नहीं दिया जायेगा। लालगढ़ पैलेस के दरवाजे बंद कर ताला लगा दिया।

ऐसे में राजमाता सुशीला कुमारी की सम्पत्तियों की सूची नहीं बन पाई। विधायक सिद्धि कुमारी के अधिवक्ता ने आवेदन प्रस्तुत कर मौका कमिश्नर की नियुक्ति पर उनकी सहमति को वापस लेने का आग्रह किया। अदालत ने इसे स्वीकार नहीं किया। सिद्धि कुमारी व गार्ड अविनाश व्यास को जानबूझकर न्यायालय के आदेश की पालना ना होने देने के लिए कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है। साथ ही अदालत ने मौका कमिश्नर त्रिलोचन शर्मा को निर्देश दिए हैं कि मंगलवार को ही पुनः शिव विलास, लालगढ़ पैलेस जाकर निरीक्षण करें और रिपोर्ट 6 दिसम्बर को प्रस्तुत करें। साथ ही अदालत ने सिद्धि कुमारी के अधिवक्ता को हिदायत दी कि वे न्यायालय के आदेश की पालना सुनिश्चित करें। यदि अब किसी प्रकार का व्यवधान उत्पन्न किया जाता हैं तो कमिश्नर द्वारा नियमानुसार पुलिस फोर्स की मांग की जा सकेगी। कोर्ट के आदेश पर मौका कमिश्नर मंगलवार को शिव विलास, लालगढ़ पैलेस 2 बजे पहुंचे परन्तु कमरों के ताले नहीं खुले। बताया गया कि कमरों की चाबियां सिद्धि कुमारी के पास हैं।

सड़क दुर्घटना में मां-बेटे की दर्दनाक मौत

बौंली-बामनवास (निस)। क्षेत्र से गुजर रहे दिल्ली -मुंबई एक्सप्रेसवे पर बुधवार को एक सड़क दुर्घटना में कार के डिवाइडर से टकरा जाने पर मां व बेटे की दर्दनाक मौत हो गई।

प्राप्त जानकारी के अनुसार बुधवार को दोपहर दिल्ली- मुंबई एक्सप्रेसवे के पिलर नंबर 252 पर सवाई माधोपुर की ओर से आ रही एक सेल्टास कार का अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकराकर प्लांटेशन जोन में करीब 10 फीट गहरे खड्डे में जा गिरी जिससे कार का अगला हिस्सा पूरी तरह क्षितग्रस्त हो गया। सूचना पाकर एंबुलेंस मौके पर पहुंची एवं दोनों को निकाल कर बौंली चिकित्सालय पहुंचाया चिकित्सालय में पहले मां बीना देवी चतुर्वेदी उम्र 55 वर्ष व उसके बाद पुत्र यश चतुर्वेदी निवासी गुड़गांव हरियाणा को मृत घोषित कर दिया। बौंली पुलिस ने दोनों के शवों को बौंली चिकित्सालय मोर्चरी में रखवाकर परिजनों को सूचित कर दिया है परिजनों के पहुंचने पर पोस्टमार्टम कराया जाएगा।

युवक ने की आत्महत्या

फुलेरा। फुलेरा थाना क्षेत्र के एक 33 वर्षीय एक युवक ने फांसी का फंदा लगाकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। पुलिस द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार थाना क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम खेड़ीराम निवासी सोहन लाल रैगर पुत्र कैलाश चन्द ने 1 नवम्बर को फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली थी। वहीं आगे बताया कि पुलिस ने मृतक के शव को अपने कब्जे में लेकर फुलेरा उपजिला चिकित्सालय में लाकर मोर्चरी में रखवा दिया। इसके बाद शव का पंचायत नामा एवं पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों के सुपुर्द कर दिया।

बिना टिकट 38 हजार से अधिक मामले पकड़े

कोटा, (निसं)। मंडल के वाणिज्य विभाग ने चालू वित्तीय वर्ष में अबतक आठ माह अप्रैल एवं नवम्बर में टिकट जांच के दौरान बिना टिकट, अनुचित टिकट लेकर यात्रा करने वाले एवं बिना बुक गये सामान सहित कुल 2,71,958 मामलों से 16.32 करोड़ रुपये अर्जित किये। जिसमे बिना टिकट के 1,13,420 मामले, अनुचित टिकट के 1,58,276 मामले एवं 262 बिना बुक गये सामान के मामलें शामिल है। जबकि केवल नवम्बर माह में टिकट चैकिंग अभियान के दौरान बिना टिकट के 15,858 मामलें, अनुचित टिकट के 22,542 मामले एवं 8 बिना बुक गये सामान के मामलें पकड़े गए जिससे कोटा मंडल को केवल नवम्बर में 38,408 मामलों से कुल 2.44 करोड़ रूपए का राजस्व प्राप्त हुआ।

बाल विवाह रोकने हेतु प्रशासन सख्त, सरपंच का भी दायित्व तय : पालीवाल

बूंदी (निसं)। जिला प्रशासन, बाल अधिकारिता विभाग, एक्शन एड-यूनिसेफ व बाल कल्याण समिति बूंदी द्वाराबाल विवाह की प्रभावी रोकथाम व बाल संरक्षण विषय पर पंचायत की भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु पंचायती राज प्रतिनिधियों, कार्मिकों एवं ब्लॉक स्तरीय बाल संरक्षण समिति सदस्यों की कार्यशाला का आयोजन केशवरायपाटन पंचायत समिति सभागार में किया गया।

कार्यशाला में बाल संदर्भ केंद्र, हरिश्चंद्र माथुर राजस्थान राज्य लोक प्रशासन जयपुर से पधारे कार्यक्रम अधिकारी राजकुमार पालीवाल ने बताया कि राजस्थान पंचायती राज नियम 1996 के अंतर्गत बाल विवाह के रोकथाम हेतु जनप्रतिनिधियों वार्ड पंच, सरपंच का भी दायित्व निर्धारित किया गया है। बाल विवाह होने की सूचना मिलने पर पंचायत समिति सदस्य जिला परिषद सदस्य के द्वारा दोनों के अभिभावकों, रिश्तेदारों, समुदाय से बातचीत कर बाल विवाह को रोकने की समझाइश की जाएगी।

बाल विवाह प्रतिषेध अधिकारी यह सुनिश्चित करेंगे कि ग्राम सभा या ग्राम पंचायत के किसी भी सदस्य की ओर से बाल विवाह को प्रोत्साहन न दिया जाए। गांवों में इस अधिनियम एवं बाल विवाह के बारे में जागरूकता पैदा करने का कार्य एवं ग्राम सभा की बैठकों में नियमित रूप से इस विषय पर चर्चा की जाये। पंचायती राज प्रतिनिधियों की भूमिका पर चर्चा करते हुए बताया कि हाईकोर्ट ने कहा किराजस्थान पंचायती राज नियम 1996के तहत गांव में बाल विवाह पर रोक लगाना गांव के सरपंच का कर्तव्य है। कोर्ट ने कहा कि बाल विवाह रोकने की जिम्मेदारी सूची में अंकित गांव केसरपंच और पंचायत सदस्यकी होगी। अदालत ने राज्य सरकार को निर्देश दिया इन गांवों के सरपंच और पंच को जागरूक किया जाना चाहिए और सूचित किया जाना चाहिए कि यदि वे बाल विवाह को रोकने में विफल रहते हैं तोबाल विवाह निषेध अधिनियम 2006 की धारा 11 के तहत उन्हें जिम्मेदार ठहराया जाएगा।

प्रधान वीरेंद्र सिंह हाडा ने अपने उद्बबोधन में कहा कि बाल विवाह मुक्त बूंदी बनाने के लिये आवश्यक है कि सर्वप्रथम गांवों को और फ़िर पंचायतों को बाल विवाह मुक्त बनाया जाए जिसके लिये सभी हम सभी जनप्रतिनिधि व कार्मिक मिलजुल कर प्रयास करेंगें। बाल कल्याण समिति अध्यक्ष सीमा पोद्दार ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि बाल अपराधों की रोकथाम में ग्राम पंचायत स्तर पर जनप्रतिनिधियों की प्रभावी भूमिका होती है। माननीय न्यायालय ने अंतरिम उपाय के तौर पर यह निर्देश दिए है कि बाल विवाह को रोकने के लिए जांच के सम्बन्ध में रिपोर्ट ली जाएगी। एक्शन एड-यूनिसेफ़ जिला समन्वयक जहीर आलम ने कार्यशाला के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि बाल विवाह रोकने, बाल श्रम और बाल यौन हिंसा के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने के लिए जनप्रतिनिधियों को तैयार करने तथा बाल संरक्षण और बाल अधिकारों से जुडे काम करने वाली ग्राम स्तर की संस्थाओं के सदस्यों को सशक्त करने के उद्देश्य से इन कार्यशालाओं का पंचायत स्तर पर आयोजन किया जा रहा है।

युवक का शव पेड़ पर लटका मिला

कोटा, (निसं)। कैथूनीपोल थाना इलाके में एक युवक का शव पेड पर लटका मिला। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची।

कैथूनीपोल थाने के एएसआई शरीफ मोहम्मद ने बताया कि इलाके में एक युवक ने पेड पर फांसी का फंदा लगा लिया। सूचना पर मौके पर पहुंचे तो एक 30 वर्षीय युवक ने खुद की शर्ट से पेड पर फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली।

पेड पर लटके युवक को नीचे उतार कर मौके पर शिनाख्त के प्रयास किये गये लेकिन मौके पर शिनाख्त नही होने पर शव को एमबीएस अस्पताल के मोर्चरी में रखवा दिया गया है। शव की शिनाख्त के प्रयास जारी है।

अवैध शराब विक्रेताओं के खिलाफ कार्रवाई

8 जने गिरफ्तार, 453 पब्बे बरामद

गंगापुर सिटी (निस)। जिले के सातों थानों की पुलिस ने अवैध शराब विक्रेताओं के खिलाफ कार्रवाई करते हुए 8 लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों से 453 पव्वे बरामद किए हैं। पुलिस ने तस्करों के खिलाफ आबकारी अधिनियम में मामला दर्ज किया है।

एसपी ममता गुप्ता ने बताया कि थाना कोतवाली, सदर, बामनवास, गढमोरा, वजीरपुर, उदेईमोड, बालघाट ने अवैध शराब के खिलाफ संयुक्त कार्रवाई की। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि कार्रवाई के दौरान पकडे गए लाखनसिंह पुत्र रामजीलाल गुर्जर निवासी रोडकला थाना सदर करौली, राधेश्याम पुत्र लल्लू मीना निवासी गढमोरा थाना गढमोरा, राजेश कुमार गुर्जर पुत्र हंसराज गुर्जर निवासी गढी गोपालपुरा थाना बाटोदा, नीरज पुत्र साहब सिंह निवासी लुहारखेडा थाना बालघाट, कल्ला पुत्र सूरज मीना निवासी जाहिरा,जगमोहन उर्फ गुडडूं पुत्र चैनाराम गुर्जर निवासी बूचोलाई पुलिस थाना सदर गंगापुर सिटी, राकेश बैरवा पुत्र मोहन लाल बैरवा निवासी उदेई कलां थाना सदर गंगापुर सिटी, सुरेश पुत्र प्रभुलाल बैरवा निवासी खेडा रामगढ थाना सदर गंगापुर सिटी को गिरफ्तार किया है।

अवैध बजरी परिवहन व खनन में तीन ट्रेक्टर व एक डम्पर जप्त

टोंक (निस)। जिले में चलाये जा रहे अवैध बजरी, अवैध पत्थर, अवैध हथकड शराब के खनन/परिवहन की रोकथाम हेतु विशेष अभियान के तहत जिला पुलिस अधीक्षक विकास सागवान के निर्देशन में थाना डिग्गी व दूनी, बरोनी, निवाई द्वारा कार्यवाही की गई।

इस कार्यवाही के दौरान वृताधिकारी मालपुरा आशीष प्रजापत व डिग्गी थानाधिकारी ओमप्रकाश चौधध्री ने विशेष टीम गठित कर अवैध बजरी खनन/परिवहन में ग्राम जयसिंहपुरा व नुकक्ड के पास से दो ट्रेक्टर मय ट्रोली को अवैध बजरी से भरी हुई को जप्त किया। जिनके चालक व मालिक के खिलाफ प्रकरण दर्ज किया। इसी प्रकार दूनी थाना पुलिस ने अवैध बजरी परिवहन के खिलाफ कार्यवाही में गश्त के दौरान राजमहल के पास से अवैध बजरी से भरे हुए एक ट्रेक्टर मय ट्रोली को जप्त किया। इसी क्रम में बरोनी थाना प्रभारी मानवेन्द्र के नेतृत्व में उनकी टीम ने दौराने गश्त नाकाबन्दी बरोनी पुलिया के पास से अवैध बजरी परिवहन करते एक डम्पर को जप्त किया तथा चालक जगदीश पुत्र हरिशचन्द्र जाति गुर्जर उम्र 32 साल निवासी सोहेला थाना बरोनी को गिरफ्तार किया। इसी क्रम में बरोनी थाने क्षेत्र में अवैध देशी शराब के परिवहन में कार्यवाही करते हुए थाना पुलिस ने मुखबिर की सूचना व दौराने गश्त ग्राम बरोनी से अवैध देशी शराब के 54 पव्वे जब्त किया तथा परिवहन करते हुए आरोपी बसराम पुत्र उदाराम गुर्जर उम्र 28 साल निवासी मोटूका को गिरफ्तार कर उसके खिलाफ प्रकरण दर्ज कर अनुसंधान जारी है।

पुलिस ने थाना डिग्गी, दूनी व बरोनी में कार्रवाई की ।

फरार आरोपी गिरफ्तार

कोटा, (निसं)। रेल्वे कॉलोनी पुलिस टीम ने धोखाधड़ी एवं अन्य धाराओं में छह साल से फरार चल रहे आरोपी को भरतपुर से गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। शहर एसपी अमृता दुहन ने बताया कि फरार आरोपियों की तलाश के लिए पुलिस उपअधीक्षक गंगा सहाय शर्मा के सुपरविजन व रेल्वे कॉलोनी थानाधिकारी रामस्वरूप मीणा के नेतृत्व में गठित टीम ने छह साल से फरार चल रहे 5 हजार के ईनामी आरोपी मनीष उर्फ गजराज को भरतपुर से गिरफ्तार किया है। आरोपी भरतपुर में पत्नी के नाम से कोचिंग क्लासेस संचालित कर रहा था। रेल्वे कॉलोनी थानाधिकारी ने बताया कि पकड़े गये आरोपी मनीष उर्फ गजराज (35) के खिलाफ रेलवे कॉलोनी थाने में 2018 में ऑनलाईन परीक्षा के दौरान फोन पर प्रश्नों के उत्तर लिखवाने सहित अन्य धाराओं में मामला दर्ज किया गया था। थानाधिकारी ने बताया की गठित टीम ने आरोपी की गिरफ्तारी के लिये उत्तर प्रदेश के कई स्थानों पर दबिश दी थी। मुखबीर से आरोपी के भरतपुर में होने की सूचना मिली। जिस पर पुलिस टीम मौके पर पहुंची और आरोपी मनीष उर्फ गजराज को भरतपुर से राधा नगर थाना सेवर से डिटेन किया।

रुपए देने के बहाने युवक को घर बुलाकर बंधक बनाया

हनुमानगढ़। रुपए देने के बहाने युवक को घर बुलाकर बंधक बनाने, मारपीट करने, मोबाइल फोन, सोने की अंगूठी और नकदी छीनने का मामला सामने आया है। घायल युवक का अस्पताल में इलाज चल रहा है। इस संबंध में संगरिया पुलिस थाना में दो व्यक्तियों के खिलाफ नामजद मुकदमा दर्ज करवाया गया है।

पुलिस के अनुसार विजय पाल (35) पुत्र धर्मपाल जाट निवासी भाखरांवाली ने लिखित रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि करीब छह माह पहले उसके भाई अजय ने राकेश बिस्सु निवासी नुकेरां, ढ ाणी चक दो पीटीपी को अपनी जिम्मेवारी पर मेडिकल से दवाई दिलवाई थी। मेडिकल वालों को पैसे जमा नहीं करवाने पर, उसके भाई अजय ने कई बार राकेश बिस्सु को कहा। पहले तो वह आज-कल करने लगा, फिर पैसों की बात को लेकर उसके भाई अजय से राकेश बिस्सु रंजिश रखने लगा। सोमवार की शाम करीब छह बजे उसके भाई अजय के पास कॉल आई कि आप अपने मेडिकल के पैसे ले जाना। तब उसके भाई अजय ने कहा कि वह रास्ते में है। समय मिलते ही वह आपके पास आ जाएगा।

फिर उसका भाई अजय रात्रि करीब 8 बजे नुकेरां, ढ ाणी चक दो पीटीपी में गया। वहां पर वेदप्रकाश पुत्र अनन्तराम उर्फ बीरबल, दुष्यन्त पुत्र राकेश उसके भाई अजय को कमरे में ले गए और बंधक बनाकर जान से मारने के उद्देश्य से जान लेवा हमला कर दिया। हमले की वजह से उसके भाई अजय के सिर में गम्भीर चोटें आई और खून बहने लगा। इन लोगों ने उसके भाई अजय का मोबाइल फोन, सोने की अंगूठी व पांच हजार रुपए छीन लिए। खून ज्यादा बहने के कारण अजय बेहोश होकर गिर गया। मरणासन्न हालत में देखकर वेदप्रकाश व दुष्यन्त घबरा गए और एम्बुलेंस को सूचना दी। एम्बुलेंस से उसके भाई अजय को संगरिया के गवर्नमेंट अस्पताल में पहुंचाया। अब उसका भाई हॉस्पिटल में भर्ती है।

चिकित्सालय के एक्सरे रूम में मिला विस्फोटक से भरा बैग

उदयपुर, (कासं)। पाली से गांव लौटने के दौरान एक बाईक स्लीप हो गई, जिससे एक की मौत हो गई और दो को एमबी चिकित्सालय में भर्ती करवाया गया, जिसमें से एक के पास विस्फोटक से भरा बैग था, जो उसने एक्सरे रूम में रख कर भूल गया, जिसे पुलिस ने जब्त किया।

> ■ ट्रोमा इमरजेंसी एक्स रे रूम मे एक लाल रंग का बैग मिला

पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार 2 दिसम्बर को एएसआई निर्भय शंकर, चालक निहारीका के साथ रात्रि कालीन गश्त कर रहा था। इस दौरान कांस्टेबल मुकेश ने बताया की हॉस्पीटल स्टाफ ने बताया की ट्रोमा इमरजेंसी एक्स रे रूम मे एक लाल रंग का बैग मिला जिसमे गुल्ले जैसी कोई संदिग्ध वस्तु हैं, जिस पर जाब्ता मौके पर गया तो वहां पर एक लाल रंग का बैग मिला जिसमे गुल्ले जैसी वस्तु थी। धौलपुर की एक फैक्ट्री में बने पाँच गुल्ले व पांच टोपी मिली। इस पर इस बैग को जब्त किया गया। इस दौरान जांच की तो पता चला कि जगदीश पुत्र नाथु लाल निवासी खोडी महुडी परसाद जो एक्स रे कराने के लिए आया था, जो अस्थिरोग विभाग की तृतीय मंजिल पर आईसीयू में भर्ती हैं। जिस पर पुलिस टीम ने आईसीयू में जाकर जगदीश से मिले लाल रंग के बैग के बारे में पूछा गया तो उसने बताया की मै तथा प्रदीप पुत्र लक्ष्मण मीणा निवासी बारा परसाद दोनों साईनाथ माईन्स नाडोल पाली में काम करते है तथा रणजीत पुत्र खातु मीणा निवासी बारां परसाद जो दुसरी माइंस में काम करता है।

हम तीनों 1 दिसम्बर को अपने घर जाने से लिए बाईक से निकले। बाईक रणजीत चला रहा था बीच में प्रदीप तथा पीछे मैं बैठा था। रणजीत का बैग मेरे पास था। 3 बजे देलवाडा रोड पर बाईक का बेलेंस बिगड जाने से हमारा एक्सीडेन्ट हो गया, जिससे रणजीत की मृत्यु हो गई। उसकी बॉडी को देलवाडा हॉस्पीटल में रखी। मुझे व प्रदीप को उदयपुर ईलाज के लिए भेज दिया जहां एमबी चिकित्सालय में अस्थिरोग विभाग में आईसीयू में भर्ती किया। एक्स-रे करने के लिये बताया तो मै इमरजेन्सी एक्स.रे रूम मे एक्स.रे कराने के लिये गया। मेरे पास रणजीत का जो बैग था वह मेरे पास होने से एक्स.रे करने के समय नीचे रखा था जो मै वही पर भूल गया था। बैग रणजीत का था उस बैग मे क्या था मुझे इसकी कोई जानकारी नही हैं। रणजीत ही बता सकता है कि बैग में क्या था। हाथीपोल पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

झुंझुनूं के रीको इलाके में हिट-एंड-रन का मामला

घर के बाहर खडे लोगों को कार ने मारी टक्कर , परिवार के पांच जने घायल हुए

झुंझुनूं, (निसं)। शहर के रीको इलाके की जोधपुरिया बस्ती के पास तेज रफ्तार से जा रही कार ने सडक किनारे खडे एक परिवार को टक्कर मार दी। हादसे में परिवार के पांच जने घायल हो गए। घायलों को राजकीय बीडीके अस्पताल में भर्ती करवाया गया। जहां उनका इलाज चल रहा है।

टक्कर मारने के बाद कार चालक कार को लेकर भाग गया। घटना सडक किनारे लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई। जानकारी के अनुसार रीको स्थित जोधपुरिया बस्ती में रहने वाले धारूराम का परिवार खाना खाकर घर के पास बैठा था। उसी वक्त एक तेज रफ्तार कार ने टक्कर मार दी। घटना सोमवार की रात के करीब नौ बजे की है। अब हादसे का सीसीटीवी फुटेज सामने आया है। घायल धारूराम के भाई ने कोतवाली थाने में कार चालक के खिलाफ लापरवाही से गाडी चलाकर टक्कर मारने का मामला दर्ज करवाया है। रिपोर्ट में बताया कि 2 दिसंबर की रात को उसका भाई धारूराम, भाभी सीता और भतीजी अंजली और ज्योति कच्ची बस्ती के पास रोड से 7-8 फीट दूरी पर घर के पास बैठे थे।

घायलों को राजकीय बीडीके अस्पताल में भर्ती करवाया गया, जहां उनका इलाज चल रहा है

> ■ घटना सडक किनारे लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हुई
>
> ■ कार चालक के खिलाफ मामला दर्ज करवाया

अचानक तेज रफ्तार कार आई और उन्हें टक्कर मार दी। उसके बाद चालक कार को लेकर फरार हो गया। मौके पर चीख पुकार मच गई। घायलों को तुरंत प्रभाव से झुंझुनूं के राजकीय बीडीके अस्पताल पहुंचाया गया। फिलहाल घायलों का बीडीके अस्पताल में इलाज चल रहा है।

मुझे यह बताते हुए बेहद खुशी हो रही है कि मेरी बेटी सारा एसटीएफ में डायरेक्टर के रूप में शामिल हो गई हैं। उन्होंने यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन से क्लिनिकल एंड पब्लिक हेल्थ न्यूट्रिशन में मास्टर डिग्री हासिल की है। -सचिन तेंदुलकर

पूर्व भारतीय क्रिकेटर, अपनी बेटी सारा के तेंदुलकर फाउंडेशन की नई डायरेक्टर बनने पर।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

वैभव सूर्यवंशी

ओपनर वैभव सूर्यवंशी और आयुष म्हात्रे ने अर्धशतक लगाए। वैभव ने 46 बॉल पर 76 और आयुष ने 51 बॉल पर 67 रन बनाए। वैभव ने अपनी पारी में 6 छक्के और 3 चौके लगाए। वैभव को पिछले ऑक्शन में राजस्थान रॉयल्स ने 1.1 करोड़ रुपए में खरीदा था। वैभव ने छक्का लगाकर भारत को मैच जिताया 13 साल के वैभव सूर्यवंशी पहले दो मैच में फ्लॉप रहे थे। इस मैच में उन्होंने अपनी पहली ही बॉल पर सिक्स लगाया। वैभव ने 32 गेंदों पर अर्धशतक पूरा किया। उन्होंने 46 बॉल पर नाबाद 76 रन बनाए। पारी में 6 छक्के और 3 चौके भी लगाए।

क्या आप जानते हैं ?... टेस्ट क्रिकेट इतिहास का पहला टेस्ट इंग्लैंड व ऑस्ट्रेलिया के मध्य 1877 में मेलबोर्न में खेला गया था। इसे ऑस्ट्रेलिया ने 45 रन से जीता था।

आईसीसी रैंकिंग में जायसवाल और कोहली को बड़ा नुकसान, बुमराह की बादशाहत कायम

एडिलेड, 4 दिसंबर। आईसीसी ने ताजा टेस्ट रैंकिंग जारी कर दी है। इस रैंकिंग में भारतीय टीम के युवा बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल और विराट कोहली को नुकसान हुआ है। जबकि जसप्रीत बुमराह की बादशाहत कायम है। दरअसल, पिछले हफ्ते के अपडेट में दक्षिण अफ्रीका और श्रीलंका के बीच खेले गए पहले टेस्ट के अलावा न्यूजीलैंड और इंग्लैंड के बीच खेले गए पहले टेस्ट को भी शामिल किया गया है।

वहीं टेस्ट रैंकिंग की बात करें तो, इंग्लैंड के जो रूट पहले स्थान पर बने हुए हैं जबकि इंग्लैंड के ही हैरी ब्रूक दो स्थान के फायदे से दूसरे स्थान पर पहुंच गए हैं। न्यूजीलैंड के केन विलियमसन तीसरे स्थान पर हैं तो भारत के यशस्वी जायसवाल दो स्थान के नुकसान के साथ चौथे नंबर पर खिसक गए हैं। श्रीलंका के कमिंडू मेंडिस दो स्थान के फायदे से अब सातवें नंबर पर हैं तो साउथ अफ्रीका के टेम्बा बावुमा 14 स्थान के जबरदस्त फायदे से सीधे 10वें नंबर पर पहुंच गए हैं। इसके अलावा भारतीय सलामी बल्लेबाज विराट कोहली टॉप 10 से बाहर हो गए हैं, उन्हें एक स्थान का नुकसान हुआ और वह अब 14वें स्थान पर हैं। श्रीलंका के धनंजय डी सिल्वा एक स्थान के फायदे से 15वें तो दिनेश चंडीमल दो स्थान के फायदे से 17वें पर पहुंच गए हैं। इंग्लैंड के ओली पोप आठ स्थान के फायदे से 32वें नंबर पर तो बेन स्टोक्स सात स्थान के फायदे से 34वें स्थान पर पहुंच गए हैं।

हालांकि, टेस्ट गेंदबाजी रैंकिंग में भारतीय गेंदबाज जसप्रीत बुमराह पहले और दक्षिण अफ्रीका के कगिसो रबाडा उनके बाद दूसरे स्थान पर कायम हैं। श्रीलंका के प्रभात जयसूर्या तीन स्थान के नुकसान से आठवें स्थान पर पहुंच गए हैं। वहीं डरबन टेस्ट में 11 विकेट अपने नाम करने वाले दक्षिण अफ्रीका के मार्को यानसेन 19 स्थान के जबरदस्त फायदे से सीधे 9वें स्थान पर पहुंच गए हैं।

टीम इंडिया का अभ्यास सेशन स्टेडियम में नहीं देख पाएंगे फैंस

एडिलेड में 5000 से ज्यादा दर्शक पहुंचे

एडिलेड, 4 दिसंबर। 6 दिसंबर यानी शुक्रवार से बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी का दूसरा टेस्ट खेला जाएगा। पिंक बॉल टेस्ट मैच से पहले एडिलेड ओवल में टीम इंडिया के अभ्यास को देखने के लिए मंगलवार को 5000 से ज्यादा दर्शक पहुंच गए थे। इसके एक दिन बाद ये भारतीय टीम प्रबंधन ने इस तरह के ओपन ट्रेनिंग सेशन को रोकने का अनुरोध किया है। भारतीय प्रबंधन ने क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया से अनुरोध किया है कि वे दौरे में आगे अपने ट्रेनिंग सेशन के दौरान दर्शकों को अनुमति न दें। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया के प्रवक्ता ने द एज से कहा कि, भारत ने अपने शेष ट्रेनिंग सेशन को जनता के लिए खुला न रखने की प्राथमिकता व्यक्त की है। जिससे संभावित शोर या व्यवधान को कम किया जा सके। भारतीय टीम ने पहले टेस्ट से पहले पर्थ के ऑप्टस स्टेडियम में ट्रेनिंग से पहले कुछ दिनों के लिए पर्दे के वाका में अपने अभ्यास सत्र आयोजित किए थे। भारतीय टीम कैनबरा में पीएम इलेवन मैच के बाद एडिलेड पहुंची थी। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने पहले ब्रिस्बेन और सिडनी में टेस्ट मैचों के लिए मंगलवार की तरह ही खुले सेशन के बारे में जानकारी दी थी। इस घटना क्रम के बाद इन योजनाओं पर पानी फिरता दिखा रहा है। मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड में ट्रेनिंग सेशन यारा पार्क में मैदान के बाहर सार्वजनिक स्थान पर आउटडोर नेट्स पर आयोजित किए जाते हैं।

भारत पाकिस्तान से ज्यादा बेताब, शोएब अख्तर ने फिर उगला जहर

नई दिल्ली, 4 दिसंबर। पाकिस्तान के पूर्व तेज गेंदबाज शोएब अख्तर अक्सर अपने बयानों के कारण सुर्खियों में रहते हैं। वह कई बार ऐसे बयान दे जाते हैं जिनको समझ पानाआसान नहीं होता है। अभी हाल में उन्होंने कहा था कि चैंपियंस ट्रॉफी का हाइब्रिड मॉडल पहले से तय था। साथ ही उन्होंने कहा था कि आने वाले समय में अगर किसी टूर्नामेंट में हिस्सा लेने के लिए पाकिस्तान को भारत जाना पड़ता है तो जाना चाहिए और भारत को वहीं मार कर आना चाहिए। वहीं अब शोएब अख्तर ने एक और बात कही है। पाकिस्तान के पूर्व गेंदबाज ने हा कि पाकिस्तान में खेलने के लिए भारत जो है पाकिस्तान से ज्यादा मर रहा है, मैं आपको बता रहा हूं। विराट कोहली हो सकता है पाकिस्तान में खेलने के लिए मरा जा रहा हो। बीसीसीआई... मैं वहां काम करता हूं ना, इंडिया में... मैं आपको सच बता रहा हूं। अगर इंडिया पाकिस्तान में लैंड कर जाता है तो उनके टीवी राइट्स आसमान छुएंगे, स्पॉन्सरशिप भी कहां से कहां पहुंच जाएगी। वो नहीं आ रहे हैं तभी स्पॉन्सरशिप नहीं आ रही है। मोहम्मद हफीज ने पूछा कि भारत के नाम आने की कोई वजह है? इस पर शोएब अख्तर ने कहा कि हुकूमत नहीं चाहती। बता दें कि, चैंपियंस ट्रॉफी 2025 की मेजबानी पाकिस्तान को करनी है। हालांकि, बीसीसीआई ने साफ कर दिया है कि टीम इंडिया पाकिस्तान में मैच नहीं खेलेगी। ऐसे में चैंपियंस ट्रॉफी को हाइब्रिड मॉडल में कराए जाने की मांग हुई। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड पहले इस बात पर अड़ा हुआ था कि चैंपियंस ट्रॉफी हाइब्रिड मॉडल में नहीं होगी, हालांकि बाद में पीसीबी ने हमेशा की तरह पलटी मारते हुए हाइब्रिड के लिए हामी भर दी है।

जय शाह के आईसीसी प्रमुख बनने के बाद भी बीसीसीआई के अगले सचिव पर कुछ भी स्पष्ट नहीं

नई दिल्ली, 4 दिसंबर। जय शाह के एक दिसंबर को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) के सबसे युवा अध्यक्ष के रूप में कार्यभार संभालने के साथ भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) में सचिव का पद खाली हो गया और बोर्ड से जुड़े राज्य संघों के अलावा अधिकारियों को भी अब तक यह पता नहीं है कि उनकी जगह कौन लेगा। विश्व के सबसे ताकतवर क्रिकेट बोर्ड में 2022 में हुए संवैधानिक संशोधन के बाद से इसके सचिव सबसे प्रभावशाली पदाधिकारी हैं। बीसीसीआई सचिव के पास 'क्रिकेट और गैर-क्रिकेट मामलों से संबंधित सभी शक्तियां' हैं और सीईओ (मुख्य कार्यकारी अधिकारी) उसकी देखरेख में काम करता है। शाह को अगस्त में आईसीसी के शीर्ष पद के लिए निर्विरोध चुना गया था और तब से बीसीसीआई के हितधारक बोर्ड में होने वाले बदलाव के बारे में सोच रहे हैं। बीसीसीआई में शाह की जगह लेने की दौड़ में गुजरात के अनिल पटेल और बोर्ड के मौजूदा संयुक्त सचिव देवजीत सैकिया का नाम आगे है।डीडीसीए अध्यक्ष रोहन जेटली का नाम भी सामने आया, लेकिन यह सिर्फ अटकलें ही रहीं। बीसीसीआई के एक प्रशासक ने कहा, "हमें नहीं पता कि क्या हो रहा है। हर कोई (बीसीसीआई के अधिकारी और राज्य इकाइयां) इस मामले पर चुप हैं। सबसे अधिक संभावना है कि संयुक्त सचिव (सैकिया) फिलहाल अंतरिम होंगे।"

सुदेवा ने नेशनल यूनाइटेड सपोर्टिंग क्लब को हराया

नई दिल्ली, 4 दिसंबर। डीएसए प्रीमियर लीग में बुधवार को सुदेवा दिल्ली एफसी ने नेशनल यूनाइटेड सपोर्टिंग क्लब को 5 -0 से हरा कर पूरे अंक अर्जित किए। आज यहां अम्बेडकर स्टेडियम पर खेले गए एकतरफा मुकाबले में सुदेवा की जीत का हीरो बदलू खिलाड़ी तुषार कुमार सिंह ने दो बेहतरीन गोल जमाए। वहीं जाजो प्रशांत और एम लुवांग ने एक एक गोल का योगदान दिया। अमित ने आत्मघाती गोल कर नेशनल यूनाइटेड की हार को बड़ा किया।

हालांकि सुदेवा ने शुरू से दबदबा बनाने का प्रयास किया लेकिन अग्रिम पंक्ति के खिलाड़ियों ने आसान मौकों पर लक्ष्यविहीन निशाने लगाए। नतीजन खाता खोलने में देर हुई। 20वें मिनट में जाजो ने कठिन कोण से गोल दाग कर वाह वाह लूटी। दूसरे हाफ में नेशनल यूनाइटेड की रक्षापंक्ति ने बार बार चूक दिखाई और सुदेवा की जीत का आकार बड़ा जो गया। इस जीत के साथ सुदेवा के नौ मैचों में 16 और नेशनल के नौ अंक हैं।

एशिया कप-13 साल के वैभव ने 6 छक्के लगाए, 1.1 करोड़ में बिके थे

शारजाह, 4 दिसंबर। भारत ने अंडर-19 एशिया कप में यूईए को 10 विकेट से हरा दिया। इसी के साथ भारतीय टीम सेमीफाइनल में पहुंच गई है। शारजाह के मैदान पर ने टॉस जीतकर बैटिंग करने का फैसला लिया। टीम 44 ओवर में 137 रन ही बना सकी। भारत की ओर से युद्धजीत गुहा ने 3 विकेट लिए।

जवाब में भारत ने बिना विकेट खोए 16.1 ओवर में 143 रन बनाकर लक्ष्य हासिल कर लिया। ओपनर वैभव सूर्यवंशी और आयुष म्हात्रे ने अर्धशतक लगाए। वैभव ने 46 बॉल पर 76 और आयुष ने 51 बॉल पर 67 रन बनाए। वैभव ने अपनी पारी में 6 छक्के और 3 चौके लगाए। वैभव को पिछले ऑक्शन में राजस्थान रॉयल्स ने 1.1 करोड़ रुपए में खरीदा था। वैभव ने छक्का लगाकर भारत को मैच जिताया 13 साल के वैभव सूर्यवंशी पहले दो मैच में फ्लॉप रहे थे। इस मैच में उन्होंने अपनी पहली ही बॉल पर सिक्स लगाया। वैभव ने 32 गेंदों पर अर्धशतक पूरा किया। उन्होंने 46 बॉल पर नाबाद 76 रन बनाए। पारी में 6 छक्के और 3 चौके भी लगाए। उन्होंने ओपनर आयुष म्हात्रे के साथ मिलकर 97 बॉल में 143 रन जोड़े। वैभव ने छक्का लगाकर भारत को मैच जिताया। आयुष ने 38 गेंदों पर फिफ्टी पूरी की आयुष म्हात्रे ने अपनी 67 रन की पारी में 4 चौके और 4 छक्के लगाए। उन्होंने 38 गेंदों पर अपनी फिफ्टी पूरी की। आयुष ने 51 बॉल का सामना किया और 131.37 के स्ट्राइक रेट से रन बनाए।

44 ओवर में ऑलआउट हुई की टीम की पूरी टीम 137 रन पर सिमट गई। मेजबान टीम 44 ओवर ही खेल पाई। की ओर से मुहम्मद रेयान ने सबसे ज्यादा 35 रन की पारी खेली जबकि ओपनर अक्षत राय 26 रन बनाकर आउट हुए। भारतीय टीम की ओर से युद्धजीत गुहा ने 3 विकेट झटके, जबकि चेतन शर्मा और हार्दिक राज ने 2-2 विकेट लिए। केपी कार्तिकेय और आयुष म्हात्रे को एक-एक विकेट मिला।

द. अफ्रीका ने पाक के खिलाफ टी-20 सीरीज के लिए क्लासेन को बनाया कप्तान

डरबन, 4 दिसंबर। दक्षिण अफ्रीका ने 10 दिसंबर से शुरू होने वाली पाकिस्तान के खिलाफ तीन टी-20 मैचों की सीरीज के लिए हेनरिक क्लासेन की अगुवाई वाली 15 सदस्यीय टीम की घोषणा कर दी है। चयनकर्ताओं ने नियमित कप्तान एडेन मारक्रम जो कि वर्तमान में श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट सीरीज में व्यस्त हैं को तीसरे टेस्ट और टी-20 सीरीज के लिए आराम दिया गया है। इसके अलावा मौजूदा टेस्ट सीरीज में खेल रहे मार्को जेनसन, केशव महाराज, कैगिसो रबाडा और ट्रिस्टन स्टब्स भी टी-20 सीरीज से बाहर रहेंगे। पाकिस्तान के साथ होने वाली टी-20 सीरीज के लिए दक्षिण टीम इस प्रकार है:- हेनरिक क्लासेन (कप्तान), ओटनील बार्टमैन, मैथ्यू ब्रीट्जके, डोनोवन फेरेरा, रीजा हेंड्रिक्स, पैट्रिक क्रूगर, जॉर्ज लिंडे, क्वेना मफाका, डेविड मिलर, एनरिक नॉर्टजे, एन पीटर, रयान रिकेल्टन, तबरेज शम्सी, एंडिले सिमेलाने और रासी वैन डेर डूसन। दक्षिण अफ्रीका का पाकिस्तान के साथ पहला टी-20 मैच 10 दिसंबर को डरबन में खेला जायेगा। वहीं दूसरा टी-20 मुकाबला 13 दिसंबर को सेंचुरियन में होगा। जोहान्सबर्ग में 14 दिसंबर को तीसरा टी-20 मैच खेला जायेगा।

कोच रमाकांत आचरेकर स्मृति समारोह में सचिन-कांबली मिले

तेंदुलकर का हाथ थामकर कांबली भावुक हुए, सचिन के साथ क्रिकेट में किया था डेब्यू

मुंबई, 4 दिसंबर। कोच रमाकांत आचरेकर की स्मृति समारोह में सचिन तेंदुलकर अपने दोस्त विनोद कांबली से मिलते नजर आए। सोशल मीडिया पर यह वीडियो वायरल हो रहा है। वीडियो में सचिन खुद से जाकर कांबली से हाथ मिलाते नजर आ रहे हैं। वहीं, दूसरी ओर एक बार में कांबली यह समझ नहीं पाते हैं कि आखिर किसने अचानक से उनसे हाथ मिलाया है। इसके बाद कांबली, सचिन का हाथ नहीं छोड़ते हैं।

समारोह में कांबली, सचिन का हाथ कस कर थाम लेते हैं। फिर एंकर आता है और कांबली को हाथ छोड़ने को लेकर समझाता है। आखिर में फिर सचिन उनसे दूर हो जाते हैं। यहां कांबली के चेहरे पर निराशा नजर आती है।

कांबली का 4 महीने पहले एक वीडियो सामने आया था, जिसमें वे चल नहीं पा रहे थे। वीडियो में कांबली एक बाइक के पास खड़े रहते हैं। फिर कुछ देर में लड़खड़ाने लगते हैं। एक व्यक्ति आगे बढ़कर सहारा देता है। 52 वर्षीय कांबली हार्ट संबंधी समस्याओं के अलावा डिप्रेशन से जूझ रहे हैं। वे दवाएं ले रहे हैं। उन्हें रेगुलर हॉस्पिटल जाना पड़ रहा है। कांबली को साल 2013 में दिल का दौरा भी पड़ चुका है। कांबली ने भारत के लिए 17 टेस्ट और 104 वनडे मैच खेले हैं।

मेजबान जयपुर के हिमांशु और नवीन कुमार युगल के सेमीफाइनल में

अखिल भारतीय एसबीआई इंटर सर्किल बैडमिंटन टूर्नामेंट

जयपुर, 4 दिसम्बर। मेजबान जयपुर सर्किल के हिमांशु हुकुम व नवीन कुमार सैनी की जोड़ी ने यहां सवाई मानसिंह स्टेडियम में चल रही अखिल भारतीय एस.बी.आई. इंटर सर्किल बैडमिंटन चैम्पियनशिप के युगल के सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया।

हिमांशु हुकुम व नवीन कुमार सैनी की जोड़ी ने संघर्षपूर्ण मुकाबले में अमरावती सर्किल के एच. केदारनाथ व एस.के. सुभानी को पराजित किया। हिमांशु और नवीन कुमार ने क्वार्टरफाइनल मुकाबला 21-18, 22-24, 21-10 से जीता। पुरूष एकल के सेमीफाइनल में चंडीगढ़ सर्किल के अभिषेक ने कोलकाता सर्किल योगेश को 21-18, 21-11 से हराकर फाइनल में प्रवेश कर लिया। महिला एकल का फाइनल चंडीगढ़ की दीक्षा सालगोत्रा और भोपाल सर्किल की मनीषा शर्मा के बीच खेला जायेगा। बुधवार को खेले गये सेमीफाइनल मुकाबले में दीक्षा सालगोत्रा ने चेन्नई सर्किल की सरान्या को सीधे गेमों में 21-16, 21-18 से परास्त किया।

दूसरे सेमीफाइनल में भोपाल सर्किल की मनीषा शर्मा ने बेंगलूरू सर्किल रश्मि परवीन को 21-13, 21-13 से शिकस्त दी। सर्किल वेलफेयर कमेटी के सचिव विनोद तंवर ने बताया कि फाइनल मुकाबले गुरूवार की सुबह 9 बजे से खेले जायेंगे। दोपहर 3 बजे होने वाले समापन समारोह के मुख्य अतिथि उपप्रबंध निदेशक सुरेन्द्र राना होंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्य महाप्रबंधक जयपुर सर्किल के संदीप भटनागर करेंगे। राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद के अध्यक्ष और खेल सचिव नीरज के पवन विशिष्ट अतिथि होंगे।

वर्ल्ड चेस चैम्पियनशिप-गुकेश और रिलेन ने लगातार चौथा ड्रॉ खेला

सिंगापुर, 4 दिसंबर। वर्ल्ड चेस चैंपियनशिप के फाइनल में भारतीय ग्रैंडमास्टर डी गुकेश और चीन के डिंग लिरेन के बीच कांटे की टक्कर जारी है। दोनों ने मंगलवार को ड्रॉ मैच खेला। फाइनल में लगातार चौथा गेम ड्रा रहा है। दोनों खिलाड़ियों के बीच दूसरी, चौथी, पांचवीं और छठी बाजी भी ड्रॉ रही। चीन के 32 साल के लिरेन ने पहला गेम जीता था जबकि 18 साल के गुकेश ने तीसरा गेम अपने नाम किया था।

7वें गेम के दौरान सफेद मोहरों से खेल रहे गुकेश मजबूत स्थिति में थे, लेकिन चाइनीज स्टार ने शानदार बचाव करते हुए उन्हें ड्रॉ खेलने पर विवश किया। 72 चालों के बाद गुकेश एक प्यादे की बढ़त पर थे। इस ड्रॉ गेम के बाद दोनों खिलाड़ियों के पास एक समान 3.5-3.5 अंक हैं। 14 गेम के मुकाबले में पहले 7.5 अंक हासिल करने वाला खिलाड़ी मुकाबले को जीत लेगा और वर्ल्ड चैंपियन कहलाएगा।

स्टेडियम में विकसित खेल सुविधाओं का खिलाड़ियों को मिले फायदा : राठौड़

जयपुर, 4 दिसंबर। खेल मंत्री, कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने बुधवार को सवाई मानसिंह स्टेडियम में का औचक निरीक्षण कर परिसर में अवस्थित खेल सुविधाओं का जायजा लेते हुए उनका अधिकाधिक खिलाड़ियों को फायदा मिले इसके लिए आवश्यक कदम उठाने के निर्देश प्रदान किए गए। स्टेडियम के दौरे पर आये खेल मंत्री राज्यवर्धन राठौड़ ने परिसर में स्थित कैंटेफेरिया में मौजूद खिलाड़ियों से बात करते हुए वहां मिलने वाली सुविधा की जानकारी लेकर संचालक द्वारा दी जा सुविधाओं का भी जायजा लेते हुए कहा कि खिलाड़ियों को उच्च गुणवत्ता वाले खाद्य पदार्थ उपलब्ध करवाए जाए। इस दौरान स्विमर्स ने चौगान स्टेडियम स्थित ऑल वेदर पूल को ट्रेनिंग के लिये उपलब्ध करवाने का निवेदन किया। इसके लिये उन्होंने सचिव, राज्य क्रीड़ा परिषद को वैकल्पिक व्यवस्था करने के निर्देश दिये। राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद के सचिव राजेन्द्र सिंह सिसोदिया ने बताया कि गुरूवार को स्वच्छता अभियान के तहत होमगार्ड के जवानों के द्वारा श्रमदान के माध्यम से स्टेडियम परिसर की साफ - सफाई अभियान को अंजाम दिया जाएगा। इस मौके पर जनसम्पर्क अधिकारी तेजराज सिंह, सदस्य सचिव-राज्य युवा बोर्ड कैलाश चंद पहाड़िया, पुन:नियुक्त खेल अधिकारी करण सिंह, स्टेडियम सुपरवाइजर अतुल कुमार शर्मा आदि मौजूद थे।

51वीं राज्य स्तरीय शर्मा-माथुर क्रिकेट प्रतियोगिता

राहुल शर्मा के ऑल राउंड प्रदर्शन से नीलकमल की आसान जीत

जयपुर, 4 दिसम्बर। बनीपार्क क्रिकेट क्लब द्वारा आयोजित 51वीं राज्य स्तरीय शर्मा-माथुर क्रिकेट प्रतियोगिता के अन्तर्गत आज जी. आर. क्रिकेट एकेडमी ग्राउण्ड सिरसी में खेले गये मुकाबले में नीलकमल क्रिकेट क्लब ने भवानी सुथार 71 रन (55 गेंद, 6 चौके, 4 छक्के) की शानदार पारी तथा राहुल शर्मा 49 रन व 15 रन पर 2 विकेट के ऑल राउण्ड प्रदर्शन की बदौलत सबा क्रिकेट क्लब को 118 रन से हराकर अगले राउण्ड में प्रवेश किया।

टॉस जीतकर नीलकमल क्रिकेट क्लब ने पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया। साकेत शर्मा 42 रन, भवानी सुथार 71 रन, राहुल शर्मा 49 रन,कुणाल 27 रन, जसवंत चौहान 26 रन, रवि शर्मा 18 रन एवं जितेन्द्र यादव 18 रन, शिवांग सिंह शेखावत 17 रन की मदद से ऑल आउट होने से पूर्व 300 रन बना लिये, गेंदबाजी में सबा क्रिकेट क्लब की ओर से वसंत चौधरी 38 रन पर 3 विकेट, आयुष आमेरिया 54 रन पर 2 विकेट, नावेद खान 60 रन पर 2 विकेट, नीतिराज सिंह 50 रन पर 2 विकेट लेकर सफल गेंदबाज रहें।

जवाबी पारी में सबा क्रिकेट क्लब ने नीतिराज सिंह 42 रन, रामदीप 28 रन, नावेद खान 24 रन, आयुष आमेरिया 23 रन, दिव्यांश तंवर 16 रन, की पारियां विजयलक्ष्य प्राप्त करने के लिए पर्याप्त साबित नहीं हुऐ और पूरी टीम नीलकमल क्रिकेट क्लब के गेंदबाजों भरत 61 रन पर 3 विकेट, राहुल शर्मा 15 रन पर 2 विकेट, शिवांग सिंह शेखावत 22 रन पर 2 विकेट तथा जितेन्द्र यादव 37 रन पर 1 विकेट के समक्ष नहीं टिक सके और पूरी टीम 31.5 ओवर में 182 रन पर सिमट गई और 118 रन के विशाल अन्तर से नीलकमल क्रिकेट क्लब ने जीत हासिल की। इस मैच का मैन ऑफ द मैच राहुल शर्मा 49 रन व 15 रन पर 2 विकेट नीलकमल क्रिकेट क्लब रहे।

भारत और पाकिस्तान ने अंडर-19 एशिया कप का सेमीफाइनल में किया प्रवेश

शारजाह, 4 नवंबर। भारत और पाकिस्तान ने बुधवार को अपने-अपने ग्रुप मुकाबलों में शानदार जीत दर्ज करते हुए अंडर-19 एशिया कप के सेमीफाइनल में जगह बना ली है। इससे पहले युद्धजीत गुहा (तीन विकेट), चेतन शर्मा और हार्दिक राज(दो-दो विकेट) की घातक गेंदबाजी के बाद वैभव सूर्यवंशी (नाबाद (76) और आयुष म्हात्रे (67) की आतिशी बल्लेबाजी के दम पर भारत ने बुधवार को अंडर-19 एशिया कप के 12वें मुकाबले में संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) 10 विकेट से शिकस्त देकर सेमीफाइनल में जगह बनाई। 138 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी वैभव सूर्यवंशी और आयुष म्हात्रे की भारतीय सलामी जोड़ी ने तूफानी अंदाज बल्लेबाजी करते हुए महज 16.1 ओवर में बिना कोई विकेट खोए 143 रन पर बनाकर 10 विकेट से मुकाबला जीत लिया। वैभव सूर्यवंशी ने 46 गेंदों में तीन चौके और छह छक्के लगाते हुए (नाबाद (76) रनों की पारी खेली। आयुष म्हात्रे ने 51 गेंदों में चार चौके और चार छक्के लगाते हुए (नबाद 67) रन बनाये।

एसएफए चैम्पियनशिप 2024- साहनी भाई-बहनों ने जीता अनोखा 'गोल्डन' डबल, कैम्ब्रिज कोर्ट वर्ल्ड स्कूल ने जीता ओवरऑल खिताब

जयपुर, 4 दिसंबर। साहनी भाई-बहनों ने एसएफए चैंपियनशिप 2024 जयपुर में कई खेलों में बेहतरीन प्रदर्शन करके धमाल मचा दिया और बुधवार को समापन समारोह में उन्हें गोल्डन गर्ल और गोल्डन बॉय का खिताब दिया गया।

जगतपुरा स्थित जयश्री पेड़ीवाल ग्लोबल स्कूल की छात्रा आरना साहनी ने टेबल टेनिस में 3 पदक जीतकर गोल्डन गर्ल का खिताब जीता, जबकि उनके भाई आरव ने फुटबॉल और टेबल टेनिस में 3 पदक जीतकर गोल्डन बॉय का खिताब जीता।कैम्ब्रिज कोर्ट वर्ल्ड स्कूल ने 270 अंक जुटाकर शानदार जीत हासिल की और ओवरऑल चैंपियन बना। चित्रकूट का जयश्री पेड़ीवाल हाई स्कूल दूसरे स्थान पर रहा, जबकि जगतपुरा का जयश्री पेड़ीवाल हाई स्कूल तीसरे स्थान पर रहा। जयपुर में चैंपियनशिप के अंतिम दिन फुटबॉल टूर्नामेंट का शानदार समापन हुआ, जिसमें चित्रकूट के जयश्री पेड़ीवाल हाई स्कूल ने मैदान पर दबदबा बनाते हुए 14 में स्वर्ण पदक जीता। कैम्ब्रिज कोर्ट हाई स्कूल, मानसरोवर ने लड़कों के अंडर-16 और अंडर-18 वर्ग में स्वर्ण पदक जीता। शतरंज में, एसएस इंटरनेशनल स्कूल के राघव शर्मा ने लड़कों की अंडर-11 श्रेणी में स्वर्ण पदक जीता, जबकि एसएस इंटरनेशनल स्कूल की ईशु शर्मा ने लड़कियों की अंडर-11 श्रेणी में शीर्ष स्थान हासिल किया। खो-खो के मैदान में, रवींद्र इंटरनेशनल स्कूल ने लड़कों की अंडर-14 श्रेणी में जीत हासिल की, जबकि गवर्नमेंट सीनियर सेकेंडरी स्कूल ने लड़कों की अंडर-18 श्रेणी में स्वर्ण पदक जीता। सेंट पॉल स्कूल, दुर्गापुरा को बैडमिंटन में सर्वश्रेष्ठ स्कूल का पुरस्कार दिया गया।

किंग्स्टन टेस्ट : बांग्लादेश ने वेस्टइंडीज को 101 रन से हराया

किंग्स्टन, 4 दिसंबर। बांग्लादेश ने किंग्स्टन टेस्ट में वेस्टइंडीज को 101 रन से हरा दिया है। इस जीत से बांग्लादेशी टीम 2 मैचों की सीरीज 1-1 से ड्रॉ कराने में कामयाब हो गई है। टीम को पहले मुकाबले में 201 रन की पराजय झेलनी पड़ी थी। अब दोनों टीमों के बीच 8 दिसंबर से 3 वनडे और 3 टी-20 मैचों की सीरीज खेलेगी जाएगी। मुकाबले के चौथे दिन मंगलवार को बांग्लादेश ने 193/5 के स्कोर से खेलना शुरू किया। टीम ने दूसरी पारी में 268 रन बनाते हुए विंडीज को 287 रन का टारगेट दिया। जवाब में वेस्टइंडीज की टीम 185 रन पर ऑलआउट हो गई। पहली पारी में एक विकेट लेने वाले तैजुल इस्लाम ने दूसरी पारी में 5 विकेट झटके। उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया। वहीं, जॉयडन सिल्स प्लेयर ऑफ द सीरिज रहे। जाकेर अली की फिफ्टी, बांग्लादेश वाले जाकेर अली 91 रन बनाए। उन्होंने मिडिल-लोअर ऑर्डर में तैजुल इस्लाम, हसन महमूद और नाहिद राणा के साथ अहम साझेदारियां करके टीम का स्कोर 268 रन पहुंचा दिया। जाकेर ने तैजुल इस्लाम के साथ 34, हसन महमूद के साथ 32 और नाहिद राणा के साथ 22 रनों की पार्टनरशिप की। तैजुल इस्लाम ने 14 रन बनाए। उनके अलावा, लोअर ऑर्डर का कोई और बल्लेबाज दहाई का आंकड़ा नहीं छू सका। विंडीज के अल्जारी जोसेफ और केमार रोच ने 3-3 विकेट झटके।

मुख्यमंत्री भजनलाल ने 9 नई नीतियों का अनावरण किया

सी.एम. ने कहा कि इन नीतियों से लाखों लोगों को रोजगार के अवसर मिलेंगे

जयपुर, 4 दिसम्बर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बुधवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में आयोजित एक समारोह में प्रदेश के सर्वांगीण विकास को गति प्रदान करने के लिए 9 नई नीतियों का अनावरण किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि ये नीतियां राजस्थान को देश का अग्रणी राज्य बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हैं। इनसे न केवल निवेश आकर्षित होगा, बल्कि लाखों युवाओं को रोजगार के अवसर भी मिलेंगे। ये नीतियां राइज़िंग राजस्थान ग्लोबल इन्वैस्टमैंट समिट में आने वाले निवेश की बढ़ोतरी का महत्वपूर्ण आधार भी हैं।

नौ नई नीतियों के बारे में बताते हुए मुख्यमंत्री ने कहा, एम.एस.एम.ई. नीति-2024 प्रदेश के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों को वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम बनाएगी।

शर्मा ने कहा कि निर्यात को बढ़ावा देने लिए लाई गई नई नीति निर्यात संवर्धन नीति -2024निर्यातकों को दस्तावेजीकरण, तकनीकी अपग्रेडेशन और अंतर्राष्ट्रीय आयोजनों में भागीदारी के लिए मदद करेगी।

एक जिला-एक उत्पाद नीति जिलों के विशिष्ट उत्पादों और शिल्पों को बढ़ावा देने के लिए लाई गई है, जिससे कारीगरों, शिल्पकारों, कृषकों और उत्पाद निर्माताओं की आय में वृद्धि होगी।

शर्मा ने कहा कि राज्य में क्लस्टर आधारित विकास योजना के जरिए शिल्पकारों और लघु उद्योगों की उत्पादकता और गुणवत्ता में सुधार किया जाएगा। मुख्यमत्री ने कहा कि एनीमेशन, विजुअल इफेक्ट्स, गेमिंग, कॉमिक्स और एक्सटेंडेड रिएलिटी के क्षेत्र में राजस्थान को अग्रणी बनाने के उद्देश्य से नीति-2024 लागू की जा रही है।

शर्मा ने कहा कि प्रदेश की अर्थव्यवस्था में पर्यटन उद्योग का अहम योगदान है। प्रदेश में टूरिज्म को नई दिशा देने के लिए राजस्थान पर्यटन इकाई नीति -2024 लाई गई है। इस नीति के माध्यम से पर्यटन से जुड़े निवेशकों व उद्यिमयों को आकर्षित करते हुए निजी क्षेत्र में पर्यटन इकाइयों की स्थापना को बढ़ावा दिया गया है।

मुख्यमंत्री ने बताया कि प्रदेश अक्षय ऊर्जा के उत्पादन में अग्रणी राज्य है। इस क्षेत्र को और अधिक मजबूत बनाने और निवेश हेतु सकारात्मक वातावरण के निर्माण के लिए राज्य सरकार एकीकृत स्वच्छ ऊर्जा नीति-2024 लेकर आई है।

शर्मा ने कहा कि राजस्थान देश के प्रमुख खनिज उत्पादक राज्यों में से एक है। नई खनिज नीति के माध्यम से प्रदेश की जीडीपी में खनिज क्षेत्र की वर्तमान 3.4 प्रतिशत की भागीदारी को वर्ष 2029-30 तक 5 प्रतिशत और 2046-47 तक 8 प्रतिशत तक बढ़ाने का लक्ष्य रखा गया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि निर्माण कार्यों में बजरी के स्थान पर एम-सैण्ड के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए राजस्थान एम-सैण्ड नीति-2024 लागू की गई है।

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने कहा कि प्रदेश में "ईज़ ऑफ डूइंग बिजनेस" को प्रभावी बनाने के लिए ये नीतियां मददगार साबित होंगी।

उपमुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा ने कहा कि निवेश अनुकूल नीतियां प्रदेश को प्रगति के पथ पर आगे ले जाने में मील का पत्थर साबित होंगी।

उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री कर्नल राज्यवर्द्धन राठौड़ ने कहा कि प्रदेश में निर्यात को बढ़ावा देने के लिए निर्यात संवर्द्धन नीति लागू की जा रही है। जिसके माध्यम से निर्यातकों की सहूलियत के लिए प्रावधान किए गए हैं।

ऊर्जा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) हीरालाल नागर ने कहा कि प्रदेश को ऊर्जा के क्षेत्र में अग्रणी राज्य बनाने की दिशा में एकीकृत स्वच्छ ऊर्जा नीति 2024 का निर्माण किया गया है।

उल्लेखनीय है कि प्रदेश के औद्योगिक विकास को गति देने के लिए कार्यक्रम नई नीतियों का अनावरण किया गया। इस अवसर पर आयोजित प्रदर्शनी में नवीन नीतियों की स्टॉल्स को प्रदर्शित किया गया।

मुख्यमंत्री भजनलाल के साथ उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी व प्रेम चन्द बैरवा, उद्योगमंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ व ऊर्जा मंत्री हीरा लाल नागर ने प्रदेश में नौ नई नीतियों का अनावरण किया।

■ **अनावरण समरोह में उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी व प्रेमचंद बैरवा, उद्योगमंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ व ऊर्जा मंत्री हीरालाल नागर ने भाग लिया। राज्य के कई राज्य मंत्री तथा वरिष्ठ अधिकारी भी समारोह में उपस्थित थे।**

एस्सार ग्रुप के जिंदल को जमानत मिली

नयी दिल्ली, 4 दिसंबर। उच्चतम न्यायालय ने 770 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी के मामले में एस्सार ग्रुप के अध्यक्ष अनिल जिंदल की जमानत याचिका को बुधवार को मंजूरी दे दी।

मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति संजय कुमार की पीठ ने कहा कि जिंदल पहले ही साढ़े छह साल जेल में बिता चुके हैं और मामले में अभी तक सुनवाई शुरू नहीं हुई है। अपराध की गंभीरता को स्वीकार करते हुए पीठ ने इस बात पर जोर दिया कि बिना सुनवाई के लंबे समय तक का कारावास जमानत के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है। पीठ ने टिप्पणी की कि अगर जिंदल को दोषी ठहराया भी जाता है, तो कंपनी अधिनियम की धारा 447 के तहत अधिकतम सजा 10 साल है। शीर्ष न्यायालय ने जमानत मंजूरी के लिए पासपोर्ट जमा करना, एसएफआईओ के साथ अपने संपर्क विवरण साझा करना और निचली अदालत को सभी अचल संपत्तियों और बैंक खातों का खुलासा करने जैसी सख्त शर्तें रखी हैं। इसके अलावा जिंदल को अपने किसी भी नये बैंक खाते की जानकारी निचली अदालत को देनी होगी।

■ **सुप्रीम कोर्ट ने कहा, 770 करोड़ की धोखाधड़ी के मामले में जिंदल साढ़े छः साल जेल में बिता चुका है, अभी तक सुनवाई शुरू नहीं हुई।**

अन्ततोगत्वा ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

का वचन दे ही चुकी थी। लेकिन, सेना प्रमुख द्वारा अपने सार्वजनिक बयान में मुख्यमंत्री पद के बारे में अपनी स्थिति स्पष्ट कर दिये जाने के बावजूद, उनके पार्टी नेताओं ने अपना वैसा ही रूख बनाए रखा तथा अपने बयानों में इस बात पर जोर देते रहे कि महायुति की जीत में शिन्दे के योगदान की अनदेखी नहीं की जानी चाहिये।

फड़नवीस ने मंगलवार रात को शिन्दे से उनके मुम्बई स्थित निवास पर भेंट की तथा उन्हें सरकार में शामिल होने तथा कोई बाधा पैदा न करने के लिये, जिसका वादा उन्होंने पिछले सप्ताह प्रधानमंत्री से किया था, तैयार करने की कोशिश की। भाजपा नेतृत्व को सरकार के मुखिया के रूप में किसी मराठा की तलाश थी, लेकिन अन्त में नेतृत्व ने यह स्वीकार कर लिया कि ब्राह्मण होने के नाते, फड़नवीस को कोई परेशानी नहीं होगी, क्योंकि वे अपनी प्रथम सरकार आराम से चला चुके हैं तथा उस समय उन्होंने मराठा-मुद्दों को बड़ी समझदारी से सँभाल लिया था।

पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट का आज टोंक जिले के दौरे में जगह-जगह भव्य स्वागत हुआ।

समर्थन मूल्य पर कानून बनाये केन्द्र सरकार : पायलट

पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट ने टोंक में जनसभा को सम्बोधित किया

■ **टोंक दौरे में पायलट ने ग्राम बरोनी, गोविन्दपुरा, हतौना, देवअरनिया, शुक्लपुरा, पराना, सीतरामपुरा, मण्डावर, भांची, चराई व चिमनपुरा में ग्रामीणों से मुलाकात की।**

टोंक, 4 दिसम्बर। कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव, पूर्व उप मुख्यमंत्री एवं टोंक विधायक सचिन पायलट ने कहा कि प्रदेश में भाजपा की सरकार बने एक साल हो गया है, परन्तु रोजगार, महंगाई, कानून-व्यवस्था तथा जिन मुद्दों को लेकर भाजपा सत्ता में आयी थी, उन पर धरातल पर कोई काम नहीं हुआ है। महिलाओं पर अत्याचार बढ़ रहे हैं, सरकारी भर्तियों पर सशंय बना हुआ है, युवाओं की उम्मीदों पर पानी फिर गया है। जनता का भाजपा से पूरी तरह से मोहभंग हो गया है।

पायलट ने आज टोंक विधानसभा क्षेत्र के ग्राम बरोनी, गोविन्दपुरा (हतौना), हतौना, देवअरनिया, शुक्लपुरा, पराना, सीतारामपुरा, मण्डावर, भांची (देवली भांची), चराई (सोरण) एवं चिमनपुरा (बमोर) गांवों का दौरा कर ग्रामीणों से संवाद किया। ग्रामीणों को सम्बोधित करते हुए पायलट ने कहा कि केन्द्र में जब कांग्रेस की सरकार थी, तो कांग्रेस ने मनरेगा, सूचना का अधिकार, शिक्षा का अधिकार, चिकित्सा का अधिकार, जैसी योजनाएं लाकर जनता को सशक्त बनाने का काम किया था, इसके ठीक इसके विपरीत, किसानों की कमर तोड़ने के लिए भाजपा तीन काले कृषि कानून लेकर आयी, जिन्हें किसानों के दबाव में आकर वापस लेने के लिए उसे मजबूर होना पड़ा।

पायलट ने कहा कि "वन नेशन-वन इलेक्शन" के नाम पर सरकार स्थानीय निकायों और पंचायत राज संस्थाओं के चुनावों को जान-बूझकर टाल रही है, ताकि प्रशासक लगाकर अपनी मनमानी कर सके।

डन्होंने ग्रामीणों को आश्वस्त किया कि सरकार चाहे किसी भी दल की हो, आपके काम चाहे विकास के हों या निर्माण के हों, उनमें कोई कमी नहीं आयेगी, विकास की गति नहीं रूकेगी।

ए.एस.आई. जसबीर की मुस्तैदी से बादल की जान बची

चंडीगढ़, 4 दिसम्बर। अमृतसर स्थित गोल्डन टेंपल में पंजाब के पूर्व उपमुख्यमंत्री सुखबीर सिंह बादल की जान बचाने वाले पुलिस अधिकारी ए.एस.आई. जसबीर सिंह की हर तरफ तारीफ हो रही है। उन्होंने मुस्तैदी दिखाते हुए हमलवार को गोली चलाने से पहले धर लिया, जिस वजह से गोली दीवार पर जा लगी।

बेल्ट नंबर 1342.. ये बेल्ट नंबर उस पुलिस अधिकारी का है, जिन्होंने गोल्डन टेंपल में पंजाब के पूर्व उपमुख्यमंत्री सुखबीर सिंह बादल की जान बचाई। बुधवार को पंजाब के अमृतसर में श्री हरमंदिर साहिब (गोल्डन टेंपल) में शिरोमणि अकाली दल (शि.अ.द.) के अध्यक्ष और पंजाब के पूर्व उपमुख्यमंत्री सुखबीर बादल पर फायरिंग की घटना से हर कोई स्तब्ध है। हालांकि सिविल ड्रेस में तैनात सुखबीर बादल के सुरक्षा कर्मी ए.एस.आई. जसबीर सिंह ने मुस्तैदी दिखाते हुए हमलावर को पकड़ लिया। हमलावर ने गोली चला दी थी, लेकिन ए.एस.आई. जसबीर सिंह ने उसका हाथ पकड़ लिया, जिससे गोली हवा में निकल गई और गोली दूसरी तरफ दीवार पर लगी। असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर (ए.एस.आई.) जसबीर सिंह ने इस घटना के बारे में बताया कि उनकी ड्यूटी सुखबीर बादल के साथ लगी है। ए.एस.आई. जसबीर सिंह अमृतसर सिटी पुलिस थाना में तैनात हैं। उन्होंने बताया कि अधिकारियों ने उन्हें पहले ही बताया था कि यहां कुछ भी अनहोनी घटना हो सकती है। इसको लेकर हम सिविल ड्रेस में पूरी तरह मुस्तैद थे। बुधवार को जसबीर सिंह शि.अ.द. अध्यक्ष सुखबीर बादल के साथ तैनात थे।

ए.एस.आई. जसबीर सिंह ने बताया कि जैसे ही हमलावर सामने आया तो मेरी नजर उस पर पड़ी। उसने जैसे ही बंदूक निकाली और तुरंत गोली चलाने लगा। तभी जसबीर सिंह हमलावर के पास पहुंच गए और फायरिंग करने से पहले ही उसका हाथ पकड़ लिया। इस वजह से गोली दूसरी तरफ दीवार पर जा लगी। हमलावर को तुरंत हिरासत में लेकर उसके हाथ से बंदूक छीन ली गई।

ए.एस.आई. सिंह ने बताया कि दरबार साहिब की मर्यादा को देखते हुए यहां आने वाले श्रद्धालुओं की तलाशी नहीं ले सकते । किसी को आने से भी नहीं रोक सकते। लेकिन मौके पर मुस्तैदी से तैनात खडे होने की वजह से इस घटना को टाल दिया गया है।

वहीं, इस घटना को लेकर राजनीतिक दलों के नेताओं के बयान भी आ रहे हैं। आम आदमी पार्टी पंजाब के प्रधान अमन अरोड़ा ने कहा कि स्वर्ण मंदिर में पहले से ही 200 पुलिस जवानों को सादी वर्दी में तैनात किया हुआ था। पुलिस जवान हर संदिग्ध व्यक्ति पर नजर रख रहे थे। इसी का नतीजा है कि इतनी बड़ी घटना को टाल दिया गया। पुलिस की मुस्तैदी से आरोपी को मौके पर ही पकड़ लिया गया।

अरोड़ा ने कहा कि किसी को भी पंजाब की शांति खराब करने की इजाजत नहीं दी जाएगी। इस हमले के पीछे और भी व्यक्ति शामिल हैं या नहीं, इसकी जांच की जा रही है। शि.अ.द. की तरफ से सी.बी.आई. जांच की मांग पर कहा गया कि सी.बी.आई. जांच की जरूरत नहीं है, पंजाब पुलिस इस मामले में जांच करने में सक्षम है।

पंजाब के विधानसभा स्पीकर कुलतार सिंह संधवां ने कहा कि गुरु की शरण में आने वाला हर प्रकार का व्यक्ति गुरु के घर में गुरु को रक्षक समझ कर आता है। गुरु का सम्मान और भय बहुत जरूरी है। पंजाब पुलिस के कर्मचारी बधाई के पात्र हैं, जिनकी तत्परता से श्री दरबार साहिब में एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना टल गई।

■ **जसबीर ने हमलावर के गोली चलाने से पहले उसका हाथ पकड़ लिया, जिससे गोली दूसरी तरफ दीवार पर लगी।**

सुखबीर सिंह बादल की हत्या की कोशिश, बाल-बाल बचे

खालिस्तानी आतंकी नारायण सिंह चौरा ने स्वर्ण मंदिर के दरवाजे से बादल पर गोली चलाई

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 4 दिसम्बर। पंजाब के पूर्व उपमुख्यमंत्री और अकाली दल के प्रमुख सुखबीर सिंह बादल एक जानलेवा हमले में बाल-बाल बच गए। स्वर्ण मंदिर के प्रवेश द्वार पर जब बादल अपने पूर्व मंत्रिमंडलीय सहयोगी सुखदेव सिंह ढींढसा के साथ "तन्खाह" (धार्मिक सजा) भुगत रहे थे और व्हील चेयर पर सेवादार के रुप में काम कर रहे थे उसी समय खालिस्तानी आतंकी नारायण सिंह चौरा ने उन पर गोली चला दी।

चौरा को पुलिस ने घटनास्थल से गिरफ्तार कर लिया।

घटना सुबह 9.30 बजे की है तब चौरा सुखबीर सिंह से कुछ ही मीटर दूर था तभी उसने पिस्तौल निकाली और गोली चलाई इसी के साथ सुरक्षा कर्मियों ने उसे दबोच लिया और गोली निशाना चूक गई। सुखबीर के सुरक्षा कर्मियों ने आतंकी को धर दबोचा।

पुलिस कमिश्नर गुरप्रीत सिंह भुल्लर ने बताया कि कुछ भी अवांछित घटता उससे पहले ही हालात पर काबू कर लिया गया।

भुल्लर ने बताया कि अमृतसर पुलिस के एक सिपाही की कार्यकुशलता एवं त्वरित एक्शन से कोई भी अवांछित घटना नहीं घटी। उसने तुरंत हालात को भांप लिया और चौरा को दबोच लिया। जिससे वह निशाना चूक गया और गोली हवा में चलकर रह गई।

यह सारी घटना पत्रकारों के कैमरा में भी कैद हुई है जो बादल की सजा को कवर करने के लिए वहां एकत्रित थे। बादल को 2007 से 2017 में अपनी सरकार के कार्यकाल में की गई गलतियों के लिए सजा मिली है।

घटना की निंदा करते हुए अकाली नेता दलजीत सिंह चीमा ने इसे सुरक्षा में भारी चूक बताया और घटना की न्यायिक जांच की मांग की। उन्होंने कहा यद्यपि मैं पुलिसकर्मी की त्वरित कार्यवाही की तारीफ करता हूँ। पर हमें सरकार में भरोसा नहीं रहा है। इस घटना के पीछे की साजिश सामने आनी चाहिए।

चीमा ने कहा कि "चौरा गत दो दिनों से स्वर्ण मंदिर के आसपास घूम रहा था। पुलिस किस बात का इंतजार कर रही थी उसे तब क्यों नहीं गिरफ्तार किया गया।"

चौरा 30 मामलों में आरोपी है। इनमें से एक केस अमृतसर सिविल लाइन्स स्टेशन का है जिसमें वह एक्सप्लोज़िव एक्ट के तहत आरोपी है। उस पर अमृतसर, तरणतारण और रोपड में यू.ए.पी.ए. के तहत भी केस दर्ज है।

चौरा को 28 फरवरी 2013 में तरणतारण के जलालाबाद गांव से गिरफ्तार किया गया था और वह जमानत पर था।

चौरा1984 में सीमा पार कर पाकिस्तान चला गया था। पंजाब में उग्रवाद के शुरुआती दिनों में वह विस्फोटक सामग्री और हथियारों की तस्करी में लिप्त था। पाकिस्तान में रहते हुए उसने गुरिल्ला युद्ध पर किताब लिखी और देशद्रोही साहित्य रचा। वह बुराली जेल- ब्रेक में भी आरोपी है।

पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने घटना की कड़ी निंदा की मान ने पंजाब पुलिस की त्वरित कार्यवाही के लिए तारीफ भी की।

■ **वहां मौजूद बादल के सुरक्षा कर्मियों ने चौरा को उसी समय धर दबोचा, जैसे ही उसने गोली चलाई, इससे उसका निशाना चूक गया और बादल बच गए।**

■ **यह घटना तब हुई जब बादल स्वर्ण मंदिर में धार्मिक सजा के तहत सेवादारी कर रहे थे।**

■ **अकाली दल ने इसे सुरक्षा की भारी चूक बताकर मान सरकार की आलोचना की।**

■ **चौरा पर कई केस चल रहे हैं और फिलहाल वह जमानत पर है। वह 1984 में पाकिस्तान भाग गया था और वहां हथियारों की तस्करी करता था।**

कर्नाटक ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

तमिल भाषा सिखाई जा रही है। यह ऐप काफी लोकप्रिय है। इससे 14 सप्ताह में काम चलाऊ तमिल सीखी जा सकती है। इसके अलावा कई वर्चुअल कोर्स भी चल रहे हैं। ऐसी ही एक संस्था है, तमिल वर्चुअल एकैडमी, जो कोयम्बटूर, होसुर, कृष्णगिरी आदि के फैक्ट्री मजदूरों को तमिल भाषा सिखाती है। एकैडमी में सरकारी कर्मचारियों, अर्द्धसैनिक बलों, सार्वजनिक उपक्रमों के कर्मचारियों के लिए भी विशिष्ट कोर्स चल रहे हैं। यह भी देखा गया है कि कर्नाटक में प्रवासी मजदूरों का रुख कन्नड भाषा के प्रति बेहद रुखा है, पर तमिलनाडु और केरल में मजदूरों का रुख सामान्य है तथा वहां टकराव के हालात नहीं है।

'मुझे अकेले भी संभल नहीं जाने दिया'

राहुल गाँधी ने कहा, यह विपक्ष के नेता के अधिकार का हनन है

नयी दिल्ली, 4 दिसंबर। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष एवं लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने कहा कि वे उत्तर प्रदेश के संभल शहर जाकर पीड़ित परिजनों से मिलकर अपनी संवेदना व्यक्त करना चाहते हैं, लेकिन उन्हें अकेले भी नहीं जाने दिया जा रहा है।

गांधी ने बुधवार को कहा कि विपक्ष के नेता के तौर पर, यह उनका संवैधानिक अधिकार है, लेकिन सरकार संविधान के अधिकार को भी दरकिनार कर रही है और उन्हें जाने की अनुमति नहीं दे रही है। उन्होंने कहा कि वे संविधान की रक्षा की लड़ाई लड़ते रहेंगे।

गांधी ने बताया, "मैंने कहा कि मैं अकेले जाने को तैयार हूँ, मगर वो भी बात स्वीकार नहीं की गई। ये विपक्ष के नेता के अधिकार के ख़िलाफ़ है - ये संविधान के ख़िलाफ़ है ... मेरा जो संवैधानिक अधिकार है, वो मुझे दिया नहीं जा रहा है।"

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी को संभल जाने से रोकने को असंवैधनिक करार देते हुए कहा है कि यह भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आर.एस.एस.) के विभाजनकारी एजेंडा का हिस्सा है, इसलिए राहुल गांधी को संभल जाने से रोका गया है।

खड़गे ने कहा कि भाजपा तथा आर.एस.एस. देश में नफरत फैलाकर सामाजिक सौहार्द को बिगाड़ने के एजेंडे पर काम कर रहे हैं, इसलिए पीड़ितों के आंसू पोंछने के लिये संभल जाने से राहुल गांधी को रोका गया है। उन्हें पीड़ितों के आंसू पोंछने का अवसर नहीं दिया जा रहा है। यह उनका संवैधानिक अधिकार है, भाजपा सरकार उनके इस अधिकार को छीन रही है, लेकिन कांग्रेस इसके खिलाफ लड़ती रहेगी।

■ **कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे ने कहा, गाँधी को संभल जाने से रोकना भाजपा और आर. एस.एस. के विभाजनकारी एजेण्डा का हिस्सा है।**

एकनाथ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आये।

इस बीच, सत्तारूढ़ महायुति के अन्दर सत्ता-सम्बन्धी स्थितियाँ एवं गतिविधियाँ परिवर्तित हो गईं तथा इसके कारण रहे-मुख्यमंत्री पद को लेकर शिन्दे सेना की कड़े रूख वाली युक्तियाँ तथा उसका यह दावा, कि चमत्कारिक चुनाव परिणाम मुख्यमंत्री के रूप में शिन्दे के काम के कारण ही सम्भव हुये हैं।

इस छोटी सी अवधि में, अजित पवार ग्रुप भाजपा के कुछ और नज़दीक आ गया था तथा इस ग्रुप ने भाजपा के सहयोग में अपनी पूरी ताकत लगा दी तथा सेना की दबाव की राजनीति की काट करने के मामले में भाजपा की पूरी मदद की।

राहुल की यात्रा रस्म अदायगी व गठबंधन की विवशता थी-भाजपा

भाजपा प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने कहा, इंडिया समूह का बिखराव जनता को स्पष्ट दिख रहा है

नयी दिल्ली, 4 दिसंबर। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी की उत्तर प्रदेश के संभल यात्रा को रस्म अदायगी और समाजवादी पार्टी से गठबंधन की विवशता करार दिया है। भाजपा के प्रवक्ता एवं सांसद डॉ. सुधांशु त्रिवेदी ने बुधवार को यहां पार्टी के केंद्रीय कार्यालय में एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि संसद का सत्र चल रहा है और इस सत्र में इंडिया समूह का बिखराव और संविधान के प्रति उनका दुराव देश की जनता को स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

डॉ. त्रिवेदी ने कहा कि सदन के पटल पर सहयोगी दलों को साथ लेकर चलने की विफलता के बाद गांधी रस्म अदायगी के लिए उत्तर प्रदेश के संवेदनशील क्षेत्र संभल जाने का प्रयास कर रहे हैं। जिस पर सपा के वरिष्ठ नेता प्रोफेसर राम गोपाल यादव ने कहा है कि कांग्रेस औपचारिकता निभा रही है। पर मैं इसे ऐसे कहना चाहूंगा कि कांग्रेस औपचारिकता नहीं विवशता निभा रही है।

भाजपा प्रवक्ता ने कहा, संभल पर कांग्रेस के किसी नेता ने न कुछ बोला, न ही कुछ लिखा और आज अचानक सिर्फ मीडिया आकर्षण पाने और इंडिया सूमह को साथ न रख पाने की छटपटाहट में ये कार्य किया है।

अमृतसर में स्वर्ण मंदिर के द्वार पर गोली चलने की घटना के बारे में पूछे जाने पर डॉ. त्रिवेदी ने कहा कि पंजाब में जब से आम आदमी पार्टी की सरकार आई है, आर्थिक स्थिति खस्ताहाल होती जा रही है।

वहां पर कानून की स्थिति और अपराध निरंतर समस्याजनक होते जा रहे हैं। आप की सरकार आने के साथ ही हत्याओं और अपराधियों के हौसले बढ़ने का सिलसिला शुरू हुआ है।

■ **भाजपा प्रवक्ता ने कहा, संभल पर कांग्रेस ने न कुछ बोला न लिखा। अब मीडिया आकर्षण पाने के लिए यात्रा का दिखावा किया गया।**

राष्ट्रदूत हिन्दु संयुक्त परिवार की ओर से सोमेश शर्मा द्वारा ज्वाईन्ट मीडिया, आजाद मार्ग, मैन रोड, आयड, उदयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 57928/93 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513 कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371 अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन 226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908